Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अगस्त 2010



- कर्म, पुनर्जीवन और इस्लाम
  —डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- धार्मिक लोगों में आपसी संवाद और सहयोग की ज़रूरत
  —इंजीनियर मुहम्मद सलीम
- ईसाई धर्म में इस्लामी तत्व
  —अभिजीत कुमार
- समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जीवन मूल्य
  —डॉ॰ जालिन्दर इंगले

ECHO OF SALAAM CENTRE IN RAJ BHAVAN



A delegation of Representatives of minorities met Honourable Governor of Karnataka Mr. Hans Raj Bhardwaj on Nov. 18. The delegation discussed the law and order situation in Karnataka and the incidents affecting minorities.

On the ocassion, Mr. Syed Hamid Mohsin, Chairman Salaam Centre presented a translation and commentry of Holy Quran titled **"Pondering Over Quran".** The said commentry is translation of *Taddabur-e-Quran* by Moulana Ameen Ahsan Islahi. After presenting the Quran to Honourable Governor of Karnataka Mr. Bhardwaj, Mr. Mohsin invited Honourable Governor to Salaam Centre. Retd. Chief Justice Saldhana, Mr. B. Chandrashekhar, Former Education Minister and Moulana Riayaz-ur-Rahman were also present.



SALAAM Centre Head Quarters

SALAAM Centre



SALAAM Centre Branch

Head Quarters: # 65, 1st Main Road, S.R.K. Garden, Jayanagar East, Bangalore - 41
Branch: G.C., RICH HOMES, RICHMOND ROAD, Bangalore - 25
Cell: 99451 88488, Tel.:26655786, 26639007
Email: salaamcentrebangalore@gmail.com **www.salaamcentre.org**

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 19 अंक 11 अप्रैल 2010

"तुम अल्लाह के साथ अविश्वास की नीति कैसे अपनाते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुम्हें जीवित किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें जीवित करेगा, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटना है ? (क़ुरआन, 2:28)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantiweekly@yahoo.in

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

दारो-रसन[1] ने किसको चुना देखते चलें !
ये कौन सरबलन्द हुआ देखते चलें

आएगा फिर चमन पे तसर्रुफ़[2] का वक़्त भी
पहले क़फ़स[3] की आबो-हवा देखते चलें

औरों की लग़्ज़िशों[4] ही पे रक्खें न बस निगाह
अपनी तरफ़ भी राहनुमा देखते चलें

परवानों का तो हश्र[5] जो होना था हो चुका
गुज़री है रात शम्मअ् पे क्या देखते चलें

जाते थे हम तो फेर के मुंह जलवागाह[6] से
लेकिन दिलो-नज़र ने कहा देखते चलें

तहज़ीबे-नव के अह्द[7] में इन्सानियत के साथ
इन्सां ने क्या सुलूक किया देखते चलें

इस अंजुमन में इश्क़ कहां है हवस कहां
किस-किस को क्या मक़ाम मिला देखते चलें

हां इक नज़र 'हफ़ीज़' पे इबरत[8] के वास्ते
क्या रह गयी है क़द्रे-वफ़ा देखते चलें ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. फांसी का फ़ंदा, 2. प्रयोग, 3. पिंजरा, 4. त्रुटियां, 5. परिणाम, 6. आभास्थल, 7. काल, 8. चेतावनी

कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
दुनिया के प्रति उदासीनता (हदीस प्रभा)		6
शिक्षा का भगवाकरण निंदनीय (संपादकीय)		7
शत्रुता में इतने पतित न हो जाओ... (आपके पत्र)		8
हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	13
धार्मिक लोगों में आपसी संवाद और सहयोग की ज़रूरत	–इंजीनियर मुहम्मद सलीम	15
ईसाई धर्म में इस्लामी तत्व	–अभिजीत कुमार	17
चंगेज़ ख़ां और मुसलमान	–इरशाद अली ख़ान	19
समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जीवन मूल्य	–डॉ॰ जालिन्दर इंगले	23
कर्म, पुनर्जीवन और इस्लाम	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	26–27
ब्रेक वाटर के आर-पार (कहानी)	–गुरनाम गिल	35
सारे गुलाब मानवता के (पुस्तक-समीक्षा)		39
मिलावटी दूध : बच्चों के लिए ज़हर (स्वास्थ्य चर्चा)		41
साहित्य समाचार		42
अभिमत		44
विश्व घटना-चक्र		45
बालवीथी		48

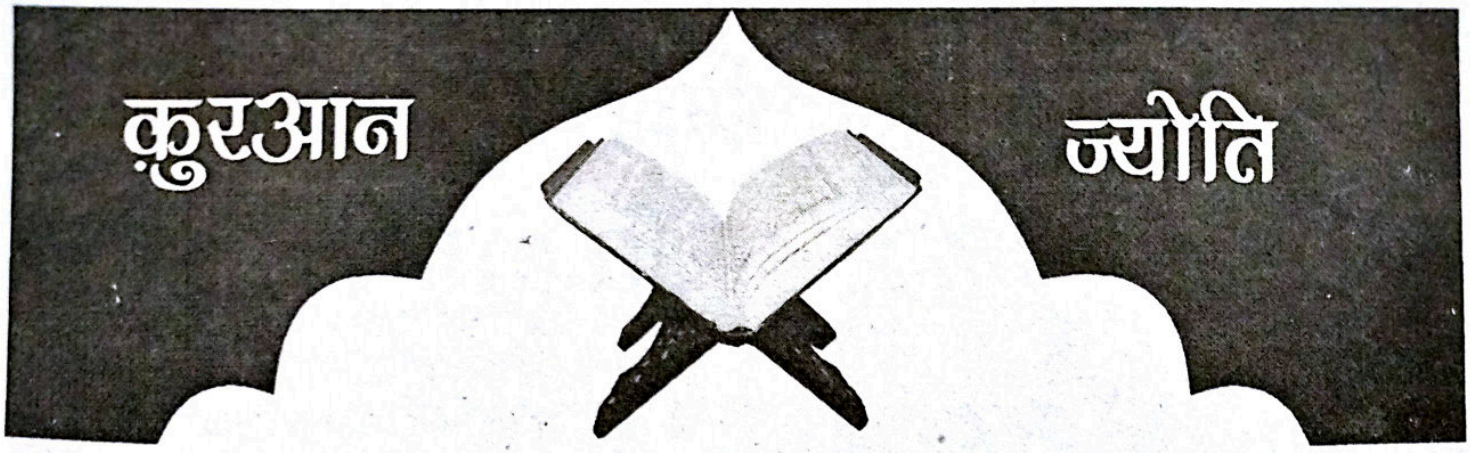

ये लोग तुमसे पूछते हैं कि आख़िर वह क़ियामत की घड़ी कब आएगी ? कहो, "उसका इल्म मेरे रब ही के पास है । उसे अपने समय पर वही प्रकट करेगा । आकाशों और धरती में वह बड़ा कठिन समय होगा । वह तुम पर अचानक आ जाएगा ।" ये लोग उसके बारे में तुमसे इस तरह पूछते हैं मानो तुम उसकी खोज में लगे हुए हो । कहो, "उसका इल्म तो केवल अल्लाह को है, मगर अधिकतर लोग इस हक़ीक़त को नहीं जानते हैं ।" ऐ नबी, उनसे कहो कि "मुझे अपने आपके लिए किसी लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता, अल्लाह ही जो कुछ चाहता है वह होता है, और अगर मुझे परोक्ष (ग़ैब) का इल्म होता तो मैं बहुत से फ़ायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कभी कोई हानि न पहुंचती ।[145] मैं तो केवल एक ख़बरदार करने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें ।"

वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी की जाति से उसका जोड़ा बनाया ताकि उसके पास सुकून हासिल करे । फिर जब मर्द ने औरत को ढांक लिया तो उसे एक हलका-सा गर्भ रह गया, जिसे लिए-लिए वह चलती-फिरती रही । फिर जब वह बोझल हो गयी तो दोनों ने मिलकर अल्लाह, अपने रब से दुआ की कि अगर तूने हमको अच्छा-सा बच्चा दिया, तो हम तेरे कृतज्ञ होंगे ।

—क़ुरआन, 7 : 187-189

---

145. मतलब यह है कि क़ियामत की ठीक तारीख़ वही बता सकता है जिसे 'ग़ैब' (परोक्ष) का इल्म हो, और मेरा हाल यह है कि मैं कल के बारे में भी नहीं जानता कि मेरे साथ या मेरे बाल- बच्चों के साथ क्या कुछ पेश आने वाला है । तुम स्वयं समझ सकते हो कि अगर यह इल्म मुझे हासिल होता तो मैं कितनी हानियों से समय से पहले आगाह होकर बच जाता और कितने लाभ केवल पूर्व ज्ञान की बदौलत अपने आपके लिए समेट लेता । फिर यह तुम्हारी कितनी बड़ी नादानी है कि तुम मुझसे पूछते हो कि क़ियामत कब आएगी ?

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com

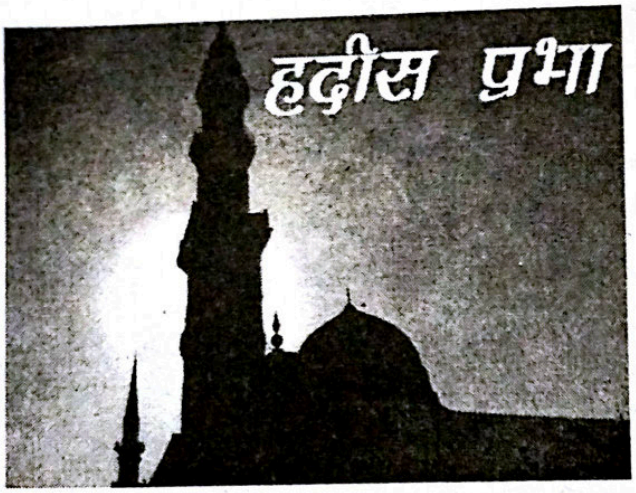

दुनिया के प्रति उदासीनता और थोड़े पर संतोष

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मरने वाले के साथ तीन चीज़ें चलती हैं : उसके घर वाले, उसका माल और उसका कर्म । फिर दो चीज़ें तो पलट आती हैं और एक साथ रह जाती है । उसके घर वाले और माल तो वापस आ जाते हैं और उसका कर्म साथ रह जाता है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "क़ियामत के दिन दोज़ख़ वालों में से एक ऐसे व्यक्ति को लाया जाएगा जो दुनिया में बहुत ज़्यादा ख़ुशहाल था । उसको दोज़ख़ में एक ग़ोता दिया जाएगा, फिर उससे पूछा जाएगा : "ऐ आदम के बेटे ! क्या तूने ख़ुशहाली देखी ? क्या तुझ पर ऐश और आराम की कोई घड़ी गुज़री ?" वह कहेगा : ऐ रब, अल्लाह की क़सम, मैंने कभी कोई ऐश और आराम नहीं देखा । और जन्नत वालों में से एक ऐसे व्यक्ति को लाया जाएगा जो दुनिया में बहुत ही कठिनाइयों और मुसीबतों में घिरा रह चुका होगा । उसको जन्नत में एक ग़ोता दिया जाएगा और उससे कहा जाएगा : ऐ आदम के बेटे ! क्या तूने कभी कोई तकलीफ़ देखी थी और तुझ पर कभी कठिन समय गुज़रा ?" वह कहेगा : ऐ रब, अल्लाह की क़सम नहीं । न तो मुझ पर कभी कोई तकलीफ़ गुज़री और न कभी कोई कठिन घड़ी देखी ।"

–मुस्लिम

● हज़रत मुस्तवरिद बिन सद्दाद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "आख़िरत के मुक़ाबले में बस दुनिया की मिसाल ऐसी है जैसे तुममें से कोई अपनी उंगली समुद्र में डाले फिर उसे निकाल कर देखे कि उसमें नमी कितनी लगी हुई है ।"

–मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बाज़ार से गुज़रे और लोग आपके दोनों तरफ़ थे । फिर आप का गुज़र एक छोटे कानों वाले बकरी के मुर्दा बच्चे के पास से हुआ । आपने उसका कान पकड़ा और कहा :

"तुममें से कौन इसे एक दिरहम के बदले लेना पसन्द करेगा ?" लोगों ने कहा : हमें तो इसे किसी चीज़ के बदले में लेना पसन्द नहीं । हम इसे क्या करेंगे ? फिर आपने कहा : "क्या तुम पसन्द करोगे कि यह तुम्हारा हो जाए ।" लोगों ने कहा : अल्लाह की क़सम, अगर यह जीवित होता जब भी यह ऐबदार था क्योंकि इसके कान छोटे हैं अब ज़बकि यह मुर्दा भी है । इस पर आपने कहा :

"अल्लाह की क़सम, दुनिया अल्लाह की दृष्टि में इससे भी ज़्यादा तुच्छ है जितना तुम्हारी दृष्टि में यह बच्चा है ।"

–मुस्लिम

('रियाजुस्सालिहीन' से)

शिक्षा का भगवाकरण निंदनीय

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने घोषणा की है कि श्रीमद भगवद्गीता को मध्य प्रदेश के स्कूलों में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाएगा । मुख्यमंत्री की इस उद्घोषणा को शिक्षा के भगवाकरण की एक कड़ी के रूप में देखा जा रहा है । जागरूक और प्रबुद्धजनों ने स्वत:स्फूर्त व स्वाभाविक विरोध किया है, जबकि संघ परिवार से संबद्धजनों ने इसे उचित क़दम बताकर अपनी 'विशिष्ट' सोच को प्रदर्शित किया है । एन॰डी॰ए॰ के शासनकाल में शिक्षा के भगवाकरण की जो कोशिश डॉ॰ मुरली मनोहर जोशी के ज़रिये ''सम्पन्न'' की गयी, उसे देश की बहुसंख्यक जनता ने न तो सराहा और न ही इसे किसी भी दृष्टि से देश और समाज के लिए उपयोगी ठहराया । यह सत्य है कि इस प्रकार की कोशिशों के लिए हमारे देश की किसी भी व्यवस्था में न तो कोई स्थान है और न ही कोई संवैधानिक प्रावधान । फिर भी देखा जाता है कि शासन के प्रमुख अंगों–व्यवस्थापिका/विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका तक में भगवाई प्रवृत्ति किसी न किसी रूप में कम या अधिक मात्रा में पायी जाती है । स्पष्ट है यह प्रवृत्ति हमारे बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक समाज के लिए नितांत घातक और अमंगलकारी है । हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है, जिसमें साम्प्रदायिक और फॉसीवादी प्रवृत्ति के लिए स्थान कदापि नहीं हो सकता । इस परिस्थिति में जो लोग ''हिन्दू राष्ट्र'' की मानसिकता के ध्वजावाहक हैं, उन्हें चाहिए कि अपनी मनोवृत्ति का त्याग करके समाज के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने से रुक जाएं और देश व समाज में स्वस्थ और सकारात्मक मानसिकता को परवान चढ़ाने में अपना योगदान करें । देखा जाता है कि इस मानसिकता के 'धनी' लोग अपनी बात को मनवाने के लिए हिंसा और ज़ोर-ज़बरदस्ती का सहारा लेते हैं, जो हर दृष्टि से निंदनीय और त्याज्य है ।

जहां तक देशवासियों में नैतिकता–विस्तार की आवश्यकता की बात है तो यह सही है कि आज की परिस्थितियों में नैतिकता और वास्तविक जीवन मूल्यों की इन्सान को बहुत आवश्यकता है, मगर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि किसी एक संप्रदाय के धर्मग्रंथ को आधार बनाया जाए । इसके लिए उस धर्मग्रंथ को आधार अवश्य बनाया जा सकता है, जो मौलिक, प्रमाणिक, काल और परिस्थितियों की दृष्टि से अक्षुण्ण एवं मानवानुकूल व कल्याणकारी हो । अत: मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने जो उद्घोषणा की है वह अनुचित अतार्किक व अविवेकपूर्ण है । यह तो ठीक इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस एस॰एम॰ श्रीवास्तव की 30 अगस्त 2009 को व्यक्त की गयी उस टिप्पणी की तरह है, जिसमें उन्होंने कहा था कि गीता को संविधान के अनुच्छेद 51ए के अंतर्गत राष्ट्रीय धर्मग्रंथ घोषित किया जाना चाहिए । वाराणसी के गोपाल ठाकुर मंदिर के श्यामल रंजन मुखर्जी की याचिका पर सुनवाई करते हुए जज महोदय ने गीता के महत्व पर भी प्रकाश डाला । जज महोदय की यह टिप्पणी देश के प्रबुद्ध और जागरूक लोगों के बीच एक प्रकार की 'विशिष्ट' मानसिकता के रूप में महसूस की गयी । इसके बावजूद मध्य प्रदेश में गीता को नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने का दुस्साहस औचित्य से परे है । यह सार्वभौमिक सत्य है कि बच्चों में सुसंस्कार बाल्यावस्था से ही डाले जाने चाहिए और उन्हें जीवन के वास्तविक मूल्यों, ईश्वरीय मार्गदर्शन, नैतिकता और सदाचरण से उनके बोध काल से ही परिचित कराना चाहिए । इसके लिए शर्त यह है कि मिथ्या तत्वों से मुक्त मूल्य ही अपनाये जाने योग्य हो सकते हैं । इसके लिए समाज में चेतना पैदा करने की अति आवश्यकता है । इस सिलसिले में इस्लामी शिक्षाएं हमारा सही ढंग से मार्गदर्शन कर सकती है । इस्लाम में ज्ञानार्जन और सदाचरण पर जितना बल दिया गया है वह अन्यत्र विद्यमान नहीं है । पवित्र कुरआन की अवतरित हुई पहली आयत ही ज्ञान और शिक्षा को प्राप्त करने के लिए मानवता को उद्बोधित करती है । इस में है–पढ़ो अपने रब के नाम से...जिसने मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह न जानता था' (कुरआन, 96:1-5)। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की एक हदीस में ज्ञानार्जन पर इन शब्दों में बल दिया गया है–'जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के लिए सफ़र करे, अल्लाह उसके लिए जन्नत का मार्ग सुगम कर देगा' (तिरमिज़ी, अबू दाऊद)।

शत्रुता में इतने पतित न हो जाओ...

देश के पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री राम जेठमलानी ने कुछ सप्ताह पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के०जी० बालाकृष्णन, केन्द्रीय क़ानून मंत्री श्री वीरप्पा मोईली, सिंगापुर के मुख्य न्यायाधीश कियोंग. और सऊदी अरब के भारत स्थित राजदूत जनाब फ़ैसल आदि विशिष्टजनों की उपस्थिति में जो वक्तव्य दिया वह नितांत आपत्तिजनक और निंदनीय है । उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में यह बात कही कि जिहादियों की दृष्टि में ग़ैर-मुस्लिमों के ख़िलाफ़ लड़ाई में मारे जाने पर जन्नत मिलती है और वह भी ख़ूबसूरत महिलाओं से भरी हुई । क्या ऐसी सोच को आधार बनाकर जिहादी ऊपर वाले के घर को वेश्यालय के रूप में पेश नहीं कर रहे हैं ?''

इस वक्तव्य के विरोध में सऊदी राजदूत का सम्मेलन से बहिष्कार कर जाना उचित था जो उन्होंने किया । मैं यहां यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि इस्लाम में किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या पूरे मानवता की हत्या के सदृश्य समझी जाती है । इस्लाम में ग़ैर-मुस्लिम भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ाई के लिए कोई स्थान नहीं है, बल्कि उनके ख़िलाफ़ लड़ने का आदेश है जो बुराई के पक्षधर हैं, चाहे वे मुस्लिम हों या ग़ैर-मुस्लिम । इस्लाम सही अर्थों में शान्ति धर्म है, लेकिन वह मिथ्या और बुराई का समर्थक कदापि नहीं है । जहां तक बात स्वर्ग के सुख-सुविधाओं की है तो पवित्र कुरआन में इस सिलसिले में अनेक आयतें हैं, जिनमें सुन्दर स्त्रियों की उपस्थिति का भी उल्लेख है ।

श्री जेठमलानी के उक्त वक्तव्य से यह बात सिद्ध हो गयी कि हमारे 'महान भारत वर्ष' में अल्प ज्ञानी और संकीर्ण व्यक्तियों को ही क़ानून मंत्री जैसा उच्च पद प्राप्त हो सकता है । हमारे देश में दलित उत्पीड़न, साम्प्रदायिक दंगे, अल्प-संख्यक समुदाय के विरुद्ध हिंसा, जाति प्रथा के कुपरिणाम पहले से ही किसी न किसी रूप में हमारे सामने आते रहते हैं और देश की बदनामी के लिए ये दुष्कर्म पर्याप्त होते हैं । हमारे देश में हिंसा और उत्पीड़न के अनेक रूप सामने आते रहते हैं । क्या जेठमलानी जी इनसे परिचित नहीं हैं ?

उन्होंने स्वर्ग को एक वेश्यालय की उपमा देकर जिस मानसिकता का परिचय दिया है वह आश्चर्यजनक भी है और चिन्ताजनक भी । महज़ इस्लाम दुश्मनी ने उनको इतना गिरा दिया कि उन्होंने जाने-अनजाने श्रीकृष्ण जी के उपदेश का भी इन्कार कर दिया । जिहाद वास्तव में अरबी भाषा का एक शब्द है, जिसका भावार्थ है बुराई और अमानवीयता के विरुद्ध जी जोड़ संघर्ष करना । इसे अन्य अर्थ में प्रयुक्त किया जाना अनुचित है । अन्य धर्मों में भी सत्य के मार्ग में कोई रुकावट होने, बुराई के सर उठाने और कुकृत्य के विरुद्ध संघर्ष की शिक्षा मिलती है । रामचरित मानस के अनुसार क्या रावण ने श्री रामचन्द्र के विरुद्ध जिहाद नहीं किया था या फिर श्री रामचन्द्र जी ने रावण के विरुद्ध जिहाद नहीं किया था ।

मेरा विचार है कि जिहाद दोनों ने किया था, दोनों ने ही अपने विचार को स्थापित करने के लिए जिहाद किया था, जबकि एक बुराई का पक्षधर था और दूसरा भलाई का । दुर्योधन ने भी अर्जुन के ख़िलाफ़ जिहाद किया था और अर्जुन ने भी दुर्योधन के ख़िलाफ़ जिहाद किया था । द्रोपदी ने भी अपनी इज़्ज़त और इस्मत को बचाने के लिए जिहाद किया था । एक परीक्षार्थी भी परीक्षा में अच्छा अंक प्राप्त करने के लिए जिहाद करता है । अगर जिहाद को मनुष्य के आचरण से निकाल दिया जाए तो मनुष्य अपाहिज और पंगु हो जाएगा । आइए हम देखें कि भागवत गीता और अन्य शास्त्र किस प्रकार जिहाद को मनुष्य का एक अभिन्न अंग स्वीकार करता है–

''हे कुन्ती पुत्र ! तुम यदि युद्ध में मारे जाओगे तो तुम्हें स्वर्ग प्राप्ति होगी । और तुम्हें सुन्दर स्त्रियों के साथ की सुविधा प्राप्त होगी ।'' (भागवत गीता, अध्याय-2, श्लोक-37)

''तुम सुख या दुख, हानि या लाभ, विजय या पराजय का विचार किये बिना धर्म युद्ध (जिहाद) करो । ऐसा करने से तुम्हें पाप नहीं लगेगा ।'' (उक्त, श्लोक-38)

''स्वार्गिक लोग में वहां के निवासियों के लिए बहुत-सी स्त्रियां होती हैं । उन्हें भोज्य पौधे व पुष्प प्राप्त होते हैं । वहां

घी के तालाब, दुग्ध एवं मधु की नदियां होती हैं । सुरा जल की भाँति बहती है । और वहां के निवासियों के लिए चतुर्दिक कमलों की पुष्कारिणियां होती है । स्वर्ग में गुणवान लोग प्रकाशानन्द पाते हैं और उनके शरीर रोग मुक्त होते हैं ।'' (अथर्वेद, 3/34/2,5-6)

''जो युद्ध से भाग गया वह नरक में गिरता है ।''
(महाभारत, शान्ति पर्व०, (98) 40-41)

''धर्म युद्ध (जिहाद) में वीर गति प्राप्त लोग स्वर्ग में जाते हैं और सुन्दर स्त्रियों के संसर्ग की सुविधा पाते हैं ।''
(रघुवंश (7/51)

''उस वीर (जो जिहाद में मारा गया) के पीछे स्वर्ग की अप्सराएं दौड़ती हैं और उसे अपना स्वामी बनाती हैं जो शत्रु के घिर जाने पर भी प्राण भिक्षा नहीं मांगता और लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हो जाता है । उसे न नाश होने वाले लोक (स्वर्ग) की प्राप्ति होती है ।''
(राजनीति प्र० (पृ०-407), पराशर (3/31),
बृहत्तपराशर (10 पृ० 281)

''स्वर्ग में न भय है न वृद्धावस्था, वहां के निवासी भूख, प्यास एवं चिंता से विकल नहीं होते, प्रत्युत आनन्दों के बीच विचरण करते हैं ।'' (कठोपनिषद, (1-12)

इतना ही नहीं भगवान श्री कृष्ण जी का स्पष्ट उपदेश भी है कि जो कोई भी मेरे उपदेश को अस्वीकार करेगा उसे आनन्द नहीं प्राप्त होगा । उनके शब्दों में–

''देवर्षिभूताप्त नृणां पितृणां न किंडकरो नायमृणी च राजन ।
सर्वात्मना य: शरणं शरण्यं गतो मुकुन्दं परिहत्य कर्तम ।।

अर्थात : ''जिसने अन्य समस्त कार्यों को त्यागकर मुकुन्द श्री कृष्ण की शरण ग्रहण कर ली है वह न तो किसी का श्रृणी है और न किसी का कृतज्ञ–चाहे वद देवता, साधु, सामान्यजन अथवा परिजन, मानवजाति या उसके पितर ही क्यों न हों ।''

अब प्रश्न यह प्रसूत होता है कि भगवान श्री कृष्ण जी के स्पष्ट उपदेश के उपरांत भी ये ब्राह्मणवादि किसके शरण में जाना चाहते हैं । उनका तो स्पष्ट उपदेश है कि जो कोई भी मेरे शरण में नहीं आएगा वो हमेशा श्रृणी और दूसरे का कृतज्ञ ही रहेगा । उनका यह भी स्पष्ट आदेश है कि जिहाद (धर्म युद्ध) करो तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी जहां सुन्दर स्त्रियों से संसर्ग की सुविधा प्राप्त होगी ।

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com

क्या उपरोक्त प्रमाणित उपदेशों से यह स्वत: प्रमाणित नहीं हो जाता कि राम जेठमलानी जी और इनके श्रृंखला के सहायोगियों का सिर्फ़ एक ही उद्देश्य है येन केन प्रकारेण सत्ता प्राप्त करना और अपने पुराने विचार मनुवादी विचार को पुन: स्थापित करना ।

अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि मनुष्य को मनुष्य ही रहने दो और ईश्वर को ईश्वर ! ईश्वर को अपने राजनीति का मोहरा मत बनाओ । किसी की दुश्मनी में इतना नैतिक पतन न हो जाए कि स्वयं के ईष्ट देव को भी गाली देने लग जाएं ।

'हॉक' भीष्म प्रताप गुप्ता
प्रयाग मेडिकल स्टोर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

ईश्वरीय धर्म की ओर आमंत्रण

'कान्ति' (अंक नवम्बर 09) ख़रीद कर पढ़ा । सभी तख़लीक़ात पसन्द आयी । ''इन्सानो ! पालनकर्ता को पहचानो'' (संपादकीय) में आपने ये बिल्कुल दुरुस्त तहरीर फ़रमाया है कि प्रत्येक धर्म जो ईश्वर की ओर से आया, उसका उद्देश्य लोगों को एक ईश्वर की प्रभुता और एक ईश्वरीय प्रणाली की ओर ले जाना था । लेकिन इस नाचीज़ क़लमकार का यह कहना है कि आज के नक़ली मौलवी, कठमुल्ले, पोंगे-पंडित, बगुले भगत क़िस्म के नायक सब धर्मों या मज़हबों की मूल एवं मुख्य बातों को बहुत बिगाड़ कर पेश कर रहे हैं । यही वजह है कि भारत की सभ्यता पर आंच आ रही है । इसीलिए तो मैं कहता हूं–

भारत को टूटने से बचाना है दोस्तो !
हम को गले सभी को लगाना है दोस्तो !
मस्जिद को तोड़ें और न मंदिर को ढाएं लोग
हिन्दुस्तान को तो न दोज़ख़ बनाएं लोग
जब देश टूट जाएगा तो फिर कुछ न बचेगा
हिन्दुस्तान आज जचे है, कल न जचेगा !
मंदिर बनाएं लोग कि मस्जिद बनाएं लोग
भारत न टूटे दोस्तो, भारत बचाएं लोग
मस्जिद की तरह और शिवालय की तरह हो
भारत का हर सिपाही हिमालय की तरह हो ।

डॉ० रामदास
वरिष्ठ संपादक ''मोहब्बत'', राउरकेला-769001 (उड़ीसा)

इस्लामी बैंकिंग की भारत में आवश्यकता

'कान्ति' मासिक पत्रिका मुझे लगातार मिल रही है और कान्ति में मिल रही है ऐतिहासिक, सामाजिक ज्ञानवर्धक जानकारियां । माननीय इरशाद अली ख़ान जी ने "भारत में इस्लाम" लिखकर बार-बार इतिहास की जानकारी दी है कि भारत में इस्लाम तलवार से नहीं फैला आदि ।

इस्लामिक बैंकिंग भारत में बहुत ज़रूरी है । वर्तमान में जो बैंक लोन दे रहा है उसमें बहुत औपचारिकताएं हैं, बिचौलिये पैसे ऐंठते हैं और ब्याज दर बहुत ज़्यादा किन्तु बैंक यदि अधिक ब्याज दर न लेकर केवल डेवलपमेंट चार्ज ले तो भारतीय मज़दूरों, किसानों व छोटे व्यावसायियों के लिए बहुत अच्छा होगा । वन्दे मातरम् का राग अलापते-अलापते भारत के साम्प्रदायिक लोग थकते नहीं हैं किन्तु एल०एल० सागर जी (एडवोकेट) ने 'कान्ति' मासिक जनवरी में विस्तार से लिख दिया है कि यह गीत बंगाल के विभाजन के समय अकाल पड़ने पर काली देवी का गान है इसका देश भक्ति से कोई मतलब नहीं । वन्दे मातरम् कहने से कोई देश भक्त नहीं बन जाता और वन्दे मातरम् न कहने पर कोई देशद्रोही नहीं बन जाता । सरकारी टेक्सों की चोरी करना, सरकारी ज़मीन हड़पना, ग़रीबों का हक़ मारना वास्तव में देशद्रोह है किन्तु इस्लाम में और क़ुरआन में इन सभी बातों को जड़ से नकारा गया है । 'कान्ति' बौद्धिक आन्दोलन की बहुत अच्छी शुरुआत है ।

विरेन्द्र कुमार कौशाम्बी

ग़ाज़ियाबाद (उ०प्र०)

अमेरिकी अत्याचार क्यों ?

अमेरिका अपने आपको दुनिया का नेता मानता है । वह अपनी दादागीरी की धाक विश्व के सभी राष्ट्रों पर जमाये हुए है । विश्व समुदाय के बहुसंख्यक राष्ट्र स्वयं अमेरिका को अपना आका एवं संरक्षक मानते हैं । दुनिया आज अमेरिका के आगे घुटने केवल इसलिए टेक रही है कि वह परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है । उसके विरुद्ध जाने या उसका विरोध करने पर वह उस पर आक्रमण कर देगा या विश्व बैंक से मिलने वाली सहायता राशि रोककर उन्हें घुटने टेकने पर मजबूर कर देगा । यही डर विश्व राष्ट्रों को कमज़ोर बना रहा है, वरना मुट्ठी भर अमेरिकी दुनिया पर शासन नहीं कर सकते थे ।

अमेरिका का राष्ट्रपति भले बदलता हो परन्तु उसकी मानसिकता पुरानी ही रहती है । विश्व के बहुसंख्यक राष्ट्र यदि अमेरिका के ख़ौफ़ से दूर हो, उसके ग़लत निर्णयों का एक साथ मुख़ालफ़त करें तो निश्चित ही अमेरिका की गुंडागर्दी समाप्त हो जाएगी । हर व्यक्ति व राष्ट्र की अपनी एक सीमा होती है वह अपनी हद में रहकर कोई कार्य करे तो किसी को एतिराज़ नहीं होना चाहिए । परन्तु जब वह दूसरे की संप्रभुता पर चोट कर स्वयं को दुनिया का मालिक समझे तो ऐसे में विश्व समुदाय को उसका प्रतिकार करना चाहिए । विश्व राष्ट्रों के डरपोक रवैये और ग़ुलाम रहने की भावना ने ही आज ब्रिटेन और अमेरिका को विश्व का दरोग़ा बना रखा है । अन्यथा मुट्ठी भर ईसाइयों की पूरे विश्व पर राज़ करने तथा किसी भी राष्ट्र के अन्दरूनी मामलों में दख़लअंदाज़ी करने का दुस्साहस नहीं होता ।

अमेरिका किस क़दर इस्लाम से नफ़रत करता है उसके कई उदाहरण हैं । भारत के मिसाइल मैन कहे जाने वाले चोटी के वैज्ञानिक तथा पूर्व राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के साथ जिस प्रकार का दुर्व्यवहार अमेरिकी एयर लाइंस ने भारत की ही धरती पर किया तथा हाल में दुनिया में माने-जाने वाले अभिनेता शाहरुख़ ख़ान के साथ अमेरिकी यात्रा के दौरान अमेरिकी हवाई अड्डे पर अपमानजनक व्यवहार किया गया । वह मुस्लिम विरोधी नहीं तो क्या है ।

बावजूद इसके भारत सरकार ने अमेरिका को मुंहतोड़ जवाब देने का साहस न करके जिस कायरता का संकेत दिया वह बेहद ही शर्मनाक है । इससे तो स्पष्ट होता है कि भारत के हुक्मरान या तो अमेरिका के दबाव में हैं या किसी न किसी रूप में उसकी गुलामी स्वीकार करते हैं । अमेरिका भारत का कितना बड़ा हमदर्द एवं दोस्त है इसका भी खुलासा इस बात से होता है कि वह पाकिस्तान को मदद करता है । प्रत्यक्ष रूप से भारत का हमदर्द बनता है परन्तु पाकिस्तान में अलगाववादियों को बढ़ाने और भारत के विरुद्ध षड्यंत्र रचने में उसकी पूरी मदद करता है । अन्यथा भारत-पाक के बीच 1947 से चली आ रही शत्रुता कब की समाप्त हो गयी होती ।

इन तर्कों से साफ़ होता है कि अमेरिका दोहरी नीति चलता है । उसे न्याय-अन्याय से कुछ लेना-देना नहीं है । वह सिर्फ़ अपना हित चाहता है और स्वहित के लिए वह किसी भी स्तर पर जा सकता है । आज विश्व में अमेरिका

की दादागीरी का जो आलम है उसके लिए विश्व समुदाय ज़िम्मेदार है जो उसे अपना आक़ा मानकर उसके निरंकुश साम्राज्य को मौन स्वीकृति दिये हुए हैं ।

स्वामी तृप्तानंद

खातेगांव, देवास (म०प्र०)

उपदेश से कर्तव्य सर्वोपरि है

आजकल हर कोई उपदेश देता नज़र आएगा और तो और हमारे धर्म नेता, साधु-संत आदि भी केवल उपदेश ही देंगे । धर्म ग्रंथों में जो कर्तव्य करने का परामर्श दिया गया है, उस पर भी वे स्वयं नहीं चलते और उसे भी वे तोड़-मरोड़ कर आम जन को परोसते हैं, जिससे व्यक्ति धार्मिक उन्मादी हो जाता है और धर्म के नाम पर कुछ भी करने को उतारू हो जाता है ।

आज ज़रूरत है, धर्म की सही परिभाषा और उसके मर्म को समझने की जिससे सभी में भाईचारा, सौहार्द और प्रेम का बीजारोपण हो । हमें याद है सभी धर्मों के नाम पर आज जो हो रहा है वह पहले नहीं होता था और सभी ख़ुदा के ख़ौफ़ से डरते थे, लेकिन आज चन्द चांदी के टुकड़ों पर इन्सान अपना ईमान बेच देता है और वह इस मानव का जान लेवा बन बैठता है । अत: सभी साधु-संतों का कर्तव्य हो जाता है कि वे उपदेश देने के स्थान पर धर्म के कर्तव्यों पर चलने हेतु प्रेरित करें और स्वयं भी उस पर चलकर दिखाएं ।

घेवरचन्द्र गोदीका

जयपुर (राजस्थान)

बधाई

मेरी आयु सत्तर वर्ष है । मैं 'कान्ति' मासिक पत्रिका का नया पाठक हूं । मैंने अभी फ़रवरी 2010 का अंक पढ़ा । यह अंक मुझे बेहद पसन्द आया । यह इस्लामी शिक्षाओं पर आधारित है । इसका 'संपादकीय', विमला ठकार की कविता 'अकुलाहट', नरेश निसार की 'नअत' आदि प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है ।

इतनी सुन्दर और लाभदायक पत्रिका के लिए संपादक डॉ० मुहम्मद अहमद बधाई के पात्र हैं ।

शकील अहमद

गोरखपुर (यू०पी०)

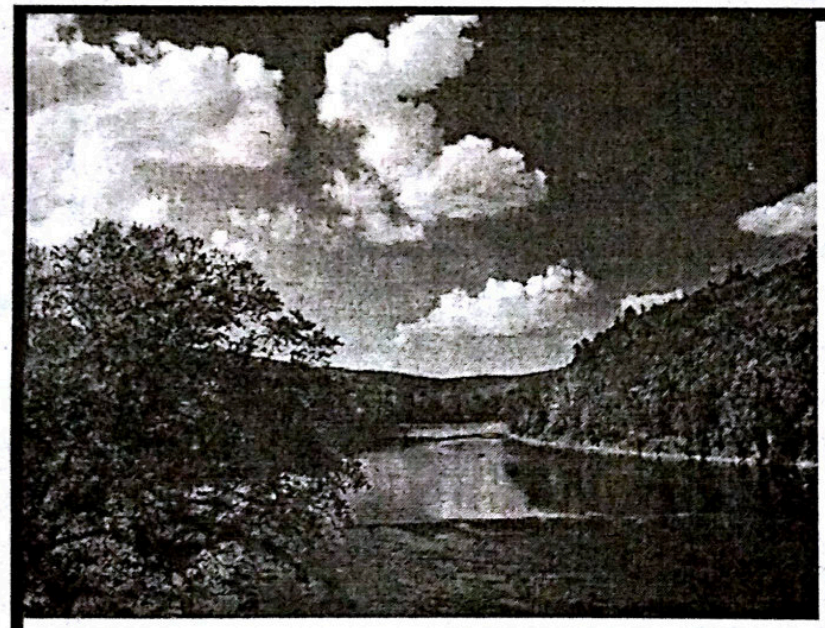

Ph. : 0832-Off. : 518634
513240, 518786
Res. : 514587
Mobile : 98221 23919

BISMILLAH FISHERIES

Near Zuari Acid Tank, Vasco-da-Gama, GOA

निदाए यतीम (Voice of Orphan Boys)

यतीमख़ाना इस्लामिया, गया।

दीनी व असरी उलोम की अपनी तर्ज की मशहूर अकामती (Residential) तालीमगाह

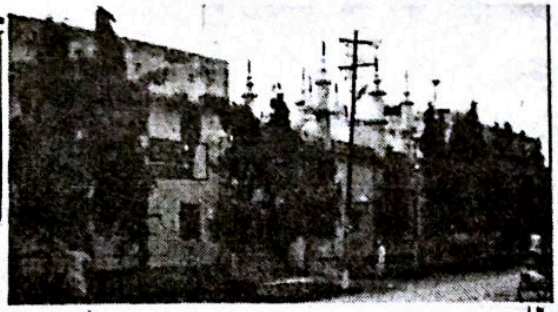

बिरादराने इस्लाम !

अस्सलामु अलैकुम बरहमतुल्लाह व बरकातहु

•आपका यह क़दीम इदारा 92 साल से इल्म की शमा रौशन किय हुए है। आज इसी के तुफ़ैल से इलाक़ा में मुसलमान और हिन्दुओं के स्कूल, पाठशाला, मदरसा और दूर–दूर तक गांव में मकातिब नज़र आ रहे हैं। आज एक छोटी–सी जगह 'चेरकी' के आसपास बएक–वक्त कई बड़े–बड़े इदारे मिल्लत के फ़ायदे के लिए चल रहे हैं। ग़रज एक चिराग़ से बहुत से चिराग़ रौशन हो गये हैं। • यतीमख़ाना अपने तर्ज़ का वाहिद दीनी व असरी तालीम का संगम होने की बजह कर मशहूर व मुम्ताज है। •अक्टूबर 1917 ई० से ही सही इस्लामी खुतूत पर नयी नस्ल की तालीम व तर्बियत में मसरूफ़ है। • तारीख क़ियाम : अक्टूबर 1917 ई० • कैफ़ियत क़ियाम : जनाब इनायत ख़ान (रह०) ने इदारा की बुनियाद एक उस्ताद और दो (2) यतीम बच्चे से आठ आने (50 पैसे) माहबार किराये की कोठरी में तीस रूपये (Rs. 30/-) की छोटी–सी रक़म से डाली थी। • कफ़ालत : इस वक़्त इदारा में 125 यतीम तोलबा हैं, जिनका सारा ख़र्च इदारा बरदाश्त करता है। • तालीमी साल अप्रैल या मार्च • तालीम : दर्जा अतफाल ता मैट्रिक (Matric) • शोबा–ए–हिफ़्ज : यहां असरी तालीम के साथ हिफ़्ज़ भी कराया जाता है। • तादाद ज़ेरे तालीम तोलबा व तालिबात तक़रीबन 450 • अल्लामा इकाल • अल्लामा शिबली • डा० अबुल खैर • सैयद मोहम्मद नाजिर हुसैन • सैयद मोहम्मद उमर दराज • ख्वाजा गेयासुद्दीन होस्टल • अपना सारा ख़र्च देकर ग़ैर यतीम तोलबा और इदारे के यतीम तोलबा रहते हैं। • तादाद असातज़ा व दीगर मुलाज़मीन 28 • सालना ख़र्च 13 लाख रूपये से ज़ायद • ज़रिया आमदनी : मुस्लिम अवाम के चन्दे।

• याद रखें ! हर साल मैट्रिक (Matric) बोर्ड के इम्तिहान में स्कूल का रिज़ल्ट सौ प्रतिशत (100 %) हुआ करता है। • यहां के तोलबा को मैट्रिक पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनीवर्सिटी में आलमियत के साल अब्वल और दोम में आसानी से दाख़िला मिला जाता है। • खुशख़बरी : • फ़ासलाती निज़ामे तालीम (Centre for Distance Education) का अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (Approved by Aligarh Muslim University, Aligarh) के तहत, यतीमख़ना इस्लामिया, गया (The Gaya Muslim Orphanage) में सी० डी० ई० स्टडी सेन्टर (C.D.E. Study Centre) खुल चुका है। 2009–10 के सेशन में इन्टरमेडिएट दर्जा, ग्यारहवीं (Class XI) और बारहवीं (XII) का फार्म भरा जा रहा है। • कंप्यूटर की भी तालीम शुरू हो चुकी है।

नोट : कुरआरन, अरबी और इस्लामियात की तालीम दर्जा अब्वल ता दर्जा दहुम तक दी जाती है अरबी और अंग्रेज़ी मैट्रिक बोर्ड के इम्तिहान में भी लाज़िमी है।

एक अहम अपील : कफ़ाला स्कीम (Kafala Scheme) के तहत एक यतीम तालिब इल्म पर सालाना ख़र्च (Rs.8,000/-) रूपये का है। आप भी एक यतीम बच्चे का ख़र्चे उठा कर कारे सवाब में शरीक हों। जिस शक्ल में मुम्किन हो तआवुन फ़रमा कर अल्लाह से अज्रे अजीम हासिल करें। मसलन, • ज़कात, • अतियात, • सदकात, • पैदावार की ज़कात, • चर्म कुर्बानी,, • एक यतीम बच्चे का सालाना ख़र्च देकर, • अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम कमरा या हॉल बनवाना बग़ैरह।

नोट : हॉस्टल और स्कूल में यतीम और ग़ैर–यतीम तोलबा का दाख़िला जारी

• नया तालीमी साल माह अप्रैल से शुरू।

इदारा आपसे फ़राख़दिलाना तआवुन की अपील करता है।

चेक व ड्राफ्ट पर केवल यह लिखे : **"THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE"**

M-9955655960 चेक, ड्राफ्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता : फोन नं०–0631–2734428

Hon. Secretary. **THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

• Cherki Distt. Gaya, 824237 (Bihar) India

• Bank A/C No.: 10581, Union Bank of India (Main Branch, Gaya)

• **CORE BANKING A/C NO. 300402010010581**

(डॉ०) फ़रासत हुसैन (सदर) Email : gmocde@yahoo.com Website : www.gmogaya.com (डॉ०) मुहम्मद एहतिशाम रसूल (एज़ाज़ी नाज़िम)

हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०)

❖ तालिब हाशमी

(1)

नुबूवत के 13वें साल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने मक्का मुअज़्ज़मा से हिजरत फ़रमायी और मदीना मुनव्वरा पहुंचे । उसी ज़माने की एक घटना है । एक दिन एक प्रतिष्ठित महिला दस वर्ष के एक बच्चे के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुई और बड़े ही अदब से आग्रह किया : ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०), मेरे माता-पिता आप पर क़ुरबान, यह मेरा बेटा अनस है । मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह आपकी सेवा करे । इसको अपने सेवकों में शामिल कर लें और इसके लिए दुआ फ़रमा दें ।''

आप (सल्ल०) उस महिला की भावनाओं से बहुत प्रभावित हुए और बच्चे के सिर पर हाथ फेरा और दुआ फ़रमायी । जिस प्रतिष्ठित महिला ने अपने जिगर के टुकड़े को आप (सल्ल०) की सेवा में देने का सम्मान प्राप्त किया और जिसके निष्ठा-भाव से आप (सल्ल०) अत्यंत प्रसन्न हुए, वे हज़रत उम्मे सुलैम अंसारिया (रज़ि०) थीं ।

(2)

हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) की गिनती उच्च कोटि के सहाबियात में होती है । आपका अस्ल नाम रमला या सहला या रमीशा था । आप उम्मे सुलैम (रज़ि०) के नाम से मशहूर हुईं । आपका ताल्लुक़ ख़ज़रज क़बीला की एक प्रतिष्ठित शाख़ अदी बिन नज्जार से था । आपके पिता का नाम मलहान बिन ख़ालिद और मां का नाम मलैका था । हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) आप (सल्ल०) की रिश्ते में ख़ाला थीं । वे आप (सल्ल०) की परदादी सलमा के भाई की पोती थीं । यद्यपि यह रिश्ता दूर का था लेकिन आप (सल्ल०) ने इस रिश्ते को बहुत महत्व दिया और समय-समय पर उनके घर भी गये ।

हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) को अल्लाह तआला ने बहुत ही नेक स्वभाव का बनाया था । बैअत उक़्बा में जब मदीना के कुछ लोगों ने आप (सल्ल०) से बैअत की और मदीना लौट कर उसकी चर्चा की तो हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) ने हक़ को स्वीकार करने में एक क्षण भी नहीं लगाया । अतएव उनका शुमार अंसार के 'साबिक़ूनल अव्वलून' में होता है ।

(3)

हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) की शादी अपने चचेरे भाई मालिक बिन नसर से हुई । उन्हीं से हज़रत अनस (रज़ि०) पैदा हुए । हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) मुसलमान हो चुकी थीं और अपने बेटे अनस को भी अपने रंग में रंगना चाहती थीं । इसीलिए उसे कलिमा पढ़ाया करती थीं । मालिक बिन नसर अपने बाप-दादा के मज़हब पर क़ायम थे और नहीं चाहते थे कि बेटा कलिमा पढ़े । इसी बात को लेकर पति-पत्नी में तक़रार बढ़ता गया और एक दिन मालिक बिन नसर घर छोड़कर सीरिया चले गये । बाद में वहीं उनकी मृत्यु हो गयी । एक रिवायत के अनुसार किसी ने उनकी हत्या कर दी ।

हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) अब विधवा थीं और उनका लाडला बेटा अनस यतीम । हर ओर से निकाह के पैग़ाम आ रहे थे लेकिन हरेक के लिए उनका एक ही जवाब था, ''जब तक मेरा बच्चा मजलिस में उठने-बैठने और बातचीत करने के योग्य न हो जाए मैं किसी से निकाह नहीं कर सकती ।

जब हज़रत अनस (रज़ि०) कुछ बड़े हो गये तो उसी क़बीले के अबू तलहा ने उन्हें निकाह का पैग़ाम भेजा । अबू तलहा उस समय तक ईमान नहीं लाए थे । हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि०) का अपने पति से अलगाव केवल उसके शिर्क की वजह से ही हुआ था । अब उन्हें यह कैसे गवारा हो सकता था कि एक दूसरे मुशिरक से निकाह कर लें । इसलिए उन्होंने साफ़ इन्कार करते हुए कहा :

''मैं तो एक ख़ुदा और उसके सच्चे रसूल (सल्ल०) पर ईमान लायी हूं । अफ़सोस हो रहा है तुम पर कि जिस ख़ुदा को तुम पूजते हो वह एक पेड़ है (यानी लकड़ी का बुत है) जो ज़मीन से उगा है और अमुक हब्शी ने उसे

आकृति प्रदान की है । मैं एक ख़ुदा की इबादत करती हूं और तू अपने ही बनाए हुए बुतों का पुजारी, जो किसी को लाभ या हानि नहीं पहुंचा सकते । भला मेरा-तुम्हारा मेल कैसे हो सकता है ?''

हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) की ये बातें अबू तलहा के दिल में उतर गयीं । वे कुछ दिन इस पर विचार करते रहे और फिर हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) के पास आकर कहा :

''मुझ पर हक़ स्पष्ट हो गया है और अब मैं तुम्हारा दीन स्वीकार करने के लिए तैयार हूं ।''

हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) की आर्थिक स्थिति उन दिनों बहुत ख़राब थी, लेकिन हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) को उनके इस्लाम क़ुबूल कर लेने से इतनी ख़ुशी हुई कि अनायास वे बोल उठीं : ''फिर मैं तुमसे निकाह करती हूं और इस्लाम के सिवा कोई मेह्र नहीं लेती ।''

उसके बाद अपने बेटे अनस (रज़ि॰) से कहा कि, ''अब तुम उनके साथ मेरा निकाह कर दो ।''

हज़रत अनस (रज़ि॰) ने अपनी मां का निकाह हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) से पढ़ा दिया । हज़रत अनस (रज़ि॰) अक्सर कहा करते थे :

''मेरी मां का निकाह अजीबोग़रीब मह्र पर हुआ ।''

हज़रत साबित (रज़ि॰) कहा करते थे कि, ''मैंने किसी औरत का मह्र उम्मे सुलैम (रज़ि॰) से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) नहीं सुना ।''

लेकिन कुछ दूसरी रिवायतों से पता चलता है कि हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) ने जब इस्लाम क़ुबूल किया उस समय हज़रत अनस (रज़ि॰) की आयु नौ वर्ष के क़रीब थी । एक नाबालिग़ बच्चे का निकाह पढ़ाना कुछ अजीब-सी बात मालूम होती है । संभव है निकाह किसी दूसरे व्यक्ति ने पढ़ाया हो और हज़रत अनस (रज़ि॰) निकाह की मजलिस में मौजूद हों । (वल्लाह आलम)

(4)

इस्लाम क़ुबूल करने के बाद हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) अपने ईमानी जोश, रसूल (सल्ल॰) की मुहब्बत और त्याग की भावना के बल पर जल्द ही जलीलुल क़द्र सहाबी के रूप में गिने जाने लगे । इस्लाम की नेमत से मालामाल होने के बाद हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) को अंसार के उन 75 लोगों में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो सन 13 हिजरी में मक्का जाकर आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुए, आप (सल्ल॰) की बैअत ली और आप (सल्ल॰) को इस संकल्प के साथ मदीना आने की दावत दी कि वे अपनी जानों, मालों और संतानों के साथ आप (सल्ल॰) का साथ देंगे । यह बैअत इतिहास में बैअत-ए-लैलतुल उक़्बा, बैअत उक़्बा सानिया और बैअत-ए-उक़्बा कबीरा के नाम से मशहूर है ।

कुछ दिनों बाद जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰), उनके पति हज़रत तलहा (रज़ि॰) और उनके बेटे हज़रत अनस (रज़ि॰) की ख़ुशी का कोई ठिकाना न था । आप (सल्ल॰) का मदीना तशरीफ़ लाना उनके लिए ईद के दिन से कम न था । हिजरत के शुरुआती दिनों में ही हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) ने अपने बेटे हज़रत अनस (रज़ि॰) को आप (सल्ल॰) की सेवा में देने का सम्मान प्राप्त किया ।

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) की इच्छा पर हज़रत अबू तलहा (रज़ि॰) हज़रत अनस (रज़ि॰) को साथ लेकर आप (सल्ल॰) की सेवा में हाज़िर हुए और आप (सल्ल॰) से निवेदन किया कि हज़रत अनस (रज़ि॰) को अपनी गुलामी में ले लीजिए । आप (सल्ल॰) ने उनकी विनती स्वीकार कर ली ।

हिजरत के कुछ दिनों के बाद आप (रज़ि॰) ने मुहाजरीन और अंसार के बीच भाईचारा क़ायम कराया तो हज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि॰) के घर पर ही आप (सल्ल॰) के साथ सभी मुहाजरीन और अंसार उस महान उद्देश्य के लिए जमा हुए । (जारी)

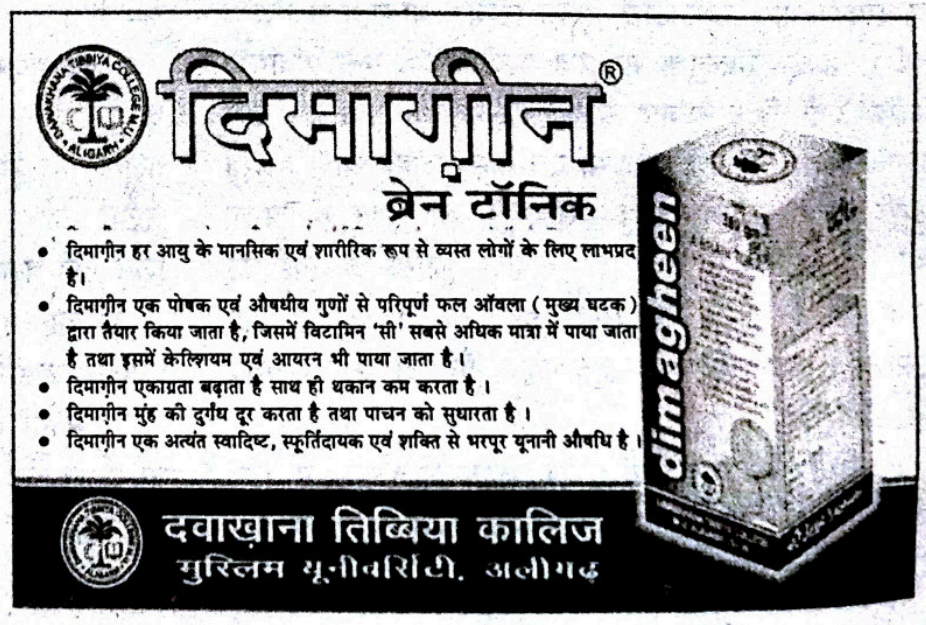

धार्मिक लोगों में आपसी संवाद और सहयोग की ज़रूरत

■ इंजीनियर मुहम्मद सलीम

हमारे देश भारत में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग बड़ी संख्या में बहुत लंबे समय से मौजूद हैं। 1857 से शुरू हुई देश की आज़ादी की लड़ाई में देश आज़ाद होने तक सभी धर्म के लोगों ने क़ुरबानियां दीं जिसके परिणामस्वरूप देश आज़ाद हुआ। लोगों की धार्मिक आस्थाओं और धर्म की शिक्षाओं ने भी लोगों को आज़ादी के इस लंबे संघर्ष में त्याग और बलिदान के लिए उभारा, देश के हज़ारों उलमा (इस्लामी विद्वानों) ने भी देश की आज़ादी के लिए अपना धार्मिक दायित्व समझते हुए अपनी जानें न्योछावर कीं। लेकिन आज आज़ादी के 62 साल गुज़र जाने के बाद स्थिति यह है कि लोग धर्म को आपसी वैमनस्य, हिंसा, रक्तपात का कारण समझते हुए उसे सिर्फ़ व्यक्तिगत ज़ीवन तक सीमित रखने और सामाजिक व राजनीतिक जीवन से धर्म को बाहर निकाल देने की वकालत करने लगे हैं। व्यावहारिक रूप से धर्म विरोधी लोगों ने धर्म का नाम लेकर और धार्मिक चोला पहन कर इतना अन्याय व अधर्म किया है कि लोग धर्म के नाम से भयभीत होने लगे हैं।

अगर ईमानदारी से सार्थक संवाद होता रहे तो यह बात भी स्पष्ट होती चली जाएगी कि सच्ची धार्मिकता और साम्प्रदायिकता दोनों एक-दूसरे के घोर विरोधी हैं। धार्मिकता और साम्प्रदायिकता में फ़र्क़ न करने के परिणामस्वरूप बहुत-सी समस्याएं पैदा हो गयी है और हमने धर्म को कोसना शुरू कर दिया तथा धर्म को लोगों के जीवन से निकालने का अभियान छेड़ दिया, जिसकी वजह से नैतिक मूल्यों की कमी होती चली जा रही है।

कुछ ताक़तों ने तो इस्लाम धर्म को आतंकवाद से जोड़ने के घृणित प्रयास इतने योजनाबद्ध तरीक़े से किये हैं कि बड़ी परिपक्व सोच रखने वाले न्यायप्रिय लोग भी शंकित होने लगे हैं। इससे बड़ी विडम्बना किसी देश या समाज के लिए क्या हो सकती है कि लोग प्रकाश को अंधकार और अंधकार को प्रकाश, अम्न, शांति की राह को हिंसा व रक्तपात का रास्ता और हिंसा व रक्तपात को बढ़ावा देने वालों को शान्ति दूत समझने लगे हैं। इससे ज़्यादा अफ़सोस की बात और क्या हो सकती है कि सैकड़ों सालों से एक साथ रहने के बावजूद लोग एक-दूसरे के धर्म, आस्था व संस्कृति से अपरिचित हों और एक-दूसरे के बारे में आशंकित हों और हमें कमज़ोर करने वाली ताक़तें इनका फ़ायदा उठाकर नफ़रत और दूरियां बढ़ाने में कामयाब होती चली जाएं।

आज के हालात में इस बात की आवश्यकता है कि विभिन्न धर्मों व आस्थाओं के मानने वाले सच्चे धार्मिक लोगों के बीच आपस में सीधा संवाद स्थापित हो, ताकि एक-दूसरे के धर्म, आस्था व संस्कृति के बारे में जानने के अधिक से अधिक अवसर पैदा हों। यह संवाद जितना अधिक सार्थक होगा उतना ही यह सच अधिक से अधिक उजागर होता चला जाएगा कि जो विभिन्न धर्म बहुत अधिक भिन्न नज़र आते हैं उनमें भी मूलरूप से बहुत से मूल्य समान व साझा हैं, जिससे यह बात ज़्यादा से ज़्यादा स्पष्ट होती चली जाएगी कि वास्तव में इस सृष्टि के स्रष्टा ईश्वर की ओर से अलग-अलग समय में धरती के विभिन्न हिस्सों में मानवता के मार्गदर्शन के लिए जो ज्ञान आता रहा वह मूलरूप से एक ही है, लोगों के स्वार्थ और एक-दूसरे पर अन्याय के लिए इस मार्गदर्शन को इतना परिवर्तित किया गया कि हम आज की स्थिति में पहुंच गये। इस सत्य को कौन नकार सकता है कि धरती पर मौजूद तमाम इन्सान एक ही मां-बाप की संतान हैं, इन्सानों के बीच इससे ज़्यादा मज़बूत और निकटता का रिश्ता क्या हो सकता है ?

विभिन्न धर्मों और आस्थाओं के मानने वालों के बीच यह संवाद सार्थक हो इसके लिए आवश्यक है, इस संवाद में ईमानदारी हो, अपनी-अपनी पसन्द के धर्मों पर दृढ़ विश्वास और आचरण के साथ दूसरों की धार्मिक स्वतंत्रता का पूरा सम्मान हो, किसी पर अपने विचार या आस्था को थोपने का प्रयास न हो, सच्चाई को जानने और स्पष्ट हो जाएं तो मानने का साहस हो । अपनी मर्ज़ी से अपने विवेक से निर्णय करने की स्वतंत्रता जो इस सृष्टि में मानव को हमारे स्रष्टा ने दी है वह अत्यंत आवश्यक और क़ीमती चीज़ है, जिसकी हर क़ीमत पर रक्षा होनी चाहिए, ईश्वर ने भी इस स्वतंत्रता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है । ईश्वर के अन्तिम मार्गदर्शन क़ुरआन में अल्लाह तआला फ़रमाता है, "अगर हम चाहते तो तुम्हें एक जैसा बना देते...।"

अगर ईमानदारी से सार्थक संवाद होता रहे तो यह बात भी स्पष्ट होती चली जाएगी कि सच्ची धार्मिकता और साम्प्रदायिकता दोनों एक-दूसरे के घोर विरोधी हैं । धार्मिकता और साम्प्रदायिकता में फ़र्क़ न करने के परिणामस्वरूप बहुत-सी समस्याएं पैदा हो गयी है और हमने धर्म को कोसना शुरू कर दिया तथा धर्म को लोगों के जीवन से निकालने का अभियान छेड़ दिया, जिसकी वजह से नैतिक मूल्यों की कमी होती चली जा रही है ।

मेरी राय में सच्ची धार्मिकता और एक-दूसरे की धार्मिक स्वतंत्रता के आदर के माध्यम से साम्प्रदायिकता और फॉसीवादी मानसिकता को जड़ से उखाड़ा ज़ा सकता है और इसके नतीजे में आपसी प्रेम, आदर व विश्वास मज़बूत होगा, जो देश और समाज की मज़बूती, अम्न व शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए अपरिहार्य है ।

आज हमारा देश व समाज जिस तरह नैतिकता से ख़ाली होता जा रहा है, नैतिकता से ख़ाली शिक्षा हमारी नयी पीढ़ी को सामाजिक सरोकारों के प्रति संवेदनहीन तथा अमानवीय बना रही है, नैतिक मूल्यों रहित प्रगति व समृद्धि समाज में वातावरण व प्रकृति में असंतुलन, अशान्ति व आपसी घृणा तथा द्वेष को बढ़ा रही है, नैतिकतारहित अर्थव्यवस्था समाज को शोषक और शोषित वर्गों में बांट रही है, मूल्यविहीन राजनीति ने भ्रष्टाचार, अराजकता, व्यवस्था में आम आदमी का अविश्वास, अच्छे लोगों का राजनीति व व्यवस्था से अलग हो जाना, ग़रीबी व गुलामी जैसी गंभीर समस्याओं को बढ़ाया है । धार्मिक लोग अगर मिल-जुलकर नैतिकता को बचाने और इसको मज़बूत करने के साझा एजेंडे पर कार्य करें तो देश को एक बड़े ख़तरे से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, इस एजेंडे पर कार्य करने में हमारी आस्था व धर्म की भिन्नताएं कोई रुकावट नहीं बनेगी और स्वार्थी राजनीतिज्ञों द्वारा धर्म व आस्था के नाम पर हमें बांटने और देश को कमज़ोर करने के प्रयास भी विफल किये जा सकेंगे । धार्मिक लोगों का अपने-अपने धर्म व आस्थाओं के अनुसार आचरण करते हुए आपसी संवाद के वातावरण को मज़बूत करते हुए देश व समाज की साझा समस्यांओं के लिए मिल-जुलकर काम करने तथा एक-दूसरे का यथासंभव सहयोग करने से देश व समाज मज़बूत होगा । क़ुरआन में हम सबका स्रष्टा फ़रमाता है-"नेकी और भलाई के कामों में एक-दूसरे का सहयोग करो, तथा बुराई व ईश्वर की अवज्ञा में किसी का सहयोग मत करो ।"

(क़ुरआन, 5:2)

आपसी संवाद व सहयोग के इन प्रयासों से हम सत्य के और एक-दूसरे के निकट आएंगे । संवाद व सहयोग हमारे समाज व देश के लिए आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य भी है और हम सबका देश के ज़िम्मेदार व संवेदनशील नागरिक होने के नाते व धार्मिक होने की वजह से धार्मिक दायित्व भी । ईश्वर हमारी मदद फ़रमाए, आमीन ।

P. Usman
K. M. Iqbal

Ph. : 0832-2514213
2512910
Mobile : 09422437171
09822586829
09422443990
09422437272

P.U.F.

Fish Merchants & Commission Agent

Kharewada, Vasco-Da-Gama-GOA-403802

ईसाई धर्म में इस्लामी तत्व

मानव जाति के जन्म से ही इस्लाम धर्म विद्यमान रहा है । जब लोगों ने इसकी शिक्षाओं में अपने कुत्सित स्वार्थों और उद्देश्यों के लिए परिवर्तन-परिवर्धन किया, तो दयावान और कृपाशील अल्लाह ने इस्लाम की शिक्षाओं को अपने पैग़म्बरों के ज़रिये इन्सानों के पास विभिन्न कालों और स्थानों व क्षेत्रों में भेजा । कृपाशील प्रभु ने मानव संस्कृति के उत्थान के साथ ऐसी व्यवस्था कर दी कि इस्लाम की शिक्षाओं को विकृत नहीं किया जा सके और जब भी संदेह की स्थिति हो तो उसे इस्लाम की कसौटी पर उनकी जांच-परख कर मौलिकता तक पहुंचा जा सके, तो पैग़म्बरों के आने का सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त कर दिया गया और आपके ज़रिये इस्लाम को अद्यतन और पूर्ण रूप में पेश कर दिया गया । स्पष्ट है कि आज बहुत से धर्म ग्रंथ और ईश्वरीय धर्म ग्रंथ पाये जाते हैं, जिनमें इस्लाम की शिक्षाएं अल्प ही सही, लेकिन मूल रूप में मौजूद हैं । पवित्र क़ुरआन और मुहम्मद (सल्ल०) का जीवन और कथन इनकी कसौटी हैं । प्रस्तुत आलेख में ईसाई धर्म में पायी जाने वाली इस्लामी शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया है, जिससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि इस्लाम सनातन धर्म है और पूर्व धर्मों के मौलिक तत्वों को मान्यता देता है । –संपादक

❐ अभिजीत कुमार
(मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार)

परोक्ष/क़ियामत के दिन का ज्ञान किसे है ?

एक बार जब लोगों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा कि क़ियामत कब क़ायम होगी तो आपने फ़रमाया, "इसका इल्म मेरे परवरदिगार को ही है, वही उसके वक़्त पर उसे ज़ाहिर करेगा ।" ठीक यही बात हज़रत ईसा भी अपने साथियों से कहते हैं–"उस दिन और उस घड़ी (क़ियामत) के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग का दूत, न पुत्र, परन्तु केवल पिता ।" (मत्ती, 24:36)

झूठे नबियों से सावधान रहो

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अपनी एक हदीस में फ़रमाते हैं–"मुझे अपनी उम्मत के मुताल्लिक़ गुमराह करने वाले लीडरों का डर है ।" (तिरमिज़ी)। एक अन्य हदीस में रसूल (सल्ल०) फ़रमाते हैं–"मेरी उम्मत में 30 झूठे होंगे जिसमें हर एक स्वयं को नबी बताएगा, हालांकि मैं आख़िरी नबी हूं । मेरे बाद कोई नबी नहीं हो सकता ।" (मिश्कात)

वहीं हज़रत ईसा भी सावधान करते हुए कहते हैं–"झूठे नबियों से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं पर अन्तर में फाड़ने वाले भेड़िये हैं ।" (मत्ती, 7:15)

इसी तरह एक बार जब उनके हवारियों (साथियों) ने उनसे पूछा कि, "हम से कह कि तेरे आने का और जगत के अंत का क्या चिन्ह होगा ? तो यीशु ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा–"और बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे जो बहुतों को भरमाएंगे ।" (मत्ती, 24:11)

जन्नत की लालसा

क़ुरआन शरीफ़ की सूरह तहरीम में ईश्वर ईमान वालों के लिए फ़िरऔन की स्त्री की मिसाल पेश करते हुए कहता है–"और अल्लाह ईमान वालों के लिए फ़िरऔन की स्त्री की मिसाल पेश करता है जब उसने कहा : रब ! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना, तथा मुझे फ़िरऔन और उसके कर्मों से छुटकारा दे । (सूरह तहरीम, 66:11) एक अन्य स्थान पर आता है, "और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उसके द्वारा आख़िरत का घर बनाने का उपाय कर । (क़ुरआन, 28:77)

ठीक इसी तरह की शिक्षा देते हुए हज़रत ईसा कहते हैं–"अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां की कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो जहां न तो कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और न जहां चोर सेंध लगाते हैं और चुराते हैं । (मत्ती, 6:19-20)

स्त्री पर बुरी नज़र न डालो

हज़रत अबू उमामा फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जिस मोमिन की किसी अजनबी औरत की ख़ूबसूरती पर नज़र पड़ी, उसने सिर्फ़ अल्लाह के लिए अपनी नज़र नीचे कर ली, ऐसे ईमानदार मर्द को उसके बदले में ऐसी इबादत नसीब होगी जिसकी मिठास वह अपने दिल में महसूस करेगा । (अहमद)

क़ुरआन शरीफ़ में भी आता है–"(हे नबी !) 'ईमान' वालों से कहो : वे अपनी निगाहें नीची रखें व अपनी

शर्मगाहों की रक्षा करें।'' (सूरह अन-नूर, 24:30)

हज़रत ईसा भी कहते हैं, ''जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।'' (मत्ती, 5:28)

दिखावा न करो

कुरआन में आता है, ''ख़राबी है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से बेख़बर हैं तथा दिखावे का काम करते हैं।'' (सूरह माऊन, 107:4-6)

हज़रत ईसा भी ठीक यही बात कहते हैं–''सावधान रहो ! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म का काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। (मत्ती, 6:1)

बेवजह तलाक़ देना ग़लत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा कि, ''अल्लाह की हलाल चीज़ों में सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा चीज़ तलाक़ है।

(अबू दाऊद)

अर्थात बिना किसी जायज़ वजह के स्त्री को तलाक़ देना ग़लत है। यही बात हज़रत ईसा भी फ़रमाते हैं–''जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे तो वह उससे व्यभिचार करवाता है।''

(मत्ती, 8:32)

दयावान बनो/माफ़ करो

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक सहाबी ने रसूल (सल्ल०) से पूछा, हुज़ूर ! यह तो बतलाइए कि हम अपने नौकरों की ख़ता कितनी बार माफ़ करें। रसूल (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, ''सत्तर बार माफ़ करो।''

इसी तरह की दयाभावना का उपदेश देते हुए हज़रत ईसा कहते हैं–''धन्य हैं वो जो दयावंत हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। (मत्ती, 5:7)

एक अन्य स्थान पर हज़रत ईसा फ़रमाते हैं–''यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।'' (मत्ती, 6:14)

न्याय के दिन क्या होगा ?

कुरआन की सूरह हूद में आता है–''जो लोग बदबख़्त हैं, वे दोज़ख़ में इस हाल में होंगे कि गधों की तरह चिल्लाते होंगे।''

हज़रत ईसा भी दोज़ख़ के बारे में बताते हुए कहते हैं कि वहां केवल रोना और दांतों का पीटना होगा।''

(मत्ती, 8:12)

ईसा ने कभी भी ख़ुदा होने का दावा नहीं किया

कुरआन में आता है–''और याद करो जब अल्लाह कहेगा : हे ईसा सुत मरयम। क्या तूने लोगों से कहा था कि अल्लाह के सिवा दो 'इलाह' मुझे और मेरी माता को बना लो ? वह कहेगा ! तू महिमावान है ! मुझसे यह नहीं हो सकता कि ऐसी बात कहूं जिसका मुझे कुछ भी हक़ नहीं। यदि मैं यह कहता, तो मुझे यह मालूम होता। तू जानता है जो कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं जानता–जो कुछ तेरे मन में है। तू ही छिपी बातों का जानने वाला है। मैंने उनसे उसके सिवा और कुछ नहीं कहा जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था, यह कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी 'रब' है।''

(कुरआन, 5:116-117)

ठीक यही बात बाइबल में भी है जब ख़ुद को ख़ुदा कहने वालों को लताड़ते हुए ईसा कहते हैं–''उस दिन बहुतेरे मुझसे कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचंभे का काम नहीं किये ? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा, मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ।

(मत्ती, 7:21-23)

यही नहीं जब यीशु के पास आकर एक व्यक्ति उनके आगे घुटने टेक कर कहता है 'हे उत्तम गुरु ! अनंत जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं ? तो ईसा उससे कहते हैं–तू मुझे उत्तम क्यूं कहता है ? कोई उत्तम नहीं केवल एक अर्थात परमेश्वर।'' (मरकुस, 10:17-18)

ईसा ने वही कहा; जिसका आदेश अल्लाह ने दिया था

कुरआन की सूरह माइदा में ईसा जो कहते हैं (आयत, 116,117) उस बात की पुष्टि बाइबल से भी होती है। ईसा ने सहाबियों से वही बातें कही जिसका उन्हें हुक्म था, अतः ईसा स्वीकार करते हैं–''क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं कि, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं क्या-क्या कहूं और क्या-क्या बोलूं ?''

(यूहन्ना, 12:49)

चंगेज़ ख़ान और मुसलमान

प्रस्तुति : **इरशाद अली ख़ान**

चंगेज़ ख़ान के पिता का नाम ल्यूकाई बहादुर (Yesukhei) था, जो क़बीला ''कियात'' का सरदार था और उसकी मां का नाम ओलान (Hoelun) था । ल्यूकाई बहादुर अपने क़बीले का बड़ा ही दिलेर आदमी था और उसका संबंध 'बोरचीजन' नस्ल से था । क़ैराइट क़बीले का सरदार टहरल ख़ान, उर्फ़ ओंग ख़ान ल्यूकाई बहादुर का मुंहबोला भाई था । तेमूचिन (चंगेज़ ख़ान) की पैदाइश के समय उसका बाप ल्यूकाई बहादुर अपने एक दुश्मन से जंग करने गया हुआ था । संयोग से उस दुश्मन का नाम भी तेमूचिन था । तेमूचिन को जंग में पराजित करने के बाद ल्यूकाई बहादुर ने अपने नवजात बेटे का नाम भी अपने उसी दुश्मन के नाम पर तेमूचिन रख दिया । अत: कई वर्ष के बाद इसी तेमूचिन को क़बीले वालों ने ''चंगेज़ ख़ान'' के नाम से पुकारना शुरू कर दिया ।

चंगेज़ ख़ान की मां ओलान एक बहुत ही सुन्दर औरत थी । ओलान को ल्यूकाई बहादुर ने केत या मकरीत ख़ानदान के रिश्तेदार क़बीले से भगा लाया था, जब उसकी शादी हो रही थी और वह अपने पति के साथ अपने क़बीले से विदा होने वाली थी । ल्यूकाई बहादुर के अपहरण करने के बाद कुछ दिनों तक ओलान ने ख़ूब शोर बचाया, मगर जब चंगेज़ ख़ान पैदा हुआ, तो ओलान ने हालात से समझौता कर लिया और मानसिक रूप से वह ल्यूकाई बहादुर की बीवी बन गयी ।

जनाब एहसान शौक़ अपनी किताब ''चंगेज़ ख़ान से बाबर तक'' में चंगेज़ ख़ान के जन्म के बारे में लिखते हैं कि चंगेज़ ख़ान का जन्म सन 1162 ई० के आसपास आधुनिक मंगोलिया के उत्तरी भाग में ओनोन नदी के निकट हुआ था । कहा जाता है कि जब वह अपनी मां के पेट में था तो उसकी मां ने स्वप्न देखा कि दो तलवारें उसके पास हैं जो उसके पैरों तले दबी हुई हैं । उनकी नोकें नीले आसमान (मंगोलों के धार्मिक आस्था के अनुसार आसमान उनका देवता था) को छू रही हैं । सुबह होने पर जब चंगेज़ ख़ान की मां ने अपने उस सपने की ताबीर पूछी, तो उसे बताया गया कि उसके गर्भ से जो बच्चा पैदा होने वाला है, वह बड़ा होकर बहुत बड़ा विजेता बनेगा । अत: उसके ख़्वाब की ताबीर कई वर्षों के बाद पूरी हुई ।

ल्यूकाई बहादुर के घर जब चंगेज़ ख़ान पैदा हुआ, तो उस वक़्त उसकी मुट्ठी में जमे हुए ख़ून का एक लोथड़ा था । अपनी मां ओलान के पेट से तेमूचिन ख़ून से रंगे हुए हाथ लेकर पैदा हुआ था । ल्यूकाई बहादुर को जब दुश्मनों ने ज़हर देकर मार डाला, तो उस अवसर पर औलान ने याक के ''नौदुमों वाला'' झंडा उठाया और क़बीला छोड़ने पर तुले हुए ख़ानाबदोशों को एक झंडे के नीचे जमा किया । ओलान ने मेहनत -मशक़्क़त के साथ-साथ दुख-दर्द को सहते हुए ल्यूकाई बहादुर के बच्चों को भी किसी न किसी तरह पाल-पोसकर ज़िन्दा रखा और उन्हें उनके पूर्वज ''बूरजीगोन'' के बहादुरी के क़िस्से सुना-सुनाकर उनकी हिम्मत को बढ़ाती रही । जिनकी ललकार पहाड़ों में बिजली की कड़क की तरह गुंजती थी और जिनके हाथ रीछों के पंजों की तरह शक्तिशाली थे ।

चंगेज़ ख़ान का भाई ''किसार'' चंगेज़ ख़ान से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता था । वह तीर चलाने में इतना निपुण था कि अपने इसी कमाल की बिना पर उसने कई बार चंगेज़ ख़ान की जान बचायी थी । क़बीले का एक दुष्ट इन्सान जिसका नाम तबतसहिंगरी था, वह चंगेज़ ख़ान के भाई किसार से बहुत ज़्यादा नफ़रत करता था । अवसर मिलते ही उसने एक दिन किसार को पीट दिया । किसार ने अपने पीटे जाने की शिकायत चंगेज़ ख़ान से की । तबतसहिंगरी, जो एक नजूमी था, जब उसको यह मालूम हुआ कि किसार ने उसकी शिकायत चंगेज़ ख़ान से की है, तो उसने अप्राकृतिक रूप से भविष्यवाणी करके चंगेज़ ख़ान को इस बात का विश्वास दिलाया कि अगर तुम अपने भाई किसार का क़त्ल कर दोगे, तो तुम अपने क़बीले का सरदार बन जाओगे ।

चंगेज़ ख़ान उस नजूमी के झांसे में आकर अपने भाई किसार को बंधक बनाकर ख़ेमे में क़ैद कर लिया । किसार के क़ैद होने की ख़बर जब उसकी मां ओलान को मिली, तो उसने किसार को चंगेज़ ख़ान के चंगुल से आज़ाद

करवाया । सारी सच्चाई मालूम होने पर चंगे़ज़ ख़ान ने अपने तीन ताक़तवर बहादुरों के हाथों उस नजूमी तबतसहिंगरी को क़त्ल करवा दिया । बचपन में एक बार मछली का शिकार करते समय चंगे़ज़ ख़ान के एक सौतेले भाई ने उसकी मछली चुरा ली, तो चंगे़ज़ ख़ान ने चोरी की सज़ा देने के लिए अपने उस सौतेले भाई को तीरों से छलनी करके मार डाला, क्योंकि वह रहम व तरस को व्यर्थ चीज़ समझता था, जो बुज़दिली की निशानी थी ।

13 वर्ष की उम्र में अपना घर आबाद करने के लिए चंगे़ज़ ख़ान ने ''बोरताई'' (Borti) से शादी की थी । हुआ यूं कि एक बार चंगे़ज़ ख़ान अपने क़बीले से निकलकर कहीं जा रहा था । रास्ते में वह बोरताई के क़बीले से गुज़रा । ज्यों ही चंगे़ज़ ख़ान की नज़र बोरताई पर पड़ी, वह उसे देखता ही रह गया और मन ही मन वह बोरताई से शादी करने का संकल्प कर लिया, क्योंकि बोरताई बहुत ही ख़ूबसूरत थी । इस घटना के दूसरे दिन चंगे़ज़ ख़ान का बाप ल्यूकाई बहादुर अपने उन पुराने दुश्मनों के नरगे में आ गया, जिन लोगों से उसकी पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी । उन लोगों ने ल्यूकाई बहादुर को ज़हर देकर मार डाला ।

ल्यूकाई बहादुर के मरने की ख़बर जब चंगे़ज़ ख़ान को हुई, तो उसने अपने बिखरे हुए क़बीले को इकट्ठा किया और उनके सामने एक ज़ोरदार तक़रीर की । तक़रीर के बाद अपने सबसे प्रिय मित्र ''बोघूरचू'' और अपने भाई ''आंडा'', जमूका (जो चंगे़ज़ ख़ान के बहुत-ही विश्वसनीय साथी थे) और क़बीले के दूसरे लोगों के राय-मश्विरे से मंगोलों का सरदार ख़ान (ख़ाक़ान) की उपाधि धारण करके सिंहासन पर विराजमान हो गया, ताकि क़बीले के सरदार की ज़िम्मेदारी निभा सके ।

बोरताई का बाप 'मंलीक' एक ऐसे क़बीले का सरदार था, जिसने कई जंगों में मंगोलों का साथ दिया था । बोरताई दहेज में एक बहुमूल्य तलवार भी लायी, जो चंगे़ज़ ख़ान को बहुत पसन्द थी । उत्तरी मैदानों के ख़ानाबदोश बिल्कुल वहशी और उखड्ड थे । इसी क्षेत्र के एक शक्तिशाली क़बीले ''मकरीत'' ने ल्यूकाई बहादुर की तरफ़ से ''ओलान'' को भगा लाने पर और अपने अपमान का बदला लेने के लिए मंगोलों पर धावा बोल दिया और चंगे़ज़ ख़ान की बीवी बोरताई को ज़बरदस्ती उठा ले गया । मकरीत के दुश्मन क़बीले ने बोरताई को क़बीले की परम्परा के अनुसार उसे एक ऐसे व्यक्ति के हवाले कर दिया, जिसकी शादी पहले ओलान से हो चुकी थी, मगर ल्यूकाई बहादुर ने ओलान का अपहरण कर लिया था । इसी कारण से मकरीत क़बीले वालों ने चंगे़ज़ ख़ान की बीवी बोरताई को उस व्यक्ति के सुपुर्द कर दिया ।

अत: इस अवसर पर चंगे़ज़ ख़ान ने बोरताई की रिहाई के लिए गोवी मरुस्थल के ख़ानाबदोश क़बाइल में सबसे शक्तिशाली तुर्क क़ौम ''क़ैराइट क़बीले'' का सरदार ''टहरल ख़ान'' उर्फ़ ओंग ख़ान से मदद मांगी, जो उसने, फ़ौरन स्वीकार कर ली । एक सर्द रात को योजना के अनुसार मंगोलों और क़ैराइटों की सेनाओं ने मकरीत क़बीले पर धावा बोला, तो मकरीत क़बीले के लोग इस अकस्मात हमले से तितर-बितर हो गये और जान बचाकर भाग गये । इस तरह से कुछ अरसे के बाद चंगे़ज़ ख़ान को बोरताई दुबारा मिल गयी । रिहाई के वक़्त बोरताई के गोद में एक बच्चा था । यह बच्चा उसी व्यक्ति का था, जिसके सुपुर्द में बोरताई को मकरीत के दुश्मन क़बीले वालों ने किया था । चूंकि चंगे़ज़ ख़ान बोरताई से बेपनाह मुहब्बत करता था, इसलिए उसने उस अवैध संतान को अपने पुत्र की तरह पाला-पोसा और उसका नाम ''जोची ख़ान'' (Jochi) रखा ।

''वादा भी एक क़र्ज़ है, जिसे अदा करना चाहिए ।'' (हदीस)
Mr. Shakeel
Jaipur

इस्लाम का संदेश

❖ इस्लाम एक सिद्धान्त, एक आन्दोलन	मरयम जमीला	80.0 0
❖ इस्लाम का आरम्भ	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	4.00
❖ इस्लाम का परिचय	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां	8.00
❖ इस्लाम का नैतिक दृष्टिकोण	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
❖ इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	2.00
❖ इस्लाम का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
❖ इस्लाम की आध्यात्मिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की गोद में	मुहम्मद असद(नव-मुस्लिम पूर्व लियोपोल्ड)	60.00
❖ इस्लाम की जीवन-व्यवस्था	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
❖ इस्लाम की नैतिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था और दहेज प्रथा	प्रो० उमर हयात ख़ां ग़ौरी	15.00
❖ इस्लाम की बुनियादी बातें	मौलाना अब्दुल हई	10.00
❖ इस्लाम की बुनियादी तालीमात (खुतबात मुकम्मल)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	75.00
❖ इस्लाम की राजनैतिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम की शीतल छाया	मौलाना सय्यद हामिद अली	10.00
❖ इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था (पाकेट साइज़)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	3.00
❖ इस्लाम के चारों ओर	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	12.00
❖ इस्लाम क्या है?	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	5.00
❖ इस्लाम जिससे मुझे प्यार है	अब्दुल्लाह अडियार	25.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • **Website:** www.mmipublishers.net

निदाए यतीम (Voice of Orphan Girls')

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना, गया।

लड़कियों के लिए जदीद और मुकम्मल इस्लामी तर्ज़ तालीम से मुज़ैयन क़ौमी सतह का मेयारी रिहायशी (Residential) इदारा



इस्लामी भाइयों और बहनों ! अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहु

यह आपका जाना–पहचाना इदारा जो तक़रीबन 23 वर्षों से क़ौमी ख़िदमत अंजाम दे रहा है अलहम्दुलिल्लाह इदारा बहुत ही बुलन्द मक़ासिद के तहत वजूद में आया है और झोंपड़े से महल बनने की भरपूर कोशिश कर रहा है। आप हज़रात की ख़ुसूसी तवज्जुहात से ही इदारा तमाम मुश्किलात के बावजूद दिन–बदिन तेज़ी से तरक़्क़ी की मंजिलें तय करता जा रहा है।

• इदारा 21 दिसम्बर 1986 ई० से ही सही इस्लामी खुतूत पर यतीम के साथ–साथ गरीब और गैर–यतीम तालिबात की तालीमी ख़िदमात अंजाम दे रहा है। • यहां की तालिबात को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनीवर्सिटी में आलमियत के साल अव्वल व दोम में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। • शोबा–ए–हिफ़्ज की तालिबात को हिफ़्ज़ के साथ–साथ मैट्रिक (Matric) तक की तालीम दी जाती है। • **तालीमी साल (Educational Session)** : अप्रैल ता मार्च • तालीमी मराहिल • नर्सरी • इब्तिदाई • सानवी • आला • शोबा हिफ्ज व तजवीद • Distance Education तादाद यतीम तालिबात–110 बैरूनी तालिबात् अपने खर्च पर दारूल अकामा (Boarding) में रह कर तालिम हासिल करें। करने वाली और बाहर से आकर जाने वाली इसके अलावा है। • तादाद असातज़ा, मुअल्लिमात और दूसरे मुलाज़मीन : 30 • **सालाना ख़र्च (Annual Expenditure)** : बारह लाख रूपये (Rs. 12,00,000) से ज़ायद (तामीरी ख़र्च को छोड़कर) • **ज़रिया आमदनी** : मुस्लिम अवाम के चन्दे।

नोट : यतीम तालिबात का सारा ख़र्च : पैर के नाखुन से लेकर सर के बाल तक या कहिए एड़ी से लेकर चोटी तक इदारा पूरा करता है।

यतीमखाना की ख़बरे : • **शोबा–ए–तालीम बालग़ान (Adult Education)** : की बुनियाद 20 जून 2002 ई० को एक नवजवान शदीशुदा औरत से पड़ी थी। • **शोबा–ए–हिफ़्ज (Qura'n Memorization)** : 6 तालिबात ने दीनी वे असरी तालीम क साथ दरजा दहुम में पहुंचते –पहुंचते हिफ़्ज मुकम्मल कर लिया। वह हाफिजे कुरआन क़रार दी गयीं और मैट्रिक पास करके घर चली गयीं और बाकी बच्चियां हिफ़्ज के साथ–साथ असरी तालीम भी हासिल कर रही हैं। • **बिहार स्कूल इग्ज़ामिनेशन बोर्ड** : गुज़िश्ता कई सालों से लगातार मैट्रिक (Matric) बोर्ड के इम्तिहान में यतीम व गैर–यतीम तालिबात का तक़रीबन सद फीसद रिजल्ट रहता है। नोट – 1992 से मैट्रिक की तालिम शुरू ओर 1993 से 2009 तक 58 यतीम बच्चियों और 32 गैर–यतीम बच्चियों ने मैट्रिक का इम्तिहान पास किया और एक यतीम बच्ची ने बेगम तारा रशीद शेरवानी एवार्ड भी हासिल किया था। • हजरत खोद जतुल कोबरा वोकेशनल सेन्टर (Vocational Centre) • अगस्त 2003 से बाज़ाबता तरीक़ा पर इदारा में कटाई व सिलाई का सेन्टर चल रहा है। अब पेंटिंग मेंहदी और फूल–पत्ती मशीन से सिखाने का कोर्स भी शुरू होने वाला है। • कटाई व सिलाई 6 बैच 70 तालिबात और तीन बैच ज़री वर्क्स में 42 तालिबात का, सबको सरकारी सनद तक़सीम की जा चुकी है। • जल्द ही कंप्यूटर की तालीम शुरू •साल 2008 से इदारा में यतीम व गैर–यतीम तालिबात की इन्टरमेडिएट (ग्यारहवीं Class XI) की तालीम शुरू। • **तालीमी फंड बैतुल माल बराए–तालीम (Bait-ul-Mal for Education)** : नादार व ग़रीब बच्चियों को फ़िलहाल छोटे पैमाने पर मुफ़्त तालीम देने का भी नज़्म है। कफाला स्कीम (Kafla Scheme) के तहत एक यतीम बच्ची की तालीम व तर्बियत व खुर्दो नोश पर सलाना आठ हज़ार रूपये (Rs. 8,000) ख़र्च आता है। आप भी एक यतीम बच्ची की कफ़ालत का बार उठाकर कारेख़ैर मं शरीक हों। याद रखें, इदारा का कोई मुस्तक़िल आमदनी का ज़रिया नहीं है। आपकी तरफ से जो ज़कात व अतियात की रक़में मिला करती हैं वह सिर्फ "यतीम बच्चियों" पर ही ख़र्च की जाती है। अतियात या दूसरे मद की रक़मों से हम स्कूल वग़ैरह चला रहे हैं।

• रमज़ानुल मुबारक का महीना पहुंचते–पहुंचते इदारा माली मुश्किलों में घिर जाता है। हर साल सालाना अख़राजात की तकमील अहले ख़ैर और हमदर्द हजरात के क़र्जो–ही के ज़रिया पूरी की जाती है। इदारा के अज़ीम मंसूबों को पये तकमील तक पहुंचाने के लिए आपके तआबुन की सख़्त जरूरत है। तआवुन की मुख़्तालिफ़ शक्लें हैं मसलन • ज़कात • अतियात • सदक़ात • पैदावार की जक़ात • दीनी कुतुब • एक यतीम बच्ची का सलाना ख़र्च, • वालदैन या अपने और रिश्तेदारों के नाम कमरा और हॉल बनवाना, • कर्ज की अदायगी और ज़मीन की ख़रीदारी • स्टाफ की माहाना तनख्वाह के लिए (Rs. 65,000) रूपयें • तामीरी कामों के लिए, ईंट, सीमेन्ट, छड़ और दीगर सामान या उस की कीमत वग़ैरह।

याद रखें ! ज़कात अपके माल को पाक करती है। इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना तआवुन का मुन्तजिर है।

• नोट : स्कूल और हॉस्टल में दाख़िला जारी • नया तालीमी साल : माह अप्रैल से शुरू

चेक व ड्राफ़्ट पर केवल यह लिखें : "THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

बराए राबिता (ख़त, चेक व ड्राफ्ट और मनी आर्डर भेजने का पता)

General Secratary, THE GAYA MUSLIM GIRL'S ORPHANAGE

At : Kolowna, Po. - Cherki Distt. Gaya 824237 (Bihar) India

फोन : (0631) 2734437, मोबाइल : 9934480190

☎ CORE BANKING A/C No. 3100402010007752

Bank A/c No. 7752, Union Bank of Inida (Main Branch, GAYA)

इक़बाल अहमद ख़ान : *बानी–ए–इदारा व एज़ाज़ी जेनरल सेक्रेट्री*

email : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, website : www.gmgo.org

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जीवन मूल्य

■ डॉ॰ जालिन्दर इंगले
(अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कला एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, येवला, नासिक, महाराष्ट्र)

सदियों की पराधीनता के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत देश स्वतंत्र हुआ, परन्तु उसे अपना एक अविभाज्य अंग पाकिस्तांन गंवाना पड़ा । अंग्रेज़ों द्वारा भड़कायी गयी साम्प्रदायिकता की आग के कारण यह बंटवारा शान्तिपूर्ण ढंग से नहीं हो पाया । लुट-खसोट, मार-काट के वातावरण में लाखों मनुष्य अपना सब कुछ लुटाकर बेसहारा घुमने लगे । परिणामत: सामाजिक व्यवस्था निरंतर बिगड़ती गयी । नेताओं ने समाज के विकास की रूपरेखा तैयार की । स्वाधीनतापूर्व का समाज जहां सामंतों, राजाओं, नवाबों और अंग्रेज़ों तक सीमित था, वहीं स्वाधीनता के उपरांत भारत में सामूहिक रूप से उद्योग आदि को प्रधानता दी जाने लगी । शायद इस कारण समकालीन जीवन मूल्यों में परिवर्तन आता हुआ दिखायी देने लगा, ये जीवन मूल्य समकालीन साहित्य को प्रभावित करने लगे ।

जाति व्यवस्था भारतीय समाज की संरचना की आधारशिला रही है । हज़ारों वर्षों के कालचक्रों से गुज़रती हुई यह सामाजिक व्यवस्था भारत में आज भी विद्यमान है । इतिहास साक्षी है कि भारत में इस जाति व्यवस्था ने जहां एक ओर हिन्दू समाज एवं संस्कृति को स्थायित्व प्रदान किया है वहीं ऊंच-नीच का निर्धारण, वैवाहिक संबंध तथा कर्मकांड आदि इसी के परिणाम हैं । इसलिए जाति व्यवस्था जो कभी भारतीय समाज का आधार बनी थी, समकालीन परिवेश में एक समस्या होकर नितांत अवांछित तत्व हो गयी है ।

'मूल्य' यह शब्द बीसवीं शताब्दी में सर्वाधिक प्रचलित रहा है । वर्तमान युग के क्रान्तिकारी और परिवर्तनशील वैचारिक युग में 'मूल्य' शब्द अपने मूल व्यूत्पतिमूलक अर्थों में प्रयुक्त होकर एक विवादस्पद विषय बन चुका है । वास्तविक 'मूल्य' शब्द का अर्थ संस्कृत के 'मूल्यम्' के आधार पर क्रय के बदले धन या मुद्रा देना या किसी वस्तु का गुण या तत्व है । इस तरह समकालीन सन्दर्भ में 'मूल्य' उपयोगिता की कसौटी पर देखा जा रहा है कि, समाज का कोई भी पक्ष, तत्व या कार्य किसी सीमा तक समाज में उपयोगिता है, अत: यह उपयोगिता ही मूल्य है । यह आज के अर्थ-केन्द्रित युग के प्रभाव का ही परिणाम है कि दाम या क़ीमत की चर्चा दैनिक जीवन में बड़ा ही महत्वपूर्ण तथा अपरिहार्य स्थान प्राप्त कर चुकी है । अत: 'मूल्य' सामान्यत: आर्थिक अर्थ में ही अधिक प्रचलित शब्द है । इसके अतिरिक्त उपयोगिता एवं महत्व के अर्थ में भी 'मूल्य' का प्रचार देखा जाता है ।

मनुष्य जीवन को सम्यक और सुचारू रूप से परिचालित करने के उद्देश्य से अनेक विद्वानों ने जीवन के कुछ मापदंडों का निर्धारण किया और उन्हीं के आधार पर मूल्य की संकल्पना अस्तित्व में आयी । इस दृष्टि से मूल्य का अर्थ मानव-जीवन के संदर्भ में ही महत्व रखता है । मूल्य शब्द का आशय मूलत: जीवन-मूल्य अर्थात जीवन के मापदंड से ही होता है । मानव जीवन में मनुष्य मूल्यवान वस्तु की ही कामना करता है । जो चीज़ या कार्य समाजहित कारक या मंगलदायक समझी जाती है उसका स्थान मानव-जीवन में श्रेष्ठतर समझा जाता है । ऐसे उच्च माने जाने वाले काम मनुष्य करता रहता है । इसी सार्थकता प्राप्ति के लिए ज्यों-ज्यों भद्र कार्य मानव करता है वह उसके जीवन-मूल्य समझे जा सकते हैं ।

साहित्य में इन्हीं का चित्रण होता है । साहित्य में मूल्यगत मर्यादा के विकास की सहज प्रकृति सदैव ही स्वातंत्र्य और दायित्व के इस समन्वय को मान्यता प्रदान

करती है । यह न केवल बीसवीं सदी के वरन मध्यकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियों से भी प्रमाणित होता है । वैष्णव मानवतावादी चिंतन और साहित्य परम्परा में जहां एक ओर कलाकार में अपनी वैयक्तिकता के प्रति अगम्य आत्माभिमान था, वहीं एक विराट मूल्य–मर्यादा के महान दायित्व के प्रति आत्मसमर्पण भी था । काल और स्थान निरपेक्षता की दृष्टि से विचार किया जाए तो यह लक्षित होता है कि, साहित्य में मूल्य की आस्था होती है और साहित्यकार युग के मूल्यों को ही आधार बनाता है तथा कभी-कभी वह मूल्य-चेतना को गति भी प्रदान करता है । निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि साहित्य का प्रतिपाद्य विषय जीवन-मूल्य है जिसमें मानवीय मूल्य का विशेष महत्व है ।

भारतीय साहित्य परम्पराओं पर आधारित होते हुए भी उन परम्पराओं के प्रति, विद्रोह भी करता है । धार्मिक सुधारवादी संत, राजनैतिक नेता और समाजसेवी व्यक्तियों के द्वारा भी परम्परा का क्रान्तिकारी विरोध हुआ । परिणामस्वरूप समकालीन साहित्यकार भी अपनी रचना को इस प्रभाव से दूर नहीं रख सके । स्वाधीनता के बाद साहित्य के माध्यम से स्वतंत्र मूल्यों को बल देने में बहुत मदद मिल गयी थी । साहित्य सृजन समाज अभिव्यक्ति की मांग बन गयी थी । परम्परागत जीवन मूल्यों को कुछ अंशों में विरोध करके साहित्यकार समाज का यथार्थ दृश्य अपनी रचना में चित्रित करने में सफल हुआ । जीवन-मूल्य की परम्परागत अवधारणाओं के स्थान पर नयी संकल्पना ने जन्म लिया ।

सदियों से पराधीन भारत देश अब स्वाधीन हुआ है, परन्तु यह स्वाधीनता किसे और किस वर्ग को प्राप्त हुई ? यह प्रश्न समकालीन समाज में अनुत्तरित रहा । स्वाधीन भारत का बहुतांश समाज ज्यों सनातनी परम्परा का शिकार हुआ था, गांव के बाहर बस्ती बनाकर रहता था, जंगल में ही अपना जीवनयापन करता था । ज़मीनदारों की खेती पर निस्वार्थ रूप से मेहनत-मज़दूरी करना अपना कर्तव्य समझता था, केवल श्रम करने के लिए ही अपना जन्म है, यह मानता था, प्रस्थापितों के मुंह न लगना अर्थात अपनी वाणी बंद रखने में ही समझदारी मानता था, अन्याय-अत्याचारों का विरोध न करना, बहू-बेटियों की इज़्ज़त दिन-दहाड़े लुटती हुई देखता था । ऐसे समाज की मूक वाणी में शब्द भरने का महत्वपूर्ण कार्य समकालीन उपन्यासकारों ने किया । कतिपय उपन्यासों में डॉ॰ बाबा साहेब अम्बेडकर द्वारा प्रदत्त भारतीय संविधान के प्रावधानों का अनुकरण विवेच्य विषय बन गया । सदियों से अनेक अन्याय सहन करने वाले 'मुकनायक' को वाणी प्रदान करने का काम उपन्यासकार करने लगे । परिणामस्वरूप परम्परागत रूप से चले आये साहित्य के जीवन मूल्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की जगह समानता, स्वतंत्रता, न्याय तथा बंधुत्व ने ग्रहण की और यही समकालीन उपन्यासों के जीवन-मूल्य के रूप में आलोकित हुए ।

जाति व्यवस्था भारतीय समाज की संरचना की आधारशिला रही है । हज़ारों वर्षों के कालचक्रों से गुज़रती हुई यह सामाजिक व्यवस्था भारत में आज भी विद्यमान है । इतिहास साक्षी है कि भारत में इस जाति व्यवस्था ने जहां एक ओर हिन्दू समाज एवं संस्कृति को स्थायित्व प्रदान किया है वहीं ऊंच-नीच का निर्धारण, वैवाहिक संबंध तथा कर्मकांड आदि इसी के परिणाम हैं । इसलिए जाति व्यवस्था जो कभी भारतीय समाज का आधार बनी थी, समकालीन परिवेश में एक समस्या होकर नितांत अवांछित तत्व हो गयी है । आधुनिक शिक्षा, शहरीकरण, औद्योगीकरण, व्यक्तिवादिता तथा नवीनतम विचारधारा के विकास के कारण परम्परागत जाति व्यवस्था में परिवर्तन की प्रवृत्तियां तेज़ी से बढ़ने लगी हैं ।

मारूफ़
शू पैलेस
जी॰ई॰ रोड, बस स्टैंड, बी॰एम॰वाई॰
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस॰के॰ इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

भारत की जाति व्यवस्था समानता का विरोध करती है, परन्तु आधुनिक पीड़ित समाज जाति व्यवस्था का निरंतर विरोध कर रहा है। रामदरश मिश्र लिखित 'जल टूटता हुआ' में चमारिन युवती हंसिया जाति समानता की बात करती हुई कहती है कि, ''चमार का ख़ून, ख़ून नहीं है ? बामन का ही ख़ून, ख़ून है। हमारी कोई इज़्ज़त नहीं होती है क्या, बामनों की ही इज़्ज़त होती है ?'' हज़ारों वर्षों से प्रताड़ित और उपेक्षित निम्न जातियां अब समाज में अपने आत्मसम्मान को समझने लगी हैं, इसलिए उनमें भी संगठित होने की क्रिया देखी जाती है।

समाज में रहने वाले सभी समान होते हैं, कोई छोटा या बड़ा नहीं होना चाहिए, भारतीय संविधान के अनुसार सभी समान माने जाते हैं, इसलिए 'नदी के मोड' की डोम लड़की माला यह निश्चय करती है कि, ''अपनी जाति के हृदय से यह भावना निकाल दूंगी कि हम असहाय हैं, कमज़ोर हैं, हीन हैं।

सभी के समान आगे बढ़ सकते हैं।'' समकालीन उपन्यासकार गिरिराज किशोर ने भी समानता पर ज़ोर दिया है। बालेसर को कार्यालय के कर्मचारियों से प्रताड़ित किया जाता है। उसे पागल क़रार दिया जाता है, तब उसकी पत्नी कहती है, ''दुनिया में छोटी-बड़ी जात और छोटे-बड़े काम होते हैं, पर ऐसा नहीं होता की छोटों को जीने का हक़ ही न रहे।'' इससे स्पष्ट है कि वह समानता के साथ न्याय की भी मांग करती है। 'जस तस भई सवेर' के शिवदास पर चोरी का इल्ज़ाम लगाने पर भी बैंक अधिकारी कहता है, ''आज कल जात्-पात का ज़माना भी नहीं है।'' शायद इसी कारण से सामाजिक समानता की बात राम कुमार भ्रमर ने 'मोतिया' उपन्यास में स्पष्ट की है। राम आसरे नामक नेता झूठ-मूठ गांधीवादी बनकर कहता है, ''आप मेरी बेटी ला, मैं आपकी बेटी लूं। आप मेरे घर में खाएं, मैं आपके घर में खाऊं। सब बराबर।''

देश स्वाधीन होकर भी यह स्वाधीनता कुछ लोगों को ही प्राप्त हुई है। सत्य प्रकाश लिखित, 'जस तस भइ सवेर' का राजनेता भाषण में कहता है, ''हमें सबको साथ लेकर चलना है। तभी राष्ट्र का भला हो सकता है, समाज का भला हो सकता है।'' दलित समाज की अपनी सुरक्षा के लिए संविधान में ऐट्रॉसिटी एक्ट का प्रावधान है, उसका विरोध भी ये नेता करते हैं। परन्तु मंगल पहलवान की मान्यता है कि, ''हरिजन एक्ट का दुरुपयोग न हो, सभ्य जनों का चरित्र हनन नहीं होना चाहिए। बिल्कुल ठीक है परन्तु दलितों पर भी अत्याचार नहीं होना चाहिए।'' यहां अपने न्याय की बात उपन्यासकार करता है।

प्रसिद्ध उपन्यासकार यशपाल जी 'दादा कामरेड' में पूंजीपतियों द्वारा होने वाले आम समाज के शोषण के प्रति करारा आक्रोश व्यक्त करते हैं। उनके कुछ पात्र न्याय की मांग करते हुए समाज में समानता स्थापित होने की आशा व्यक्त करते हैं। वस्तुतः यह उपन्यास स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान प्रकाशित हुआ था। पराधीन भारत में भी समानता और न्याय की अपेक्षा लेखक करता है। 'दादा कामरेड' का हरीश कहता है, ''अब तक हमारी अधिकतर शक्ति डकैतियां करने और कुछ राजनीतिक हत्याएं करने में काम आयी हैं। परन्तु हमारा उद्देश्य तो है इस देश की जनता का शोषण समाप्त करके उनके लिए आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त करना।'' इसका आशय यह है कि, ''शोषण-मुक्त समाज की स्थापना करना लेखक का सपना है। समाज स्थित वर्गीय चेतना पर भी यशपाल ज़ोर देते हैं। शोषित चाहे किसी संस्था-दल के हों, वे हैं शोषित ही, उनमें वर्गीय चेतना पैदा करना वह बहुत आवश्यक समझते हैं। तभी सारे शोषित एकजुट हो सकेंगे। जब तक न्याय, बंधुत्व समाज में ज़ोर नहीं पकड़ती तब तक समाज शक्तिशाली नहीं बन सकता।'' समकालीन हिन्दी उपन्यासकारों में फणिश्वरनाथ रेणू का नाम बड़े आदरतापूर्वक लिया जाता है।

जयप्रकाश कर्दम, सत्य प्रकाश, मैत्रेयी पुष्पा, प्रेम कपाडिया, गिरिराज किशोर, शैलेश मटियानी, रामदरश मिश्र, जगदीश चन्द्र आदि महानुभावों ने अपने उपन्यासों में प्रस्थापित जीवन मूल्यों के स्थान पर मनुष्य को जीवित रहने के लिए आवश्यक अंगों पर ही प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने उपन्यासों में जीवन संघर्ष पर ही अधिक बल दिया है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष–सं॰ डॉ॰ रामदरश मिश्र।
2. हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य–डॉ॰ रमेशचन्द्र लवानिया।
3. समकालीन हिन्दी उपन्यास : वर्ग एवं वर्ण संघर्ष–डॉ॰ जालिंदर इंगले।
4. हिन्दी उपन्यास और जीवन-मूल्य–डॉ॰ मोहिनी शर्मा।
5. दलित साहित्य (वार्षिकी-1999,2000,2001)–सं॰ जयप्रकाश कर्दम।
6. फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में वर्ण संघर्ष-वर्ग संघर्ष–डॉ॰ अशोक धुलधुले।

कर्म, पुनर्जीवन और इस्लाम

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मीडिया के विभिन्न माध्यमों में आए दिन इस आशय की चीज़ें आती रहती हैं कि अमुक लड़का-लड़की अर्थात् विभिन्न आयु-वर्ग के स्त्री-पुरुष अपने पूर्व जन्म की घटनाओं व वृत्तांतों से परिचित हैं । एक टी॰वी॰ चैनेल ने भावी परिणामों की अनदेखी करते हुए व्यावसायिकता में पगकर पूर्व जन्म और मृत्योपरान्त जन्म तक के बारे में जानकारी का दावा करके अपने व्यूअर्स की संख्या बढ़ाने में लगा रहा । यह दावा भी किया जाता है कि अमुक व्यक्ति अमुक व्यक्तित्व का 'पुनर्जन्म' है और इस आधार पर ऐसा भी हुआ है कि संपत्ति में हिस्सा मांगा गया । यह 'आयोजन' स्वप्रचार का माध्यम भी बनता रहा है, लेकिन यह अवधारणा जीवनोत्थान में गतिरोध और समस्याएं पैदा करती रही हैं । यह भी प्रचारित किया जाता है कि अमुक व्यक्ति की दुरावस्था उसके पूर्वजन्म का फल है, अत: उसे इसे भोगना चाहिए ।

वेदों में जन्म-जन्मान्तरवाद और आवागमनीय पुनर्जन्म का उल्लेख नहीं मिलता । इस अवधारणा का प्रवेश हिन्दू धर्म-दर्शन में परवर्ती युग में हुआ है । महापंडित राहुल सांकृत्यायन इसके औचित्य पर सवालिया निशान लगाते हैं और लिखते हैं कि इसका अस्तित्व सामाजिक अत्याचार पर पर्दा डालने के लिए है ।..."इसी लोक में आकर फिर जनमना (पुनर्जन्म) तो पीड़ित वर्ग के लिए और भी ख़तरनाक चीज़ है । इसमें यही नहीं है कि आज के दुखों को भूल जाओ, बल्कि साथ ही यह भी बतलाया गया है कि यहां की सामाजिक विषमताएं न्याच्य हैं, क्योंकि तुम्हारी ही पिछले जन्म की 'तपस्याओं' (दुखों, अत्याचारपूर्ण वेदनाओं) के कारण संसार ऐसा बना है । इस विषमता के बिना तुम अपने आज के कष्टों का परितोषिक नहीं पा सकते" ('दर्शन-दिग्दर्शन', किताब महल, संस्करण 1992, ई॰, पृ॰ 403)।

ख्यातिलब्ध संत स्वामी पद्मन जी और स्वामी महेश्वरानन्द ने 84 लाख योनियों में कर्माधार पर परिभ्रमण को मिथ्या ठहराया है और लिखा है कि इसका कोई तार्किक उत्तर नहीं है । सुख्यात चिन्तक डॉ॰ एम॰ एन॰ राय का विचार है कि "पुनर्जन्म का सिद्धांत समाज में नियतिवाद को जन्म देता है और इन्सान को निष्क्रिय एवं पौरुषहीन बना देता है" (Indian Message, पृ॰ 14, 151)। पं॰ मंगलदेव (तड़ित्कान्त) वेदालंकार ने 'यम और पितर' नामक अपनी पुस्तक में प्रचलित पुनर्जन्म की मान्यता का खंडन किया है । अन्य विद्वानों (डॉ॰ राधाकृष्णन, सत्यकाम विद्यालंकार आदि) ने जब भी इस अवधारणा को बुद्धि और विवेक की कसौटी पर परखा, तो इसे खरा नहीं पाया । पुनर्जन्म का दावा करने वाले अनेक मामलों की गहरी पड़ताल करने वाले अमेरिका के वरिष्ठ अध्येता डॉ॰ आईन स्टीवेंसन (वर्जीनिया विश्वविद्यालय) ने 'Children who remember privious lives' नामक जो मशहूर पुस्तक लिखी, उसमें वे किसी ऐसे निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकें कि अमुक केस तर्क, बुद्धि और विवेक की कसौटी पर खरा उतरा है और इससे आत्मा और आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता पुष्ट हुई है ।

इसी प्रकार अमेरिका के एक वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'स्पिरिट्स स्टार्स एंड स्पैल्स' में अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत करके पुनर्जन्म को छल और धोखा सिद्ध किया है (पृ॰ 246-249)। प्रिंगिल पैटिसन (1922 ई॰) नामक विद्वान ने स्पष्ट किया है कि पूर्वजन्म की स्मृति होती ही नहीं है । ऐसा ही मत कैनन स्ट्रीटर, लिली डूगल आदि अध्येताओं ने प्रकट किया है ।

जब इसे परखा गया

हमारे देश भारत में अब तक कई विद्वानों ने इस विषय पर बौद्धिक रूप से कुछ कथित पुनर्जन्मित कथा के सहारे अध्ययन किया है । राय बहादुर श्याम सुन्दरलाल, के॰के॰एन॰ सहाय, ताराचंद माथुर, डॉ॰ एम॰सी॰ बोस, लाला देशबन्धु गुप्त, प्रो॰ आज्ञेय, डॉ॰ केदार, डॉ॰ कीर्ति स्वरूप रावत, डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा, पं॰ नेकी राम शर्मा आदि विद्वानों ने इस विषय पर लेखनी चलायी है, लेकिन इनके विवेचनों से जो प्रश्न खड़े होते हैं, वे स्वयं इन्हें बुद्धि-विवेक की कसौटी से परे कर देते हैं ।

आत्मा और आवागमनीय पुनर्जन्म की यह मान्यता इस्लाम, ईसाई, बौद्ध और दूसरे अन्य धर्मों व मतों में नहीं पायी जाती है । यह हिन्दू धर्म और कुछ मतों की मान्यता है, जिसके प्रति जनमानस को 'विवश' करने की कोशिश लंबे समय से की जाती रही है । यहां यह तथ्य भी नहीं भूलना चाहिए कि इसके लिए 'कणयल व विवश' करने की जितनी भी कोशिशें की गयीं, सबमें असफलता ही सामने आयी । इस मान्यता की वैज्ञानिक सत्यता को जांचने अर्थात् पुष्ट करने के लिए 1965 ई॰ के आसपास राजस्थान विश्वविद्यालय में परामनोविज्ञान विभाग खोला गया । वरिष्ठ परामनोवैज्ञानिक डॉ॰ एच॰एन॰ बनर्जी इसके अध्यक्ष बनाए गये थे ।

डॉ॰ बनर्जी बड़े प्रतिभावान और सत्याधारित अनुसंधान के प्रबल पक्षधर थे । उन्होंने सौ से अधिक 'पुनर्जन्मित' कहे जाने वाले उन केसों को जांच-पड़ताल के लिए अपने हाथ में लिया, जिसका उल्लेख परामनोविज्ञानी अपनी पुस्तकों में बार-बार कर रहे थे । अनुसंधान के लिए उन्होंने टीमें बना दीं । इन टीमों ने On the Spot (घटना स्थल पर) जाकर अनुसंधान कार्य पूर्ण किया । कई स्थानों पर डॉ॰ बनर्जी खुद गये । उदाहरणार्थ, डॉ॰ बनर्जी एक बड़ी टीम के साथ तुर्की गये । इस टीम में वरिष्ठ डॉक्टर और मनोवैज्ञानिक भी शामिल थे । बड़ी तैयारी के साथ यह टीम तुर्की रवाना हुई थी । वहां के अडाना ज़िले में 1956 में इस्माईल के कथित पुनर्जन्म की घटना को पुनर्जन्म के पक्ष में ख़ूब प्रचारित किया जा रहा था । कुछ लोग इसे सबसे मज़बूत केस मानते थे । जिस गांव का इस्माईल के निवासी होने की बात कही जा रही थी, डॉ॰ बनर्जी को न तो वह गांव ही मिल सका, न ही इस्माईल से भेंट हो सकी, जबकि घटना कुछ ही वर्ष पहले की बतायी जा रही थी ।

डॉ॰ बनर्जी ने काफ़ी प्रयास किया, पर असफलता ही हाथ लगी । उन्होंने इस घटना का उल्लेख विस्तार के साथ अपने शोध-कार्य में किया है । अब आइए, यह भी जान लें कि पुनर्जन्म के जिन सौ से अधिक केसों की उन्होंने जांच-पड़ताल करायी, उनका निष्कर्ष क्या रहा ? पूरा आवागमनीय पुनर्जन्म खंड-खंड हो गया । एक भी केस सही नहीं पाया गया । डॉ॰ बनर्जी की कुछ पक्षों द्वारा कड़ी आलोचना की जाने लगी, उन्हें पद से हटा दिया गया और 1968 में रहस्यमय ढंग से उनके विभाग को बन्द कर दिया गया । स्पष्ट है, सत्य के रक्षार्थ उन्होंने बड़ी क़ुरबानी दी, मिथ्या के समक्ष झुके नहीं । सचमुच बधाई और शुभ कामनाओं के अधिकारी हैं डॉ॰ बनर्जी ।

वैज्ञानिकता का अभाव

पुनर्जन्म के मामलों की पुष्टि अभी तक संभव नहीं हो सकी है । इसका वैज्ञानिक आधार अप्राप्य है । इसका एकमात्र कारण पुनर्जन्म का न होना है । 7 अक्तूबर 1968 को प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, "मनोविज्ञान के विशेषज्ञों (Psychologists) ने कुछ केसों की जांच-पड़ताल करने के बाद यह मत प्रकट किया कि कुछ लोग जो अपने पूर्व जन्म की बातें बयान करते हैं, वे अधिकतर मानसिक हिस्टीरिया (Psychic Hysteria) रोग से ग्रसित होते हैं और बातें इसी का परिणाम होती है । जयपुर के मानसिक चिकित्सालय के डॉ॰ बी॰के॰ व्यास और एक अन्य विशेषज्ञ श्री रत्न सिंह का दावा है कि उन्होंने कुछ केसों का इलाज किया है, जिसमें उन्हें सफलता मिली है । डॉ॰ व्यास ने यूनाइटेड न्यूज़ ऑफ़ इंडिया को साक्षात्कार देते हुए कहा कि जो लोग पूर्वजन्म की घटनाएं बयान करते हैं, उनकी मानसिक स्थिति साधारणतया संतुलित नहीं होती । ये अधिकतर व्यक्तिगत समस्याओं के केस होते हैं । ये लोग मानसिक असन्तुलन के कारण कुछ और बनने के इच्छुक रहते हैं । इस प्रकार मनगढ़ंत क़िस्से बयान करने से कुछ दूसरे लाभ प्राप्त हो जाते हैं ।"

(हिन्दुस्तान टाइम्स, नयी दिल्ली)

डॉ॰ व्यास ने अपने पक्ष-समर्थन के लिए कुछ केसों के विवरण भी दिये ।

देश में पुनर्जन्म का दावा करने वाली जो भी घटनाएं

सामने आयी हैं; उनके पात्र या तो मानसिक रोग से ग्रसित रहे या किसी लाभ के निमित्त मनगढ़ंत क़िस्सा बनाया गया या काल्पनिक रूप से लिख दिया गया कि पुनर्जन्म की घटना अमुक स्थान पर घटी । ऐसी एक घटना का उल्लेख करते हुए डॉ॰ एल॰पी॰ मेहरोत्रा लिखते हैं–यह घटना एक ऐसे बालक से संबंधित है, जिसकी बहन को पूर्वजन्म की स्मृतियां थी और जिससे उसको अपनी बहन से डाह हो गयी और वह अपने को महात्मा गांधी का मृतात्मा बताने लगा । इस बालक ने गांधी की जीवनी के विषय में एक पुस्तक में पढ़ा था और उसी का सहारा लेकर उनके विषय में बताने लगा । जब लोगों को यह पता चला कि गांधी जी का पुनर्जन्म हो गया है, तो लोग बड़ी संख्या में उससे मिलने पहुंचने लगे । कांग्रेस के बड़े-बड़े नेता भी वहां गये यहां तक कि सुशीला नय्यर भी गयीं । इस सबसे उस बालक को बड़ी शोहरत मिली, पर अन्त में उसकी पोल खुल गयी और उसका झूठ सामने आ गया ।

न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय

आत्मा के पुनर्जन्म और जन्म-जन्मान्तरवाद पर प्रतिष्ठित लेखिका सोमा सबलोक ने 1978 में 'आत्मा और पुनर्जन्म' पर एक आलेख लिखा, जिसमें उन्होंने आवागमनीय पुनर्जन्म की वैधता को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर परखकर रद्द कर दिया था । लेखिका ने आलेख में यह भी लिखा कि "पूर्वजन्म का सिद्धांत अकर्मण्यता पैदा करने वाली एक मनगढ़ंत बात है । वास्तव में पूर्वजन्म के कर्मों के फल का सिद्धांत धनिक वर्ग के लोगों और धर्म के ठेकेदारों के उन पिट्ठुओं के द्वारा बनाया गया है, जो ग़रीब भोली-भाली जनता को लूटना चाहते थे और उन्हें उनकी ग़रीबी में ही संतुष्ट रखना चाहते थे" (पृ॰ 12)।

याचिकाकर्ता ने दिल्ली की तीस हज़ारी अदालत में यह कहा था कि उक्त आलेख धर्म-विशेष की आस्था पर प्रहार करता है और जनभावनाओं को आहत करता है । न्यायालय ने इस मामले के विभिन्न पहलुओं का जायज़ा लेकर 2 दिसम्बर 1983 को इसे ख़ारिज करते हुए अपने फ़ैसले में कहा कि "विज्ञान के इस युग में आत्मा के अस्तित्व और पुनर्जन्म के सिद्धांत पर शंका और आपत्ति करने का प्रत्येक का अधिकार है, क्योंकि ऐसा करना वैज्ञानिक और सुधारवादी विचारधारा पैदा करने की दिशा में आगे क़दम बढ़ाना है, जिसके लिए भारतीय संविधान की धारा 51 (अ) में निर्देश दिया गया है ।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर लेखिका ने इस लेख के द्वारा पाठकों को ज्ञानवान बनाने का प्रयास किया है । यह बात बड़े दुख के साथ कहनी पड़ रहीं है कि ऐसा प्रयास करने पर लेखिका पर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का दोष लगाया गया है और उसे कई वर्षों तक मुक़द्दमे का सामना करने का कष्ट झेलना पड़ा । यह लेख सच्चाई को खोजने की दिशा में एक यत्न है और यह नहीं कहा जा सकता कि इसे लिखकर हिन्दुओं की धार्मिक भावना को जान-बूझकर ठेस पहुंचाने का काम किया गया है । ईसाई, इस्लाम, बौद्ध और दूसरे अनेक धार्मिक मत हैं जो आत्मा और पुनर्जन्म (जन्म- जन्मान्तरवाद) के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते । लेखिका ने जान-बूझकर किसी भी तरह हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचायी है और न ही कोई अपराध किया है । उसने आत्मा के अस्तित्व और पुनर्जन्म के सिद्धांत को चुनौती देते हुए अपने पक्ष में ठोस दलीलें उपस्थित की हैं । उसने ठीक ही कहा है कि सत्य किसी की व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है । फिर हिन्दू धर्म या क़ानून में कहीं पर घोषित नहीं किया गया है कि आत्मा और पुनर्जन्म में विश्वास करना हिन्दुओं के लिए अनिवार्य है । सत्य सबकी साझी संपत्ति है" (पैरा 10)।

कुछ सहज प्रश्न

अत: जन्म-जन्मान्तरवाद और आवागमनीय पुनर्जन्म के पक्ष में कोई वैज्ञानिक, बौद्धिक और व्यावहारिक तथ्य नहीं प्राप्त होते हैं । इसके विपरीत सहज रूप से कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं–

- इन्सान के सुकर्मों-दुष्कर्मों पर पुरस्कार और दंड प्रकृति की मांग है, जिसकी पूर्ति किसी जीव-जन्तु में रूपान्तरित होने से असंभव है । फिर इस प्रचलित मान्यता में यह पता नहीं चलता कि वह किस सुकर्म-दुष्कर्म का फल भोग रहा है । इसलिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि इन्सान को पुनर्जीवन प्राप्त हो, जो आवागमन से मुक्त हो, बल्कि उसके कर्मों का उसकी जानकारी व बोध में उचित फल मिले । इस्लाम की पारलौकिक धारणा में इसका प्रावधान है ।
- सच्चे न्याय के लिए पार- लौकिक जीवन अनिवार्य है ।
- आवागमनीय पुनर्जन्म की मान्यता के अनुसार पशु,

पक्षी, वनस्पतियां आदि पाप कर्म का परिणाम हैं । तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि मानव जीवन के लिए लाभकारी इन चीज़ों को बढ़ाने के लिए पाप-कर्म ख़ूब किये जाएं ।

● इन्सान के कर्मों के प्रभाव उसकी मृत्यु के बाद भी पड़ते हैं । अत: बुद्धि-विवेक को अपेक्षित है कि उसके अच्छे-बुरे कर्मों के भावी पीढ़ियों पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन हो, फिर उसे दंडित किया जाए । इसके अभाव में समुचित दंड या पुरस्कार इस लोक में संभव नहीं है ।

● यह स्वाभाविक तथ्य है कि जब व्यक्ति यह समझता है कि वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों की सज़ा भुगतने के लिए पैदा किया गया है, तो सहज रूप से मनुष्यत्व प्रभावित होगा । उसमें आत्मसम्मान, स्वाभिमान और पुरुषार्थ की भावना नहीं पैदा होगी, बल्कि वह ग्लानि, क्षोभ, कुंठा और प्रायश्चित व हीन भावना से ग्रस्त जीवन गुज़ारेगा । उसकी उन्नति प्रभावित होगी ।

● लोगों का अहंकार बढ़ेगा । सम्पन्न लोग विपन्न और निर्धन जनों के साथ उपेक्षा पूर्ण व्यवहार और निम्न-भाव से पेश आएंगे और इस प्रकार मानवता ऊंच-नीच, छूत-छात में विखंडित होगी।

पुनर्जीवन की इस्लामी धारणा

इस्लाम सम्पूर्ण जीवन-व्यवस्था है। इसकी शिक्षाएं इन्सान के लिए सर्वथा कल्याणकारी और मोक्षदायिनी हैं । यह खुली हुई सच्चाई और वास्तविकता है कि इन्सान को इस लोक में अपने अच्छे-बुरे कर्मों का पूरा-पूरा पुरस्कार एवं दंड नहीं मिल सकता । इसके लिए परलोक का होना अनिवार्य है । विश्व के सभी बड़े धर्मों में परलोक की धारणा पायी जाती है । इस्लाम की शब्दावली में पारलौकिक जीवन को 'आख़िरत' कहते हैं ।

इस्लाम की यह धारणा है कि मनुष्य का यह जीवन उसकी परीक्षा की घड़ी है । यह नश्वर जगत है, जिसका एक दिन विनाश होना निश्चित है। शाश्वत जीवन तो 'आख़िरत' (परलोक का जीवन) है । मनुष्य का यह जीवन

Abdul Malik
नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: 9845311911
"हर क़र्ज़ सदक़ा है ।" (हदीस)
UNIQUE CREATIONS
Spl. in Unipole & Structure Hoarding
#4, Bldg NO. 29/35, 1st Main Road,
Opp. Masjid-e-Husna, SRK Garden,
Jayanagar East, Bangalore-560041
E-mail : uniquecreations2008@gmail.com

शाश्वत जीवन के लिए तैयारी का अवसर जुटाता है । यदि मनुष्य अपने जीवन को ईश्वरीय आदेशों के अनुरूप बनाता है, एकेश्वरवाद, ईशदूतत्व, पारलौकिक जीवन आदि मौलिक धारणाओं को स्वीकार करता है एवं सत्कर्मों में लगा रहकर जीवन व्यतीत करता है, तो उसके लिए अच्छा बदला है और वह जन्नत (स्वर्ग) का पात्र होगा । वहां उसे वास्तविक जीवन, सुख-शान्ति और अमरता प्राप्त होगी । वह इस लोक का अत्यंत विकसित रूप होगा, वहां कोई अल्पता और कमी न होगी । सत्कर्मी इसमें सदैव रहेगा । इसके विपरीत मिथ्याचार में लगे दुष्कर्मी को जहन्नम (नरक) की दहकती आग में डाल दिया जाएगा, जिसमें वह सदैव जलेगा । दुष्कर्मी विभिन्न यातनाओं से भी दो-चार होगा ।

इस्लाम पुनर्जन्म नहीं पुनरुज्जीवन (हश्र–Resurrection) को मान्यता देता है । वह मनुष्य के बार-बार जन्म लेने को नहीं मानता, वह मानव-आत्मा के जीव-जन्तु, वनस्पति आदि में परिभ्रमण के विचार को पूर्णतः निरस्त करता है, उसके अनुसार सारे मनुष्य जो मानव जीवन के आरंभ से लेकर क़ियामत (महाप्रलय) के आने के पूर्व तक के होंगे, सभी दोबारा पैदा किये जाएंगे और अल्लाह उनसे उनके कर्मों का हिसाब लेगा एवं कर्मानुसार पुरस्कार या दंड देगा ।

''क़ियामत के दिन दर्जे की दृष्टि से सबसे बुरा आदमी वह है, जिसने अपनी आख़िरत को दूसरों की दुनिया के पीछे नष्ट कर दिया'' (हदीस : इब्न माजा)।

क़ियामत (महाप्रलय) का आना यक़ीनी है (क़ुरआन, 15:85)। इस दिन अल्लाह सबको इकट्ठा करेगा (क़ुरआन, 15:25)। ''...और (उस समय परलोक में) कर्म-पत्र सामने रख दिया जाएगा । उस समय तुम देख लोगे कि अपराधी लोग अपनी ज़िन्दगी की किताब में अंकित बातों से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि, ''हाय हमारा दुर्भाग्य! यह कैसी किताब है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी हरकत ऐसी नहीं रही जो इसमें अंकित न हो गयी हो ।'' जो-जो उन्होंने किया था वह सब अपने सामने मौजूद पाएंगे, और तुम्हारा रब किसी पर तनिक ज़ुल्म न करेगा। (क़ुरआन, 18:49) ''चिन्ता उस दिन की होनी चाहिए जबकि हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को बिल्कुल नंगी पाओगे, और हम सारे इन्सानों को इस तरह घेरकर इकट्ठा करेंगे कि (अगलों-पिछलों में से) एक भी न छूटेगा । और सबके सब तुम्हारे रब के सामने पंक्तियों में पेश किए जाएंगे–लो देख लो ! आ गये ना तुम हमारे पास उसी प्रकार जैसा हमने तुमको पहली बार पैदा किया था ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने क़ियामत के ये लक्षण बताए हैं : ज्ञान उठा लिया जाएगा, अज्ञान अधिक होगा, व्यभिचार की अधिकता होगी, शराब बहुत पी जाने लगेगी । पुरुष कम स्त्रियां अधिक हो जाएंगी यहां तक कि पचास स्त्रियों का सिरधारा एक (पुरुष) होगा (बुख़ारी, मुस्लिम, अहमद, तिरमिज़ी)।

जब सूर (नरसिंघा) में फूंक मारी जाएगी, तो सब अपनी क़ब्रों से निकलकर अपने पालनहार की ओर चल पड़ेंगे (क़ुरआन, 36: 51,70:43)।

क़ियामत के दिन आकाश फट जाएगा, तारे झड़ जाएंगे, सूर्य लपेट दिया जाएगा, पर्वत धुने हुए ऊन की तरह हो जाएंगे, धरती कूट-कूटकर चूर्ण-विचूर्ण कर समतल कर दी जाएगी और जो कुछ उसमें भीतर है उसे बाहर डालकर ख़ाली हो जाएगी । मुर्दे क़ब्रों से उठाए जाएंगे और दिलों के भेद प्रकट हो जाएंगे । जिस दिन लोग बिखरे हुए पतंगों के सदृश्य हो जाएंगे । (क़ुरआन, 82:1, 84:1, 82:2, 81:1, 89:21, 84:4, 100:9,10, 101:4)।

पुनरुज्जीवन के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का पूरा-पूरा फल पाएगा। क़ुरआन में है–

''फिर जब 'सूर' में फूंक मारी जाएगी तो उस दिन उनके बीच रिश्ते-नाते शेष न रहेंगे और न वे एक-दूसरे को पूछेंगे । फिर जिनके अच्छे कर्म भारी हुए, तो वही हैं जो सफल होंगे । रहे वे लोग जिनके अच्छे कर्म हल्के हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला । वे सदैव जहन्नम (नरक) में होंगे । आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और उसमें उनके मुंह विकृत हो रहे होंगे ।''

(क़ुरआन, 23:101-104)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

''मरने वाले के साथ तीन चीज़ें चलती हैं : उसके घर वाले, उसका माल और उसका कर्म । फिर दो चीज़ें तो पलट आती हैं और एक साथ रह जाती है । उसके घर वाले और माल तो वापस आ जाते हैं और उसका कर्म साथ रह जाता है'' (बुख़ारी, मुस्लिम)।

क़ुरआन में है–''आख़िरकार प्रत्येक व्यक्ति को मरना है और तुम सब अपना पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन पाने

वाले हो । कामयाब वास्तव में वह है, जो वहां जहन्नम की आग से बच जाए और जन्नत में पहुंचा दिया जाए । रहा यह संसार, तो यह केवल बाह्य धोखे की चीज़ है (क़ुरआन, 3:185)।

उस दिन हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और किसी के साथ अन्याय न होगा । (क़ुरआन, 3:25)

उस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने भले कर्म को सामने मौजूद पाएगा और बुरे को भी । जो कुछ उसने कमाया होगा, पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनके साथ कोई अन्याय न होगा (3:25)। उस दिन उसके न माल काम आएगा और न संतान (26:88)। ख़ुद इन्सान के हाथ, पैर, आंख, जिह्वा और सारे अंग गवाही देंगे कि उनसे उसने किस प्रकार काम लिया । (36:65, 41:20-24)

अल्लाह कहता है–

"और क़ियामत के दिन हम न्याय-तुला रखेंगे, फिर किसी व्यक्ति पर तनिक ज़ुल्म न किया जाएगा, यद्यपि वह (कर्म) राई के दाने ही के बराबर हो, हम उसे ला उपस्थित करेंगे । और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं ।"

(क़ुरआन, 21:47)

वह दिन सत्कर्मी के लिए सुगम और दुष्कर्मी के लिए कठिन होगा । क़ुरआन में है–

"जो कोई सुचरित लेकर आया उसको उससे भी अच्छा प्राप्त होगा, और ऐसे लोग घबराहट से उस दिन निश्चिन्त होंगे । और जो कुचरित लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुंह आग में औंधे होंगे ।" (क़ुरआन, 27:89,90)

कोई शब्द उसके मुख से नहीं निकलता जिसे सुरक्षित करने के लिए एक उपस्थित रहने वाला निरीक्षक (फ़रिश्ता) मौजूद न हो (50:18)। वह (अल्लाह) छिपे और खुले हर चीज़ को जानता है ।...तुममें से कोई व्यक्ति चाहे ज़ोर से बात करे या धीरे से, और कोई रात के अंधेरे में छिपा हुआ हो या दिन के उजाले में चल रहा हो, उसके लिए सब समान है (क़ुरआन, 13:9,10)।

"फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया, उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश पलटेगा । और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएं हाथ में) दिया गया, जिसको (उसने) पीठ पीछे डाल रखा था, तो वह विनाश को पुकारेगा और दहकती आग में जा पड़ेगा।" (क़ुरआन, 84:7-12)

"वास्तव में घाटे में पड़ने वाले तो वही हैं, जिन्होंने अपने आपको और अपने लोगों को क़ियामत के दिन घाटे में डाल दिया । जान रखो, यही खुला घाटा है ।"

(क़ुरआन, 39:15)

जन्नत (स्वर्ग)

जन्नत के पात्र वही व्यक्ति होंगे, जिन्होंने जीवन भर अल्लाह की बन्दगी करते हुए अच्छे कार्य किये होंगे । अल्लाह का यह वादा है–"वे लोग जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किये, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहां वे सदैव रहेंगे । अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है ?"

(क़ुरआन, 4:122)

जो लोग ईमान लाए अर्थात् मुस्लिम हुए और अच्छे कर्म किये, तो उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है (क़ुरआन, 95:6)। उसे कोई नहीं जानता जो आंखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी गयी है उसके बदले में देने के ध्येय से जो सुकर्म वे करते रहे होंगे (क़ुरआन, 32:17)। ईमानधारियों और सुकर्मियों को उनका रब (पालनहार) मार्गदर्शन करेगा (10:9)। अल्लाह उनसे राज़ी होगा और वे अल्लाह से राज़ी होंगे (98:8, 5:119)। उन्हें अल्लाह का दीदार (दर्शन) भी होगा ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का कथन है–

क़ियामत के दिन बन्दा एक क़दम भी आगे न बढ़ सकेगा, जब तक कि उससे पांच बातों का जवाब न ले लिया जाए–अपनी आयु किस प्रकार व्यतीत की, अपनी जवानी किस तरह बिताई, माल कहां से कमाया ? माल कहां ख़र्च किया ? और जो सद्ज्ञान उसने अर्जित किया उस पर कितना अमल किया ? (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में इस तरह है–

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत (उल्लिखित) है कि नबी (सल्ल०) ने कहा कि जबकि जन्नत वाले जन्नत की नेमतों में होंगे, सहसा उनके लिए एक नूर रौशन होगा सो वे अपने सिर उठाएंगे तो क्या देखेंगे कि उनका रब (पालनकर्ता प्रभु) उनके ऊपर प्रगट है । अल्लाह कहेगा : 'तुम पर

सलाम हो, ऐ जन्नत वालो!' नबी (सल्ल०) ने कहा कि यही अल्लाह तआला के इस कथन का अर्थ होता है–'सलाम है, दयामय रब का उच्चारित किया हुआ' (कुरआन, 36:58)। आप (सल्ल०) ने कहा कि अल्लाह तआला उनकी तरफ़ देखेगा और वे उसकी तरफ़ देखेंगे । फिर वे जब तक अल्लाह की तरफ़ देखते रहेंगे, जन्नत की किसी नेमत की ओर ध्यान नहीं देंगे, यहां तक कि अल्लाह उनसे परदे में हो जाएगा और बाक़ी रह जाएगा उसका नूर ।

(इब्न माजा)

पवित्र कुरआन में जन्नत का चित्रण है–

अल्लाह के परायण और उससे डर रखने वाले सुगन्धित फूल और नेमत भरे उद्यान में होंगे, उनके लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे (56:89, 18:107)। उनके लिए ऊपरी मंज़िल पर कक्ष होंगे, जिनके ऊपर भी निर्मित कक्ष होंगे । उनके नीचे नहरें बह रही होंगी (कुरआन, 39:20, 29:58)। वे जो चाहेंगे मिलेगा, उसमें वे सदैव रहेंगे (कुरआन, 25:16)। उन्हें वास्तविक शांति और निश्चिन्तता प्राप्त होगी (कुरआन, 44:51)। वे बाग़ों और स्रोतों में बारीक और गाढ़े रेशम के वस्त्र पहने हुए एक-दूसरे के आमने-सामने उपस्थित होंगे (कुरआन, 44:51-53)। उनके लिए सुख वैभव की चीज़ें होंगी । वे और उनकी पत्नियां छायों में मसहरियों पर तकिया लगाएं बैठे होंगे (कुरआन, 36:55, 56)। उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जाएगा (कुरआन, 35:33, 76:21)। उनके लिए सोने और चांदी के बरतन होंगे (कुरआन, 43:71, 76:15,16)। अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए वह कुछ जुटा रखा है, जिसको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के मन में उसका विचार आया ।

जन्नत में न तो सख़्त धुप होगी और न सख़्त ठंड (कुरआन, 76:13)। फलों से लदे हुए पेड़ होंगे, अंगूर के बाग़ होंगे, मनचाहे मेवे होंगे (कुरआन, 76:13,14, 78:32, 77:42)। साफ़, गोरी, बड़ी नेत्रों वाली स्त्रियों से उनका विवाह होगा (कुरआन, 44:54)। उनके पास निगाहें बचाए रखने वाली, सुन्दर आंखों वाली स्त्रियां होंगी (कुरआन, 37:48, 49)। उनके लिए हरे रेशमी गद्दे और उत्कृष्ट एवं असाधारण क़ालीन होंगे, क़ालीनें हर ओर बिछी होंगी (कुरआन, 55:76, 88:16)। उन्हें वहां इच्छित मेवे और पेय मिलेंगे, उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिल्कुल साफ़ उज्ज्वल, पीने वालों के लिए सुस्वादु, छलकता जाम होगा, उसमें न कोई ख़ुमार होगा और न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे (कुरआन, 38:51, 37:45-47)। उन्हें मुहरबंद विशुद्ध पेय पिलाया जाएगा, जिसमें 'तसनीम' का मिश्रण होगा (कुरआन, 83:25,27)। जन्नत में ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित नहीं होगा । ऐसे दूध की नहरें होंगी जिनके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा और ऐसे पेय की नहरें होंगी जो पीने वालों के लिए मज़ा ही मज़ा होंगी और साफ़-सुथरे शहद की नहरें होंगी (कुरआन, 47:15)।

जन्नत वालों के चेहरे प्रफुल्लित और सौम्य होंगे । उनसे नेमतों की ताज़गी और आभा का बोध हो रहा होगा (कुरआन, 88:8, 83:24)। वे कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे, और न कोई झुठलाने की बात (कुरआन, 78:35, 88:11)। वे भली प्रकार सदैव स्वस्थ और सानन्द होंगे । हदीस में है–

"यहां वह स्वास्थ्य है कि बीमार न पड़ोगे, वह जीवन है कि मृत्यु न आएगी, वह जवानी है कि वृद्ध न होंगे, और वह आराम है कि फिर तकलीफ़ न पाओगे । लोगों के चेहरे अपने-अपने कर्मों के अनुसार चमकेंगे कोई सितारे की तरह, कोई पूर्णिमा के चांद की तरह ।" (मुस्लिम)

जन्नत के संबंध में ऊपर जो विवरण वर्णित हुए हैं, वे स्वाभाविक रूप से प्रत्येक समझदार और विवेकशील व्यक्ति के दिल और अन्तर्मन में इसके प्रति ललक पैदा करने के लिए काफ़ी हैं । हमें अपने आपको जन्नत का पात्र बनाने हेतु गंभीर प्रयास करने चाहिए । दुनिया में हमें जो अवसर उपलब्ध हुआ है, ईश्वर का आज्ञाकारी बनकर एवं सुकर्म कर उसका समुचित सदुपयोग किया जा सकता है और लोक- परलोक दोनों में सफलता प्राप्त की जा सकती है ।

जहन्नम (नरक)

जहन्नम को नरक और दोज़ख़ भी कहा जाता है, जो दुष्कर्मियों और पापाचारियों का ठिकाना है । इसमें वे अत्यंत कठिन दुखदायिनी यातना से दो-चार होंगे । कुरआन में है–

"कहो : क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बरें दें, जो अपने कर्मों की दृष्टि से सबसे बढ़कर घाटा उठाने वाले हैं ? ये वे लोग हैं जिनका प्रयास सांसारिक जीवन में अकारथ गया और वे यही समझते हैं कि वे बहुत अच्छा कर्म कर रहे हैं । यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने पालनकर्ता प्रभु की आयतों का और उससे मिलन का इन्कार किया । अतः उनके कर्म

जान को लागू हुए, तो हम क़ियामत के दिन उन्हें कोई वज़न न देंगे । उनका बदला वही जहन्नम है, इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की नीति अपनायी और मेरी आयतों एवं मेरे रसूलों का उपहास किया'' (18:103-106)।

जिन लोगों ने इहलोक में सत्य के इन्कार की नीति अपनायी, उनको आग के वस्त्र पहनाए जाएंगे, उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा, जिससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी, उनको दंड देने के लिए लोहे के गुर्ज़ (गदाएं) होंगे । जब कभी भी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएंगे और कहा जाएगा कि चखो दहकती आग की यातना का मज़ा (कुरआन, 22:19-22, 44:48, 32:20)। जहन्नम की आग बुझने न पाएगी और अपराधियों को घेरे रहेगी (17:97, 18:29)। आग उनके चेहरों को झुलस देगी, जिससे वे कुरूप हो जाएंगे (कुरआन, 23:104)। उनके लिए आग ही ओढ़ना-बिछौना होगा (कुरआन, 7:41)।

उन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा (कुरआन, 47:15, 10:4)। ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, जो उनके मुंह भून डालेगा (कुरआन, 18:29)। उसे खाने को घावों का धोवन, ज़क्कूम के वृक्ष एवं ज़हरीली कांटेदार झाड़ी 'ज़री' का भोजन मिलेगा (कुरआन, 69:35,36, 44:43,44, 88:6)। उनकी गर्दन में तौक़ डाली जाएगी और सत्तर हाथ लंबी ज़ंजीर में जकड़ लिया जाएगा और भड़कती आग में झोंक दिया जाएगा (कुरआन, 34:33, 69:30-32, 76:4)।

जहन्नम एक घात-स्थल है । सरकश लोग उसमें न किसी शीतलता का मज़ा चखेंगे और न किसी पेय का सिवाय खौलते पानी और बहती पीप-रक्त के (कुरआन, 78:21,24,25)। वहां वे चिल्लाएंगे, आर्तनाद करेंगे, बिफरेंगे, सांस खीचेंगे और फुंकार मारेंगे, वहां वे सदैव रहेंगे । जब वे किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएंगे तो वहां विनाश को पुकारेंगे । (कहा जाएगा :) ''आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत से विनाशों को पुकारो!'' (कुरआन, 11:106,107, 25:12-14) । जहन्नमी और भी दुखद यातनाएं पाएंगे । वे मानसिक यातना से भी बुरी तरह ग्रस्त होंगे ।

''रुजू हो अपने रब (पालनकर्ता प्रभु) की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए । फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी । और अनुसरण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न हो ।''

कहीं ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति कहने लगे : ''हाय, अफ़सोस मुझ पर । जो कोताही अल्लाह के हक़ में मैंने की । और मैं तो परिहास करने वालों में ही शामिल रहा ।'' (कुरआन, 39:56)।

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

हज़रत इब्न उमर (रज़ि०)
कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०)
को यह कहते हुए सुना : "तुममें से प्रत्येक व्यक्ति ज़िम्मेदार है और तुममें से प्रत्येक व्यक्ति से जो कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में दिया गया है उसके विषय में पूछा जाएगा । शासक ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के सिलसिले में पूछा जाएगा । और पुरुष अपने घर का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा । और स्त्री अपने पति के घर में ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा । और सेवक अपने स्वामी के माल का ज़िम्मेदार है और उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा । इस प्रकार तुममें से प्रत्येक व्यक्ति ज़िम्मेदार है और जो ज़िम्मेदारी उसे सौंपी गयी है उसके बारे में उससे पूछा जाएगा ।"
(बुख़ारी, मुस्लिम)

एक ख़ैरख़्वाह
जयपुर

ब्रेक वाटर के आर-पार

■ गुरनाम गिल

ज़िन्दगी और घर !

कितना गहरा संबंध है दोनों में एक-दूसरे से !

घर है तो ज़िन्दगी है । ज़िन्दगी है तो घर है ।

ये दोनों शब्द एक-दूसरे से मुक्त या आत्मनिर्भर नहीं हो सकते । एक-दूसरे से टूटकर इनके अर्थ ही बिखर जाएंगे ।

भूषण सोचता चला जा रहा था ।

घर भी क्या चीज़ है ।

जीने के लिए आदमी को घर की बहुत ज़रूरत होती है ।

अस्ल में घर के बिना जीवन ही अधूरा है । उसे लगा कि जैसे अब उसका घर सहज ही एक चारदीवारी बनकर रह गया हो ।

कुछ घर ऐसे होते हैं जो बाहर गये आदमी को अपनी तरफ़ खींचते हैं । और कुछ इसके उल्टे हो सकते हैं ।

कृष्णा की मौत से उजड़ चुके घर को उसने रेणु के साथ बसाने का जो सपना बुना था वह सपना उसे बिखरता हुआ नज़र आ रहा था ।

रसोई का काम निबटा कर, रेणु लांउज़ में आने की बजाय बालकनी में ही कुर्सी बिछा कर बैठ गयी थी । मछलियों वाले टैंक के पास बैठकर भूषण ने महसूस किया, जैसे रेणु जान-बूझकर ही उससे दूर रहना चाहती हो । उसे लगा कि जैसे वह और रेणु समानांतर रेखाएं हों, जो कभी किसी बिन्दु पर नहीं मिल सकतीं, फिर उसका ध्यान सोनपरी ने अपनी तरफ़ खींच लिया ।

पहले पहल इस टैंक में मछलियां होती थीं । फिर तीन सुनहरी रह गयीं । थोड़ी देर बाद हल्के रंग वाली दो मर गयीं और सबसे बड़ी तथा गहरे रंग वाली यही एक मछली रह गयी थी । भूषण ने इसका नाम सोनपरी रखा हुआ था । जब भी वह सुबह जागता तो पहले सोनपरी को देखने की इच्छा उभरती । उसका जी चाहता कि देखें तो सही कि वह किस हरकत में है । सो रही है ? या जाग रही है ? परन्तु उसकी दिलचस्पी जल्दी ही ख़त्म हो जाती क्योंकि सोनपरी दिन-ब-दिन उसी रूटीन में रहती । भूषण खुराक डालता । खुराक खाने के बाद, वह टैंक में चक्कर लगाती रहती । कभी वह खुश नज़र आती और कभी लगता कि दम तोड़ना चाहती है ।

भूषण और रेणु की उम्र में पूरे पच्चीस सालों का अन्तर था और इस अन्तर के प्रति भूषण भली प्रकार सचेत था । वह जानता था कि यह एक पीढ़ी का अंतराल है । बात केवल जिस्मानी रिश्ते की ही नहीं, अपितु आदमी की सोच, स्वभाव, रहन-सहन और जीने के तरीक़ों का भी बहुत महत्व होता है ।

जब घर के काम से थोड़ी फुर्सत मिलती है तो रेणु अक्सर खिड़की के पास बैठकर बाहर की ओर या फिर शीशे के टैंक में सोनपरी की ओर देखती रहती । उसके मेल-मिलाप का दायरा भी सीमित-सा था या फिर उसने जान-बूझकर सीमित ही रखा था । वैसे वह रिज़र्व स्वभाव

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877
STAR
Hosiery Centre
Wholesaler
Readymade & Handloom
B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G)

की औरत थी ।

बड़ी ख़ूबसूरत शाम थी ।

भूषण ने देखा कितनी ही देर से रेणु खिड़की से बाहर की ओर देख रही थी । उसने सोचा कि सड़क पर आते-जाते लोगों की भीड़ में, जीवन का उतार-चढ़ाव देखने की कोशिश कर रही थी । परन्तु जब उसने थोड़ा क़रीब जाकर देखा तो लगा कि बाहर की ओर देखते हुए भी, कुछ नहीं देख रही । बस ऐसे ही शून्य में घूर रही हो । आंखें खुली होकर जैसे बंद हों ।

जब-से निक्की यूनीवर्सिटी गयी थी तब से रेणु अधिक उदास-सी दिखने लगी थी । निक्की चाहे उसकी बड़ी बहन की लड़की थी परन्तु तब भी रेणु ने उसे सदा ही अपनी बेटी समझा था । दोस्तों जैसी बेटी ।

भूषण जब कभी भी ईमानदारी से सोचता तो उसे लगता जैसे उसने रेणु की ज़िन्दगी बरबाद की हो । अपनी बहनों के मजबूर करने पर उसने दुबारा शादी की थी । निक्की के भविष्य के लिए उसकी बहनों ने रेणु के मां-बाप को राज़ी कर लिया था । भूषण यह भी जानता था कि रेणु अशोक को प्यार करती है और उससे शादी करने की बात सोच रही है । आख़िर सभी के ज़ोर देने पर, उसने खुद को बेक़सूर-सा समझते हुए, पहली पत्नी की मौत के बाद छोटी साली से विवाह करवाने की बात मान ली थी ।

जब किसी समाज में बेटी का विवाह एक आर्थिक बोझ बन जाए तो ऐसे हालात में किसी भी मां-बाप का काम मुफ़्त में चल रहा हो तो वे बेटी की इच्छा की परवाह कम ही करते हैं । बेटी के साथ समझौते किये जाते हैं । इसी तरह रेणु के साथ भी हुआ । उसकी इच्छा के बारे में किसे परवाह थी ? उसकी ख़ुशी का ख़याल किसी ने नहीं किया था । उस समय उसके भीतर रोष के तूफ़ान उठे थे । जज़्बातों के बवंडर उठे थे । सोच की आंधी चली थी । हसरतों ने विलाप किया था । ख़यालों में खलबली उठी थी । परन्तु अब यह सभी कुछ बीत गये समय की कहानी

AQUIL MUKHTAR
DEVELOPERS PVT. LTD.

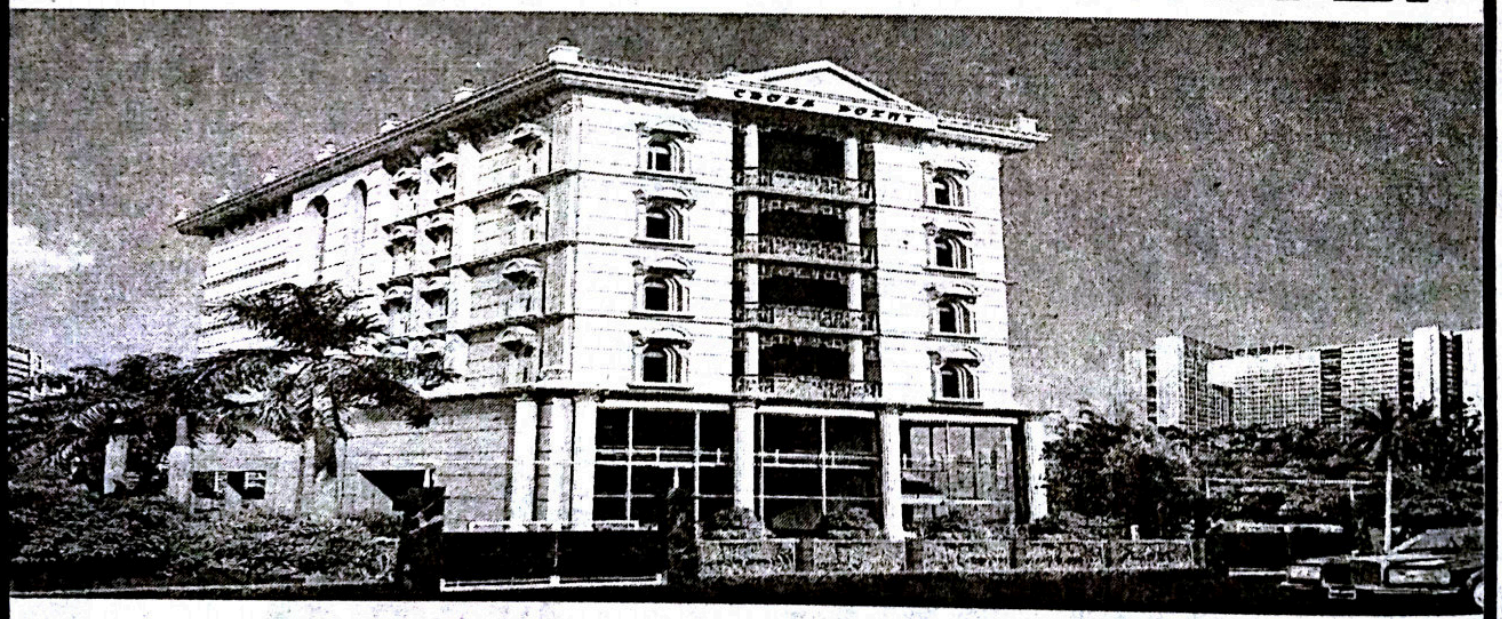

M.D. MR. MUKHTAR AHMED MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

बनकर रह गया था । अतीत की परछाइयां, जो कभी-कभी वर्तमान का पीछा करती थीं ।

कई बार भूषण को ऐसा लगता कि जैसे वह और रेणु, एक ही घर में रहते हुए भी, अलग-अलग रह रहे हों । अपने आप में अकेले से । उनके सोने वाले कमरे में जैसे कोई अदृश्य दीवार हो । और बड़ी देर इस दीवार के आर-पार उसे अशोक के होने का एहसास-सा होता ।

बाहर बारिश हो रही थी । बारिश नहीं, बूंदा-बांदी । बातें करते हुए उनकी देह तपने लगी थी । जिस तरह धीमा-धीमा बुख़ार हो रहा हो । एक अजीब-सी लहर का उभरना और उससे तरंगों का उपजना । रेणु का हाथ बैड स्विच की ओर बढ़ा और कमरे में रोशनी की जगह अंधेरा पसर गया । भूषण का हाथ बैड स्विच की ओर बढ़ता-बढ़ता पता नहीं क्यों रुक गया । अंधेरा उसे अच्छा नहीं लगता था । उस रात भूषण रेणु के बारे में सोच रहा था । वह इस बात को भली-भांति जानता था कि अशोक अभी भी रेणु को प्यार करता है । शायद इसी वजह से उसने रेणु को चिट्ठी-पत्र, टेलीफ़ोन की छूट दी हुई थी । भूषण की इस उदारता ने रेणु की नज़रों में उसका क़द और भी ऊंचा कर दिया था ।

एक दिन रेणु ने घर में सजाये हुए सभी प्लास्टिक के नक़ली पौधे बेल-बूटे बाहर फेंक दिये और उनकी जगह, जीवित बेल-बूटों के गमले सजा़ दिये । इन पौधों की सजधज का उसे एक अलग ही मज़ा आ रहा था । कंकरीट और प्लास्टिक के इस माहौल में जैसे कुदरती माहौल और रंगों की सृजना हो गयी हो । कितनी ही देर वह इन पौधों के बीच बैठी अजीब से मानसिक स्वप्न के एहसास से आनंदित होती रही ।

दूसरे दिन सुबह पौधों के पास बैठे भूषण के मन में एक सवाल उठने लगा रेणु ने आख़िर ऐसा क्यों किया होगा ? किसी के घर में रखे हुए पौधे देखकर या इस चारदीवारी के जीवन से उकता कर ?

कई बार वह सोचता कि एक रूटीन या आदत-सी जीवन भी क्या जीवन है ! बिल्कुल एक-सा ऊबाऊ । तब्दीली रहित । हर रात जैसे शाम को ही दुहरा रही हो । और ऐसे ही हर सुबह, रात को दुहरा रही हो । जब आदमी क़ैद में रहने का आदी हो जाए तो उसके अन्दर खुले जीवन की गहरी इच्छा ख़त्म होने लगती है । जीवन तो आख़िर जीने के लिए है । समाज के साथ सांझ प्यार लेने के लिए, प्यार देने के लिए होती है । यदि रेणु नाश्ते के लिए आवाज़ न देती तो पता नहीं कितनी ही देर वह ख़यालों में ही खोया रहता ।

नाश्ते के बाद वह फिर ड्राइंग रूम में आकर बैठ गया । रबर प्लांट के गमले के पास । शीशे के टैंक में सोनपरी इधर से उधर, नीचे से ऊपर और फिर ऊपर से नीचे तैरती फिर रही थी । सोनपरी की गोल और काली आंखें उसे अपनी तरफ़ घूरती हुई लगतीं । कुछ देर के लिए उसे लगा जैसे सोनपरी इस सीमित दायरे से निकल कर समुद्र की विशालता के लिए तरसती हो । दूसरे ही पल उसे लगा जैसे वह इस टैंक में ही ख़ुश और सुरक्षित हो ।

भूषण को रेणु के साथ दिल से हमदर्दी थी और वह उसे हर तरह से ख़ुश देखना चाहता था । उसे एक ही चिंता रहती कि वह कहीं डिप्रेशन का शिकार न हो जाए । डॉक्टरी मश्विरे की बात छेड़ता तो रेणु कहती—क्या बात है मुझे ? क्या मैं नॉर्मल इन्सान नहीं हूं ? मैं ख़ुश हूं । मुझे कोई उदासी नहीं । क्यों मेरी बेज़रूरत चिंता करते रहते हो ?

निक्की के यूनीवर्सिटी जाने के बाद, भूषण ख़ास तौर पर रेणु के मन के अन्दर झांक सकने की हर संभव कोशिश करने लगा था । रेणु का हर समय घुटे-घुटे रहना उसके लिए असह्य था, क्योंकि रेणु की ख़ुशी के साथ उसकी अपनी ख़ुशी भी तो जुड़ी थी । इस फ्लैट में अब वे दो ही थे । कितनी देर से इसकी दीवारों ने प्यार करते लरजते बोल और हंसी की खनखनाहट नहीं सुनी थी । यदि दीवारों से कोई आवाज़ टकराती थी तो वह थी टेलीविज़न की ।

बहुत बार वह माहौल बदलने के बारे में सोचता । आने बहाने हालीडे जाने की बात छेड़ देता । अव्वल तो रेणु बहुत दिलचस्पी नहीं लेती, यदि कहीं हालीडे चली भी जाती तो लौटने के बाद और भी उदास तथा परेशान-सी दीखती । वह ढूंढ़ने की कोशिश करता कि आख़िर वह कौन-सी कमी होगी, जिस वजह से रेणु ख़ुश नहीं है । वह क्यों चुप और उदास लगती है ? यही उम्र तो हंसने-खेलने की होती है । ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाने की । चाव से रंग भरने की । शृंगार करने की और बन-ठनकर रहने की । परन्तु इसे न गहनों का शौक है, न ही कपड़े आदि का । इस घर में कोई गैप ज़रूर है जो भरा नहीं जा सका या फिर उसके भीतर ही कुछ मर गया लगता है । वह अपने ही मन से संवाद करता ।

बहुत बार ऐसा भी होता कि भूषण टी०वी० पर कोई दस्तावेज़ी फ़िल्म देखना चाहता और रेणु का दिल किसी फिल्म के लिए चाहता । ऐसी हालत में वे अलग-अलग कमरों में टी०वी० लगाकर बैठ जाते । दोनों के बीच की मानसिक सांझ टूट जाती । भूषण के लिए तली हुई चीज़ें, बहुत नमक मिर्च वाली चीज़ें खाने को मना ही थी परन्तु रेणु के लिए ऐसा कोई बंधन नहीं था । इस तरह कई बार एक ही मेज पर बैठकर भी एक ही तरह के खाने का लुत्फ़ न उठा पाते । इस तरह बहुत-सी छोटी-मोटी बातें अब उनके बीच सांझी न हो पाती ।

कई बार भूषण सोचता कि औरत के लिए मां बनना बहुत ही ज़रूरी है । वह सोचता कि यदि रेणु की अपनी कोख से कोई संतान होती परन्तु जब कभी वह इस ओर संकेत करता तो रेणु का जवाब होता—औलाद और क्या होती है ? निक्की मेरी ही तो बेटी है । मैं ही उसकी मां हूं । मैं डॉक्टरों से क्यों पूछती रहूं ?

सूरज की किरणें, रबर प्लांट के साफ़ और पॉलिश किए हुए पौधों को और भी चमकदार बना रही थीं । बालकनी की ओर ध्यान करते हुए भूषण ने देखा कि रेणु बाहर की ओर टकटकी लगाये कुर्सी पर बैठी थी । फिर उसका ध्यान मछलियों वाले टैंक की ओर चला गया । सोनपरी हमेशा की तरह उसी हरकत में घूम रही थी । काफ़ी देर उसका ध्यान सोनपरी ने केन्द्रित किये रखा । दो एक पल के लिए उसने रेणु की ओर नज़र डाली और फिर सोनपरी की ओर । यह कैसा जीवन ! मक़सदहीन और बेअर्थ, उसने सोचा ।

थोड़ी देर वह लाउंज़ में खड़ा रहा । अपने आप में गुमसुम । खोया-सा जैसे किसी उलझन में फंस गया हो । उसे लगा कि जैसे वह देर से अपने मन पर कोई बोझ उठाये घूम रहा हो । यह बोझ उससे उठाया भी नहीं जा रहा । झेला भी नहीं जा रहा । वह कम से कम किसी फ़ैसले पर पहुंचना चाहता था । यह बोझ उसने किसी न किसी तरह उतार देने या फेंक देने की सोची थी । अपने मन के सकूं के लिए ।

कुछ देर बाद वह फिर मछलियों के टैंक के पास आकर बैठ गया । उसका जी चाहा कि सोनपरी को आज़ाद कर दे । परन्तु क्या वह विशाल सागर की मार सह सकेगी ? उसे तो छोटे से टैंक में रहने की आदत हो चुकी है । उसकी सोच का सिलसिला जारी था । हो सकता है पहले सोनपरी कुछ डरे या घबराये परन्तु फिर ब्रेक वाटर की लहरों को पार करके पानी की तरंगों से ऐकमेक होती हुई तन मन की सारी ऊर्जा को जीने मरने के लिए ख़र्च करे न कि सिर्फ़ अस्तित्व क़ायम रखने के लिए । उसे लगा जैसे उसने उलझन का हल ढूंढ़ लिया हो । किसी फ़ैसले पर पहुंच गया हो । बहुत ही प्यार से उसने रेणु को अपने पास बुला लिया । वह मुस्कराती हुई सामने आकर बैठ गयी । पल भर के लिए उसने रेणु की आंखों में झांका और फिर अपने घर के लाउंज में पड़े समान की ओर ।

रेणु उसके ओंठों से निकलने वाले शब्दों का इन्तिज़ार कर रही थी । हिम्मत के साथ एकत्रित किये गये भूषण के सारे ही शब्द सोच की मुट्ठी से एकदम फिसल गये । उसने जो सोचा था कह नहीं पाया । उसे अब ऐसा लग रहा था कि वह खुद 'ब्रेक वाटर' की लहरों में फंस कर रह गया हो ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are Construction of Prayer Hall & Purchase one more school bus, Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman

(Prof M. B. Zaman) Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

सारे गुलाब मानवता के

● संपादन प्रभाग

एजाज़ अंसारी साहब की हिन्दी में प्रकाशित काव्य कृति ''सारे गुलाब तेरे'' अनेक दृष्टियों से हिन्दी जगत को समृद्ध करता है । इस काव्य संकलन में जहां मानवीय संवेदनाओं का उच्छवास है, वहीं धरातल से जुड़े प्रश्नों को भी कुरेदा गया है । रचनाकार कहता है–

महल की आख़िरी मंज़िल से आइने न चमकाओ
महल की आख़िरी मंज़िल तलक पत्थर भी जाता है

डॉ॰ कुंवर 'बेचैन' ने ठीक ही लिखा है कि, ''एजाज़ साहब को चाहे कश्मीर की वादी से उठता हुआ निर्मम धुंआ हो या मुंबई के बेरहम धमाके, चाहे निठारी में मासूम जानों की हृदयविदारक चीख़ हो या दूसरे मसाइल, सभी परेशान करते हैं । ऐसी परिस्थितियों पर चिंता व्यक्त करते हुए वे एक जागरूक चिंतन तक पहुंच जाते हैं ।''

'सारे गुलाब तेरे' सही अर्थ में विसंगतियों को झिंझोड़ने और उकेरने में सक्षम है । कुछ पंक्तियां देखिये जो हिन्दी भाषियों को क्या दूसरे दुष्यंत कुमार की याद नहीं दिलाती हैं–

तुमने बाज़ू कतर दिये जिसके
वो परिन्दा तो आसमान में है
कल ये बच्चे बमों से न खेलें कहीं
आज इनको किताबें दिला दीजिए
तब्लीग़ कर रहे हो ग़ज़ल की ज़बान में
ऐसा ही है तो बैठ के ज़िक्रे ख़ुदा करो
एजाज़ बहस करना फिर इस्लामियत पर
पहले जो फ़र्ज़ हैं, वो नमाज़ें अदा करो
सिर्फ़ रोज़े और नमाज़ें दीन का मक़सद नहीं
हैं तक़ाज़े और भी दीन के ईमान के

''सारे गुलाब तेरे'' के रचनाकार की रचना अगर किसी वाद के अंतर्गत आती है तो वह है मानवतावाद, जिसकी झलक प्रस्तुत काव्य संकलन में है यद्यपि यह उनकी उर्दू रचनाओं का अनुवाद है, लेकिन यह निसंकोच कहना पड़ेगा कि इसमें हिन्दी जगत के लिए पर्याप्त सामग्री मौजूद है । मुज़फ़्फ़र हन्फ़ी ने एजाज़ अंसारी की कविताओं में कुछ अलग ही स्वाद पाया है । वे लिखते हैं कि ''जीवन के राग-विराग की मार्मिक तस्वीरों से सुसज्जित उनकी ग़ज़लों का अपना अलग ही स्वाद है । यथार्थ के समन्वय से उनके शेअरों की गुणवत्ता कई गुना बढ़ जाती है ।

'सारे गुलाब तेरे'
पृष्ठ : 128, मूल्य : 200 रुपये
वितरक : नयी किताब, डी-24, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, पार्ट-I, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025

HINDUSTAN TRAVELS
Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335

Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)
Address : Implipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G)

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इंन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं.

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

मिलावटी दूध : बच्चों के लिए ज़हर

यूरिया मिश्रित दूध तैयार करने वाली कुछ फैक्ट्रियां पिछले दिनों राजस्थान के दो शहरों और दिल्ली में पकड़ी गयीं। इसके बाद से सिंथेटिक दूध के कारोबार के बारे में जो नये-नये तथ्य प्रकाश में आये, वे सब मिलकर एक भयावह स्थिति की ओर संकेत करते हैं। क़रीब-क़रीब संपूर्ण उत्तर भारत में उन कारोबारियों का ज़हरीला सिंथेटिक दूध पहुंच रहा है जो कब से लोगों की ज़िन्दगी से खिलवाड़ करते आ रहे हैं। चिकित्सक सिंथेटिक दूध के दुष्प्रभावों के बारे में काफ़ी कुछ बता चुके हैं। इन गंभीर दुष्प्रभावों को देखते हुए सतर्कता तथा सावधानी अपरिहार्य हो गयी है।

सिंथेटिक दूध मोटे तौर पर यूरिया तथा रिफाइंड तेल मिलाकर बनाया जा रहा है। यह सबसे ज़्यादा हानिकारक है छोटे बच्चों के लिए। वे इस सिंथेटिक दूध के लगातार सेवन से कुछ गंभीर बीमारियों का शिकार हो सकते हैं, यूरिया का इस्तेमाल करके बनाया गया सिंथेटिक दूध धमनियों, हृदय व गुर्दों को नुक़सान पहुंचाता है। बच्चों में अगर चेहरा थोड़ी-थोड़ी देर के लिए नीला पड़ने या बार-बार उल्टी-दस्त के लक्षण दिखायी पड़ें तो इसका एक प्रमुख कारण सिंथेटिक दूध का सेवन भी हो सकता है।

एसोसिएशन ऑफ़ फूड साइंटिस्ट्स एंड टेक्नोलोजिस्ट्स ने सिंथेटिक दूध की जांच की कुछ आसान विधियां विकसित की हैं। कुछ रसायनों तथा सामान्य उपकरणों की मदद से यह जांचा जा सकता है कि आप जो दूध इस्तेमाल कर रहे हैं उसमें यूरिया अथवा रिफाइंड तेल की मिलावट तो नहीं।

राजधानी दिल्ली समेत बड़े शहरों में यह समस्या ज़्यादा विकट है क्योंकि मदर डेयरी के दूध पर भी बहुत आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता। मदर डेयरी को दूध की आपूर्ति करने वाले कई ठेकेदार भी सिंथेटिक दूध बनाने के धंधे में लिप्त हैं। लिहाज़ा सतर्कता बरतते हुए आप इस्तेमाल किये जा रहे दूध की माह में एकाध बार जांच करके निश्चिंत हो सकते हैं।

दूध की जांच की इन विधियों में जिन रसायनों की आवश्यकता है वे आसानी से बाज़ार में उपलब्ध हैं। अन्य उपकरण प्राप्त करने में भी कोई समस्या नहीं है।

जांचे मिलावटी दूध

दो मिलीमीटर दूध में इतना ही यूरियेज एन्जाइम डालकर हिलाया जाए। एक कॉर्क के दो टुकड़े करके इनके बीच फिल्टर पेपर की पट्टी फिट की जाए। जिस परखनली में दूध और यूरियेज एन्जाइम डाला गया है उसमें 2 मिलीमीटर ही पोटेशियम कार्बोनेट घोल डाला जाए। फिल्टर पेपर पट्टी को घोल में डुबोते हुए कॉर्क को बन्द कर दिया जाए अब अगर फिल्टर पट्टिका का रंग लाल से बदलकर हरा हो जाए यूं समझिये दूध में यूरिया का मिश्रण है। एक अन्य विधि के अनुसार परखनली में 2-2 मिलीलीटर दूध और यूरियेज एन्जाइम डालें और पूर्व विधि के अनुसार ही कॉर्क के दो टुकड़ों के बीच फिल्टर पेपर पट्टी लगाएं। इस बार इसे नेसलर में भिगो लें। दो मिलीमीटर पोटेशियम कार्बोनेट और डालकर परखनली को बन्द कर लिया जाए। अगर फिल्टर पट्टी का रंग फिर पीला, भूरा या नारंगी हो जाए तो यह दूध में यूरिया का मिश्रण का सूचक है।

● कमलेश

بسم الله الرحمن الرحيم

"अल्लाह उस आदमी के साथ दयालुता का मामला करेगा जो क्रय-विक्रय और क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने में नरमी और शालीनता बरते।" (हदीस)

MD. SAIFULLAH
JAIPUR

डॉ॰ 'मानव' को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान

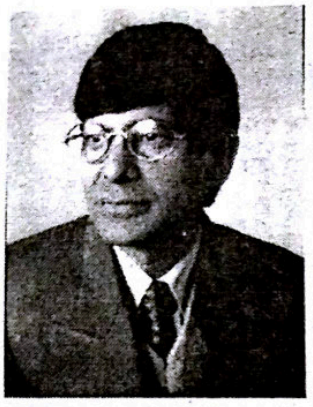

साहित्य के प्रति अगाध निष्ठा तथा महत्वपूर्ण योगदान के दृष्टिगत वरिष्ठ साहित्यकार डॉ॰ रामनिवास 'मानव' को दोहरा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ । विगत दिनों नेपाल के महेन्द्रनगर स्थित पंच सितारा होटल ओपेरा इन्टरनेशनल के सभागार में आयोजित भव्य 'नेपाल-भारत साहित्यकार सम्मेलन तथा सम्भाव-समारोह में उन्हें सम्मानित किया गया । कंचनपुर के मुख्य ज़िला अधिकारी श्री बुद्धिबहादुर खंडका, नेपाल-भारत मैत्री-संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हेमविक्रम थापा तथा महांकाली साहित्य-संगम के अध्यक्ष श्री वीरबहादुर चन्द ने उन्हें नेपाली गौरव की प्रतीक टोपी, शॉल तथा सम्मान-पत्र भेंट कर सम्मानित किया ।

समारोह में भारतीय साहित्यकारों के प्रतिनिधिमंडल के प्रवक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ॰ मानव ने भारत-नेपाल के बीच साहित्यिक-सांस्कृतिक संबंधों की प्रगाढ़ता पर ज़ोर दिया । इससे पूर्व खटीमा-रुद्रपुर (उत्तराखंड) में आयोजित दो दिवसीय 'भारत-नेपाल बाल साहित्य-समारोह में भी डॉ॰ 'मानव' को सम्मानित किया गया । उत्तराखंड के मुख्य सूचना आयुक्त डॉ॰ आर॰एस॰ टोलिया ने, देश-विदेश से आये लगभग दो सौ बाल-साहित्यकारों की उपस्थिति में उन्हें शॉल, साहित्य तथा 'बाल-साहित्य शिखर सम्मान-2009' प्रदान कर सम्मानित किया । सम्पूर्ण दो दिवसीय आयोजन डॉ॰ 'मानव' के संयोजन में ही सम्पन्न हुआ ।

उल्लेखनीय है कि डॉ॰ 'मानव' को हाल ही में 'बिहार सरकार-सम्मान' (पटना), 'राष्ट्रीय भाषा-रत्न सम्मान' तथा 'महाकवि' की मानद उपाधि (भागलपुर), 'विचार प्रभा-सम्मान' (दिल्ली), 'दीप ज्योति रजत ज्यंती सम्मान' (अलवर) तथा 'हिमालय और हिन्दुस्तान सम्मान' (ऋषिकेश) तो प्राप्त हुए ही हैं, नारनौल और मंडी अटेली में उनका नागरिक अभिनन्दन भी किया गया है ।

'साहित्यालोक' का लोकार्पण

लोहिया अध्ययन केन्द्र नागपुर की ओर से साहित्यकार डॉ॰ हीरालाल जायसवाल की पुस्तक 'साहित्यालोक' का लोकार्पण वरिष्ठ पत्रकार उमेश चौबे, डॉ॰ ओम प्रकाश मिश्रा और मराठी रंगकर्मी अमर रामटेके ने किया । कार्यक्रम में पुस्तक लोकार्पण के बाद उमेश चौबे ने कहा कि आम आदमी आज साहित्य का अध्ययन नहीं करता है, उसमें साहित्य के प्रति अरुचि है । लोगों के पास साहित्य पढ़ने के लिए समय नहीं है । यह एक गंभीर और चिंता की बात है । उन्होंने कहा कि हीरालाल अपने नाम के अनुरूप साहित्य जगत के मुकुट के बीच लगे हीरे की तरह हैं, जो बीच-बीच में चमक कर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है ।

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रातः 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रातः 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

भोलानाथ कुशवाहा पुरस्कृत

भोलानाथ कुशवाहा के प्रथम कविता संग्रह 'कब लौटेगा नदी के उस पार गया आदमी' को जयपुर (राजस्थान) का राजेन्द्र बोहरा स्मृति काव्य पुरस्कार-2009 मिला है । गत 24 अक्तूबर-2009 को यह सम्मान जयपुर के पिंक सिटी प्रेस क्लब में दिया गया । सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि थे नन्द कुमार आचार्य जी । अध्यक्षता की नन्द भारद्वाज जी ने ।

रससिद्ध कवि बंशीलाल 'पारस' समलंकृत

31 जनवरी 2010 को मातृ शिशु मंदिर में नटराज साहित्य संस्थान भीलवाड़ा द्वारा गरिमापूर्ण आयोजन में रससिद्ध कवि बंशीलाल 'पारस' नियामक-सामयिकी समलंकृत हुए । मुख्य अतिथि अनिल अनवर संपादक 'मरुगुलशन' जोधपुर, अध्यक्ष शिवदान सिंह जी महाराज, विशिष्ट अतिथि श्याम बनवाड़ी उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय यूनेस्को फेडरेशन, मुख्य वक्ता डॉ॰ शंभुनाथ तिवाड़ी एवं आभार संस्थापक अध्यक्ष डॉ॰ महावीर बैरागी ने किया ।

लाल बिहारी लाल को सम्मान

दिल्ली के युवा लेखक एवं पर्यावरण प्रेमी लाल बिहारी लाल को जैमिनी अकादमी, पानीपत द्वारा एक साहित्यिक समारोह के दौरान राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर सम्मान प्रदान किया ।

भोलानाथ कुशवाहा हुए सम्मानित

चतुर्थ राजेन्द्र बोहरा स्मृति काव्य पुरस्कार भोलानाथ कुशवाहा को जयपुर के पिंकसिटी प्रेस क्लब में 24 अक्तूबर को प्रदान किया गया । भोलानाथ इलाहाबाद में 'आज' अख़बार में समाचार संपादक पद पर कार्यरत हैं । उन्हें यह पुरस्कार वरिष्ठ साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य ने प्रदान किया । उन्हें शॉल ओढ़ा कर और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया ।

पत्र और पिन कोड

पिन (PIN) शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर का संक्षिप्त रूप है । किसी भी जगह का पिन कोड 6 अंकों का होता है । हर अंक का एक ख़ास स्थानीय अर्थ होता है । पिन कोड की शुरुआत 15 अगस्त 1972 को डाक-तार-विभाग ने पोस्टल नम्बर योजना के नाम से की थी । इस योजना के तहत डाक-वितरण करने वाले प्रत्येक हेड पोस्ट ऑफ़िस और सब-पोस्ट ऑफ़िस को छह अलग-अलग अंकों की अलग-अलग संख्या आवंटित की गयी है । पिन कोड अंक से बाएं से दाएं क्रमशः डाकघर की भौगोलिक स्थिति का ठीक-ठीक पता चलता है । पूरे देश को आठ विभिन्न भागों में बांटा गया है । पहला अंक क्षेत्र दर्शाता है । पहले तीन अंक एक साथ वह छंटाई यूनिट दर्शाते हैं जिसके अन्तर्गत डाकघर पड़ता है । अंतिम तीन अंक छंटाई यूनिट के अन्तर्गत विशेष वितरण डाकघर दर्शाते हैं । पते के बाद पिन कोड लिखने से गंतव्य का सही-सही पता लगाने में सार्टर को सहायता मिलती है । इससे वस्तु के ग़लत प्रेषण और अनुवर्ती विलम्ब की गुंजाइश कम हो जाती है । प्रस्तुति : **नदीम इलियास**

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते ।

मद्रासी

मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी॰जी॰)
फोन : 0771-2539516,2236788

मद्रासी होटल
शॉप नं॰ 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

अपनी-अपनी व्याख्याएं

समाज में राजनीतिक संघर्ष सभी स्तरों पर समानता लाने का है । यही संविधान की वास्तविक व्याख्या होनी चाहिए लेकिन यह पाया जाता है कि राजनीतिक पार्टियों ने अपनी व्याख्याओं से इस तरह से समाज को उलझा रखा है कि समानता की लड़ाई तेज़ नहीं हो पाती है । महिला हित की बात होते हुए भी महिला पिछड़ेपन की शिकार बनी हुई है । मुसलमानों के लिए चिंतित होने के बावजूद उनका पिछड़ापन बढ़ता जा रहा है । दलितों के लिए ढेर सारे आंसू बहने के बावजूद दलित अपने हुक़ूक़ से वंचित हैं । आदिवासी लगातार अपने हालात पर बनने वाली रिपोर्टों में दबते जा रहे हैं । अंतिम सच है कि समाज में जिन लोगों का वर्चस्व बना रहा है उनका वर्चस्व बढ़ा है ।

(अनिल चमड़िया, राष्ट्रीय सहारा, 10 मार्च 2010)

सुझाव

50 साल बाद जब एनर्जी के सभी परंपरागत स्रोत, जैसे कि पेट्रोलियम, नेचरल गैस, यहां तक कि यूरेनियम भंडार भी ख़ात्मे पर होंगे, तब सोलर एनर्जी और थोरियम जैसे विकल्प ही बचेंगे । भारत में थोरियम का विशाल भंडार है, इसलिए हमारे लिए अच्छा होगा कि हम अभी से थोरियम पर ध्यान केन्द्रित करें और रैपिड टेक्नॉलोजी डेवलप करें ताकि अपनी ज़रूरतों को पूरा कर सकें ।

(डॉ॰ अनिल काकोडकर, नवभारत टाइम्स, 11 मार्च 2010)

महिला आरक्षण विधेयक

समय की मांग है कि इस विधेयक का विरोध करने की बजाय इसे संशोधित करवाकर सर्वसम्मति से पास करवाया जाए । यह विधेयक अपने वर्तमान स्वरूप में ऐसा है कि इसका न तो समर्थन उचित मालूम पड़ता है और न ही विरोध ! यह विधेयक लोकसभा पारित करे, उसके पहले इसके सर्वसम्मत रूप को उभारने की भरसक कोशिश की जानी चाहिए ।

(वेदप्रताप वैदिक, राष्ट्रीय सहारा, 11 मार्च 2010)

सस्ते तेल का सच

तेल सस्ता करने के लिए सरकार तेल कंपनियों को हो रहे घाटे की भरपाई ऑयल बांड जारी करके करती रही है । इन बांड को आने वाले वक़्त में जनता पर टैक्स लगाकर भुनाया जाएगा । इस तरह देखें, तो समझ में आएगा कि वास्तव में तेल सस्ता नहीं होता है अन्तर सिर्फ़ यह पड़ता है कि बढ़े हुए मूल्य को आज की जगह कल चुकाना पड़ता है ।

(भरत झुनझुनवाला, नवभारत टाइम्स, 9 मार्च 2010)

चुटकुलों के पीछे

अगर आप ध्यान देंगे तो पाएंगे कि हर चुटकुला किसी न किसी ग्रुप या क्लास का मज़ाक़ उड़ाता है । ये चुटकुले यह भी बताते हैं कि समाज के विभिन्न तबक़े एक-दूसरे के बारे में क्या राय रखते हैं । इसी कारण आपको गांव वालों के ख़िलाफ़ चुटकुले मिलेंगे ही, पढ़े-लिखों के ख़िलाफ़ भी मिलेंगे हालांकि कम संख्या में । इसके अलावा महिलाओं, कवियों, नेताओं, व्यापारियों के ख़िलाफ़ भी बड़ी संख्या में चुटकुले मिलेंगे । ख़ास समुदायों और दुश्मन देश के लोगों के ख़िलाफ़ भी चुटकुले कॉमन होते हैं ।

(नीरेन्द्र नागर, नवभारत टाइम्स, 6 मार्च 2010)

राजनीति नहीं, विकास चाहिए

ये कुछ चुनिंदा उदाहरण दोनों राज्यों की विकास की तस्वीर बयां करने के लिए काफ़ी हैं । केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच असहमति के चलते विकास प्रभावित हो रहा है जिसके चलते आम जनता पिस रही है, वोटों की गलाकाट राजनीतिक खींचतान के चलते राज्य विकास के लिहाज़ से काफ़ी निचले पायदान पर है । यू॰पी॰, बिहार से ग़रीबी के चलते काफ़ी तेज़ी से पलायन होता रहा । भुखमरी और क़र्ज़ के चलते ग़रीब/किसान आत्महत्या कर रहे हैं । दलित मुक्ति मोर्चा का आरोप है कि गत वर्ष उत्तर प्रदेश में भुखमरी के चलते 25 लोगों की मौत हुई है, जिनमें अधिकतर दलित हैं । इसलिए नेताओं को विकास की क़ीमत पर राजनीति बंद कर समग्रता में सोचना होगा, तभी इन राज्यों की तस्वीर में बदलाव आएगा । ऐसा न हुआ तो मुख्यधारा के दलों के लिए भी देर-सवेर ख़तरे की घंटी बजेगी ।

(रणविजय सिंह, राष्ट्रीय सहारा, 13 मार्च 2010)

मनुष्य बनाम अंडा

"झारखंड में एक शख़्स और उसकी बेटी की हत्या सिर्फ़ इस वजह से कर दी गयी कि इन दोनों ने पड़ोसी के घर से एक अंडा चुरा लिया था । यह मामला पश्चिम सिंहभूम ज़िले के पर्तोल गांव का है । यहां के निवासी मुगई सिरका और उसकी सात साल की बेटी नीतू की गत दिनों हत्या कर दी गयी ।

ख़बरों में बताया गया कि नीतू ने कथित तौर पर अपने पड़ोसी के मकान से एक अंडा चुरा लिया था । इसके बाद सात ग्रामीणों ने मुगई के घर को घेर लिया और पथराव करने लगे । जब मुगई ने इस बारे में जानना चाहा, तो उन लोगों ने उनकी पिटायी शुरू कर दी । बताया जाता है कि बाप-बेटी की पहले पिटायी की गयी और फिर दोनों की गला दबाकर हत्या कर दी गयी । हमलावरों ने दोनों के शव को पास के एक जंगल में फेंक दिया ।"

दो मानव जीवन का मूल्य मुर्ग़ी के एक अंडे के बराबर है, बल्कि उससे भी कम । अंडे की फिर भी क़ीमत होती है, मानव जीवन की तो कोई क़ीमत नहीं रह गयी है । हालांकि ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को स्वतंत्र पैदा किया है और उसके जीवन को बहुत सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान की है ।

"जिसने किसी इन्सान के ख़ून के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और कारण से किसी मनुष्य की हत्या की उसने मानो सारी मानवता की हत्या कर दी ।" (क़ुरआन, 5:32)

लेकिन हमने आपस में वर्ण, जाति, रंग, नस्ल, भाषा, जन्म स्थान, राष्ट्रीयता और न जाने किन-किन आधारों पर मानवता को बांट रखा है और एक को दूसरे के ख़िलाफ़ खड़ा कर दिया है, यहां तक कि धर्म के नाम पर भी हमने नफ़रत ही फैलायी है । इसी नफ़रत ने मनुष्य के एक वर्ग को दूसरे का विरोधी बना दिया है । ऐसे में जो वर्ग शक्तिशाली है, उसने दूसरे कमज़ोर वर्ग का शोषण शुरू कर दिया । पीढ़ियां बीतती रहीं और प्रभावशाली वर्ग की नज़र में शोषित वर्ग के जानों की क़ीमत एक अंडे की भी नहीं रह गयी ।

एक झलक

"सेक्स रैकेट के आरोप में ढोंगी बाबा राजीव रंजन द्विवेदी के साथ पकड़ी गयी छह हाईप्रोफाइल युवतियों को लेकर दुनिया चाहे कुछ भी सोच रही हो, लेकिन उनको इसका मलाल नहीं है । किसी तरह पैसा कमाना और मौज-मस्ती ही उनका लक्ष्य है । इसके लिए ही वह इस धंधे में हैं । मामले के जांच अधिकारी द्वारा युवतियों से पूछे गये सवालों के जवाब से इसकी पुष्टि हुई । पुलिस के अनुसार ये सुवतियां पैसे वाले घराने की हैं । इनमें एक पश्चिम बंगाल, एक पंजाब, एक अंबाला व तीन दिल्ली की है । चार लड़कियां एयर होस्टेस हैं । इनमें एक की तनख़्वाह एक लाख 30 हज़ार रुपये मासिक है । वह दिल्ली के पॉश इलाक़े में 25 हज़ार रुपये किराये पर घर लेकर रहती है ।

"इससे बड़ी ख़यानत और क्या होगी कि तुम अपने भाई से कोई बात कहो और वह तुम्हारी बात को सच जाने, जबकि तुमने उससे झूठ बोला हो ।"

(हदीस)

Muntazir Minhaj

Jaipur

सभी युवतियां फर्राटेदार अंग्रेज़ी बोलती हैं । पुलिस को दिये बयान में युवतियों ने बताया है कि अपनीं मर्ज़ी से वह इस धंधे में आयी है । पूछताछ में इन युवतियों में ग़ज़ब का आत्मविश्वास दिखायी दिया । कुछ युवतियों ने बड़ी बेबाकी से बताया कि वह बचपन से शराब पीती है ।''

यह है ईश्वरविहीन समाज की एक झलक । ईश्वर का भय और मरणोपरान्त अच्छे-बुरे कर्मों का फल मिलने की अवधारणा जब मनुष्य के मस्तिष्क में धूमिल पड़ जाती है तो वह स्वयं को निरंकुश समझने लगता है और जो मन में आये करने लगता है । ऐसे में शैतान, जो मनुष्य का खुला दुश्मन है, को काम करने में आसानी हो जाती है और वह अपने प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए मनुष्य के दिमाग़ में भ्रम व वसवसे डालता रहता है ।

ये वे लोग हैं, जिनके जीवन में ईश्वर का कहीं स्थान नहीं है । इन्होंने कभी इस पर विचार ही नहीं किया कि ये सृष्टि कैसे अस्तित्व में आयी । खुद अपने जन्म और अपने चारों ओर घटित होने वाली घटनाओं पर भी उन्होंने कभी विचार करने की ज़रूरत नहीं महसूस की । इसके साथ-साथ एक वर्ग ऐसा भी है, जो यद्यपि ईश्वर को मानता तो है । उपासना की कुछ रस्में भी पूरी करता है, बल्कि नियमित रूप से पूरी करता है, लेकिन ईश्वर को उसने भी कुछ अधिकार नहीं दे रखा है । वह जुबान से तो ईश्वर को सृष्टि का जनक, जगत का पालनहार, सबका स्वामी आदि कहते हैं, लेकिन उनका व्यवहार उनके इस दावे को झूठा साबित कर देता है । वे ईश्वरीय आदेशों और मार्गदर्शनों के अनुसार जीवन गुज़ारने को तैयार नहीं, बल्कि उन्होंने अपने लिए अलग जीवन व्यवस्था चुन रखी है ।

ख़बर की क़ीमत

''धन लेकर ख़बर छापने या फिर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उसे दिखाने पर रोक के लिए क़ानून बने या न बने, सरकार इस पर मार्च के बाद फ़ैसला करेगी । फ़िलहाल उसे इस तरह के मामले में मिली शिकायतों की पड़ताल के लिए बनी उपसमिति की रिपोर्ट का इन्तिज़ार है । इस बीच सरकार ने धन लेकर ख़बर छापने वाले समाचार पत्रों के सरकारी विज्ञापन पर रोक लगाने के सुझाव को भी ख़ारिज कर दिया है ।''

सरकार ऐसा कुछ भी करने की स्थिति में नहीं है, जिससे पूंजीपतियों का हित प्रभावित हो, क्योंकि सरकार पूरी तरह पूंजीपतियों के शिकंजे में है । लोकतंत्र अब लोक की अनदेखी का तंत्र बन चुका है । यहां मुट्ठी भर लोगों के हितों की रक्षा के लिए करोड़ों जनता की बलि चढ़ा दी जाती है । वैसे भी हमारे देश में सरकार द्वारा समिति बनाए जाने का मतलब यही है कि सरकार उसे खटाई में डालना चाहती है ।

सामान्यत: जब सरकार को जनमत के ख़िलाफ़ कोई निर्णय लेना होता है या उसके किसी निर्णय से किसी बड़े के नाराज़ होने की आशंका होती है, तो सरकार समिति का गठन कर देती है, ताकि जनआक्रोश का सामना नहीं करना पड़े ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda) Chairman

(Prof. M. B. Zaman) Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

शैतान का प्रोजेक्ट

''स्विट्ज़रलैंड दुनिया का पहला ऐसा देश बन गया है जहां 12 साल की उम्र तक के बच्चों के लिए एक्स्ट्रा स्मॉल कॉन्डम बिकने लगे हैं । बताया जाता है कि टीनएज प्रेग्नेंसी को रोकने और सेफ सेक्स को बढ़ावा देने के लिए यह क़दम उठाया गया है । इन्हें नाम दिया गया है हॉटशॉट । इन्हें बनाने का फ़ैसला स्विस सरकार की उस रिसर्च के बाद लिया गया जिसमें पता चला कि 12 से 14 साल के टीनएजर सेक्स के दौरान ज़रूरी एहतियात नहीं बरतते हैं ग़ौतलब है कि स्विट्ज़रलैंड में सहमति से सेक्स की क़ानूनी उम्र 16 साल है ।''

शैतान ने उनके कर्मों को उनके लिए सुहाना बना दिया और उन्हें सन्मार्ग से रोक दिया, यद्यपि वे बड़े तीक्ष्ण दृष्टि वाले थे । (क़ुरआन, 29:38)

वे तो बस शैतान के उपासक हैं, जिस पर अल्लाह की फिटकार है । उसने कहा था : ''मैं तेरे बन्दों में से एक निश्चित हिस्सा लेकर रहूंगा और उन्हें अवश्य ही भटकाऊंगा, उन्हें कामनाओं में उलझाऊंगा । उन्हें हुक्म दूंगा तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे और उन्हें मैं सुझाव दूंगा तो वे अल्लाह की संरचना में परिवर्तन करेंगे ।"(क़ुरआन, 4:118-119)

अल्लाह से क़ियामत तक की मुहलत ले लेने के बाद शैतान ने जन्नत में आदम व हव्वा को वस्त्रविहीन कराकर अपने प्रोजेक्ट का आरंभ किया । इसके बाद वह लगातार इस ताक में रहता है कि वह किस तरह इन्सानों को नंगा कर दे । समय-समय पर वह लोगों के दिमाग़ में ऐसी बातें डालता रहता है और उन्हें नंगा होने को प्रेरित करता रहता है । आजकल फैशन के नाम पर जो कुछ हो रहा है, वह सबके सामने है । मॉडल्स और अभिनेत्रियां अपने शरीर पर एक रूमाल के बराबर भी कपड़ा बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हैं ।

इतना ही नहीं यूरोप में दो ऐसे होटल हैं, जो नंगों के लिए विशेष हैं । एक होटल ऐसा है, जहां के सभी स्टॉफ़ निर्वस्त्र होते हैं, केवल उनके गले में एक बो (BOW) होता है, जैसे कुत्ते के गले में पट्टा । इसके अलावा एक-दूसरा होटल ऐसा है, जहां केवल उसे ही प्रवेश मिल सकता है, जिसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं हो ।

अब स्विट्ज़रलैंड में बच्चों को दुराचार और व्यभिचार की ओर धकेला ज़ा रहा है । उन्हें बदकारी के रास्ते बताए जा रहे हैं और इसके लिए सुविधाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं । व्यभिचार और बलात्कार को दो अलग-अलग श्रेणियों में बांटकर व्यभिचार को पहले ही जायज़ ठहराया जा चुका है और अब 12 वर्ष के बच्चे-बच्चियों को इसके लिए प्रेरित किया जा रहा है ।

● मुशर्रफ़ अली

भूल सुधार

'कान्ति' के मार्च 2010 अंक में पृष्ठ 27 पर दूसरे कॉलम के दूसरे पैराग्राफ़ के आरंभ में लिखा है, ''इसी प्रकार जब मैं इलाहाबाद नगर पालिका का चेयर मैन (1948 ई॰ से 1983 ई॰) था ।'' वास्तव में 1948 ई॰ से 1953 ई॰ होना चाहिए । कृपया इसे सुधार कर पढ़ लें । पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है ।

09425164608, 09752189505

UNIQUE COLLECTION

Exclusive Branded Shop

For : Mens, Girls & Kids

Central Bank Road, Durga Chowk, Seoni (M.P.) 480661

दूर की आवाज़ सुनने वाला ख़रगोश

■ मुहम्मद ख़लील

ख़रगोश और कछुए की कहानी जो दौड़ वाली है तुम ने अवश्य सुनी होगी, जिसमें कछुआ अपनी साबित क़दमी से ख़रगोश को हरा देता है । परन्तु सच्चाई तो यह है कि यह एक कहानी है ख़रगोश तो गाड़ियों की तरह तेज़ गति से दौड़ता है । ख़रगोश एक ऐसा जन्तु है जिसे सभी देखकर पसन्द करते हैं । इसके शरीर पर बहुत अधिक मुलायम रूई जैसे बाल होते हैं । ख़र शब्द का अर्थ गदहा होता है और गोश का अर्थ कान है । इस तरह ख़रगोश शब्द का अर्थ हुआ गदहे की तरह कान वाला जन्तु यह फ़ारसी भाषा का शब्द है ।

ख़रगोश बहुत सीधा जन्तु है । इसकी लंबाई तीस से पचास सेंटीमीटर तक होती है । इसे हरी सब्ज़ियां और फल खाना बहुत पसन्द है । यह अपना भोजन कुतर कर खाता है । इसके दांत कुतर कर खाने में बहुत तेज़ होते हैं । इसके ऊपरी जबड़े में कुतरने वाले दो न होकर चार दांत होते हैं । इसके दांतों की दो पंक्तियां होती हैं । पीछे के दांत कुतरने में बड़े सहायक हैं । इस कारण कुछ वैज्ञानिक इसे दूसरी जाति का जन्तु मानते हैं । इसकी पीछे की टांगें आगे की टांगों से अधिक लंबी और मज़बूत होती हैं । जिसकी सहायता से ख़रगोश बहुत लंबी-चौकड़ियां भरते हुए दौड़ते हैं । फिर भी यह दूर तक भाग-दौड़ नहीं कर सकते । साधारणतः यह दूसरे जन्तुओं की तरह नहीं चल पाता और इसीलिए यह कूद कर आगे बढ़ता है । ख़रगोश जब लंबी कूद मारता हुआ दौड़ता है तो इसकी बराबरी हिरन और घोड़े भी नहीं कर सकते । यह एक घंटे में लगभग 65 किलोमीटर दौड़ सकता है और ढ़ाई मीटर तक छलांग लगा सकता है । यह रहने के लिए अपना बिल नरम भूमि के नीचे अपने पंजों से खोद कर बनाते हैं । कभी-कभी ख़रगोश घास की झाड़ियों के बीच कुछ जगह बना लेता है और वहीं छुपा रहता है । यह सफ़ेद तथा भूरे रंगों के भी होते हैं । काले रंग का ख़रगोश खेत या खुले मैदान में ऐसा चुप्पी मारे बैठा रहता है कि किसी को दिखायी नहीं पड़ता । वैसे ख़रगोश कई रंग के होते हैं जैसे भूरे, मटमैले और सफ़ेद इत्यादि । इस प्रकार उनका रंग उन्हें छुपने में और दूसरों का शिकार बनने में सुरक्षा प्रदान करता है और वह बच जाते हैं । ख़रगोश हर समय बहुत चौकन्ना रहता है परन्तु यह एक डरपोक जन्तु है और इसीलिए यह अपने कानों को पास या दूर की आहट सुनने के लिए बराबर अपना कान इधर-उधर हिलाता रहता है ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि ख़रगोश तो लगभग दो सौ मीटर की आवाज़ को भी बिना कठिनाई के सुन सकता है और सुगंध को भी महसूस कर लेता है और फिर छलांग लगाते हुए भाग खड़ा होता है ।



मादा ख़रगोश एक वर्ष में कई बार बच्चे जन्म देती है । इनके बच्चों की संख्या बारह तक भी पायी गयी है । जन्म के समय इनकी आंखें खुली होती हैं । इनके कान को पकड़ कर ही आप अपनी गोद में बिठा सकते हैं । इनके शरीर का भार तीन से चार किलो तक होता है । आप मानें या न मानें जंगली ख़रगोश कई छतों की बनी बिलों में रहते हैं, जो भूमि के नीचे दूर तक बने होते हैं ।

साधारणत: ख़रगोश कम खाता है और खेतों को हानि अधिक पहुंचाते हैं । यह तैरने में निपुण हैं । इस तरह यह अपने शत्रुओं से बचने के लिए पानी में छुप जाते हैं और अपनी नाक पानी से बाहर रखते हैं । असम और हिमालय के पर्वतों की तराई में मिलने वाले ख़रगोश साधारणत: काले होते हैं ।

कहते हैं इसका गोश्त बड़ा स्वादिष्ट होता है । यही कारण है कि शेर, कुत्ते, लोमड़ी, बिल्ली और कई दूसरे जन्तु ख़रगोश का गोश्त खाने के लिए इसका शिकार करते हैं । इसकी नरम सुन्दर पतली खाल से कई क़ीमती वस्तुएं बनायी जाती हैं जैसे टोपी, दस्ताने और पर्स आदि । इस तरह हमें ख़रगोश की सुरक्षा करनी होगी । आज ख़रगोश पूरे देश में और संसार के विभिन्न भागों में पाये जाते हैं ।

दुनिया का सबसे छोटा और हल्का पक्षी

● विद्या प्रकाश

एक पक्षी ऐसा भी पाया जाता है ज़िसका वज़न मात्र 2 ग्राम के लगभग होता है । वज़न में बेहद हल्का और मधुमक्खी की भांति भर्भर करने वाला यह दुनिया का सबसे छोटा पक्षी है । सबसे छोटा पक्षी होने के साथ यह बेहद सुन्दर भी होता है । आकाश में उड़ते हुए भर्भर की तरह आवाज़ निकालने वाले सिर्फ़ 5 सेंटीमीटर लंबे इस पक्षी को इसके लघु आकार और कम वज़न के कारण कई बार लोग इसे भ्रमवश कीट समझ लेते हैं । इसीलिए इसे कीट पक्षी भी कहा जाता है ।

यह पक्षी प्राय: मधुरस का सेवन करता है । यह अपनी लंबी चोंच की सहायता से फूलों का रस निकालकर चाव से पीता है । इसकी चोंच इसके शरीर से लगभग तीन गुना लंबी होती है । मधुरस का सेवन क़रने के लिए फूलों पर मंडराते समय यह पक्षी भर्भर की तरह आवाज़ निकालता है । स्वयं को किसी एक स्थान पर स्थिर रखने के लिए यह पक्षी एक सेकेंड में लगभग 90 बार अपने पंख फड़फड़ाता है ।

Spice It up with SEA FOOD

Bee Ye Yem

ARIF: 09422442824 MOHSEN: 09422063773 MUSHTAQ: 09422063989
SHAHID: 09822734724

Wholesale Fish Market, Margao-GOA

TeL: 0832-2715555, E-mail: Beeyeyemstar@g-mail.com

HYDER : 09845131893 B. ABBUSHEB : 09902453663
A. ALEEM : 09448348196

कैसे चलता है घोंघा ?



आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति हो तो जीवन में कोई काम नामुमकिन नहीं है, प्रकृति हमें इसका संकेत विभिन्न उदाहरणों से देती रहती है । ज़रूरी नहीं कि यह संकेत बहुत बड़ा हो, यह किसी नन्हे-मुन्ने जीवधारी के रूप में भी हो सकता है, विश्वास न हो तो किसी घोंघे को ही देखिये ।

अगर बहुत तेज़ चले तो घोंघा प्रति मिनट चंद सेंटीमीटर का फ़ासला तय करता है । अब तक घोंघा दौड़ प्रतियोगिता का विश्व रिकार्ड है दो मिनट में 33.5 सेंटीमीटर । हम इन्सान टहलते हुए भी चलें तो कम से कम इससे हज़ार गुना तेज़ चलते हैं, इसीलिए किसी सुस्त व्यक्ति को 'घोंघा' की संज्ञा दी जाती है ।

...मगर यदि हम देखें कि हम घोंघे से कई गुना बड़े हैं और हमारे हाथ-पैर भी हैं तो यह तुलना ग़लत लगती है । बेचारा घोंघा भुजाविहीन प्राणी है—न तो उसके हाथ-पैर हैं और न ही कोई पंख, डैने, गलफड़े या कुछ और । यह बात ही कितनी आश्चर्यजनक कि वह फिर भी चलता है । सवाल यह है कि कैसे ?

दरअस्ल आगे बढ़ने के लिए घोंघा पहले एकाध बूंद चिपचिपा म्यूकस ज़मीन पर टपकाता है, फिर उस पर थोड़ा दबाव डालता है । इस दबाव की वजह से म्यूकस पतला होकर फैलता है । इसी के साथ घोंघा भी फिसलकर थोड़ा आगे बढ़ जाता है । दबाव और फैलाव का यह चक्र अनगिनत बार दोहराया जाता है और घोंघा मंथर गति से अपने लक्ष्य की ओर गति करता है ।

कनाडा की ब्रिटिश कोलंबिया यूनीवर्सिटी के डॉ० मार्क डेनी ने घोंघों की गति में म्यूकस की भूमिका पर शोध किया है । वे बताते हैं कि म्यूकस के ऊपर दबाव डालकर हटाने का यह चक्र एक दांतेदार पहिये जैसे काम करता है और सिर्फ़ आगे की ओर गति संभव हो पाती है । कुल मिलाकर इसे 'चिपकू गति' कह सकते हैं । म्यूकस का संघटन और चिपचिपाहट तथा घोंघे के शरीर के निचले हिस्से का आकार व फैलाव लगभग एक-दूजे के लिए बने हैं और इसी तालमेल की वजह से गति संभव हो पाती है । तो देखा तुमने, कि किस तरह बिना हाथ-पांव का घोंघा भी आगे बढ़ने का रास्ता निकाल लेता है । इस नन्हें से जीवधारी की मिसाल सामने रखकर सोचो और बताओ कि क्या अब भी कोई चीज़ तुम्हें ज़िन्दगी में कामयाबी से रोक सकती है ?

● डॉ० डी० बालसुब्रह्मण्यम

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली—6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

NEW EMPRESS MILLS
1st Phase Industrial Area BALOTRA-344022 (Raj.)
Visit us. www.Empress. com. E-mail : empresspoplin@hotmail.com
(M) SAYED PARWAN ALI 09214408133
LILLY लिली गोल्ड GOLD
Superior Nighty
KAJAL काजल गोल्ड GOLD
MFG. OF : HIGHCLASS STANDARD POPLIN & NIGHTY PRINTS

AVEZ MOHIDIN

Mohidin Properties & Holdings
Mohidin Metal Industries
Mohidin Auto Care Centre
Mohidin Earthmovers

O-1, Commerce Centre, Near Old Bus Stand,
Vasco-da-Gama, Goa, India-403802
Phone : 0832-2512415, 2512418, 2514755
Email : avez@mohidins.com
Website : www.mohidingroup.com

SEAHATH CANNING COMPANY

Manufacturer & Exporters of Canned Fish



Manager - Marketing
ANEES MOHAMMED

Factory/office: Plot No. 8, Margao Industrial Estate.
St. Jose de Areal, P.O Curtorim - 403 709. SALCETTE - GOA (INDIA)
E-mail: seahath@gmail.com
Ph:0832-2860342(F),6481948(R),Cell: No.: 9225902984,Tele Fax: 0832-2860412

Posted on 20-21 March 2010
April 2010
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.03.2010

हिन्दी साहित्यों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

M:Khan : 9890227700

Khan & Sons

Hindustan Group

Manufactures of
: Crumb Rubber &
Dealers
: New/Old M.S. Angles, Channels, Plates, Pipes etc
: Building Material, Furnitures, M.S./Plastic Barrels.
: Industrial Scrap Materials & Empty Plastic/Gunny Bags

Add:
N.H.17 Highway, Karaswada Mapusa - GOA
Akbar Khan : 9822497700, Anwar Khan : 9822427700
Office : 2257900, Telefax :2257793, Res.: 2257700

Our Firms

M/s. Hindustan Sales Corporation
38/12, Khorlim, Mapusa, Goa

M/s. Hindustan Rubber Industries
Plot No 62 Canacona IDC, Goa

M/s. Hindustan Sales Syndicate
HH-17, Karaswada, Mapusa, Goa

M/s. Hindustan Containers
S/2, IDC, Colvale, Bardez, Goa

M/s. Hindustan weight Bridge
NH-17, Karaswada, Mapusa Goa

M/s. Hindustan Gunny Traders
Narasaraj Pet, Davangere (Karnataka)

Email: hindustansales@gmail.com